जिया जिया जिया ।



কলিকাতা।

সূজাপুর ব্লীট, বঙ্গভূমি কার্যালয় হইতে নীমাথ দে ধারা মুদ্রিত।



গীতাকে স্থগীতা করা অতি প্রিন্ত্রন ।
অন্য শাস্ত্র বিস্তারের নাহি প্রয়োজন ॥
স্বাং ঈশ্বর মুখে উদ্ভব যাহার এক
অপর শাস্ত্রের সহ তুলনা কি তার ॥

न्द्रीदन्भविष्ट वद्भागाशाशाशा

কলিকাতা।

क नर मृङ्गाशूत्र क्षींहे, वष्ट्रिंग कार्राग्त

कीमाथ दूर्भ बाबा गतिला

्रा ॥० जाना।

All rights reserved.

ामा ख

বে গ্রিক

নাম'

কর

रेथांडे

, শুদ্দিপত্ৰ

পৃষ্ঠা	পঙ্জি	की छक्क	শুদ্
	19	শ্লেষ্ট	ट्यिष्ठ
8	, २ 0	ष्य । *हर्ये उ	আচাৰ্য্য
	34	অতিভূত	অভিভূত
S. C.	145 AC	কুল	কুল
9 8	S8	শক্ষর	मक्षत्र
<u>ه</u> چ	. 50	আশক্ত	অ স্ক
5350	a ş.	যাতে	यादव
30	A C	ত্ৰভূপ	ত ব
.: 36	b33	गर्भ	পৰ্ন
₹8	>0	ক্ল্যান	कन्तर्भग
29	ь	জ্ঞানলাভ	क्षानाग
2 3	> 0	ख्योगि	জ্ঞানী -
40	> > > と	বোগি	:या
ে ক	6	"আমার	भागी वर्ग
42	2	निथ	· Van
A 660	ર	यह म	李五
	4 _	द्योग	, साह
90	35	म दी छ	रूनी 6
₩ 98 -	\$8 .	८म िथ्	-phoCatera

উদ্বিপত্তা।

		6	
ক্র কুটা	श्रेष्ठ जिल्ह	অপন্	
මි	>4	िकार भेर	<u>এ</u> রপ
90	~8 <u></u>	' (कर्न	দেখি কেন
জ শ্ৰ	5.0	ভূমি	কর তুর্মি
ঐ	. \$6	इ.स	हत्त्व क्यांत
99	38	ৰাটী	চন্দ্ৰ স্থা <u>ন</u>
dp.	. 8	সহি	नाहि
ক্র	b	टगा न	বোদ্ধ
60	₹8	বেনের	CALL
50	>>	সূর্বএই	স বিত্তই
४ व	२२	্টে ⁾ তাদি	- বৌতাদি
০র .	38	আৰহিত "	অভিন্তি
24	b ~	প্রাক্ত	প্রকৃতি
86	30	মশেনা	মিদেশা
22E	>8	শরীরীর	শারীবিক
>50	28	ভক্তব্য '	ত্যক্তব্য
>28	>5	ব্দ	And the same of th
ST D	20	ধৃতি	1 15 ·
The second second	>8 ^	রণ	त्रम
	२७	হইবে	र्हे रब
	•	শাস্ত	শাহাত
59	२३	िनान्द ग	শাহাত



প্রথম ভাষ্যায়।

अस्तित है गर्शितां अपियां मधरम । জিজাদেন যুদ্ধীতি বাাকুলিত হ'নে '. ধর্মান্টের কুরাক্ট্রীনতো হয়ে সমবেত। क्रियाधिन आपि नवं गग श्व यक । পঞ্জিত যুধিন্তির ভাই পার্কান। শমরের অভিলাধে করেছে গমন। কি করিছে তার। সব বলহে আসায়। কি দেখিলে তাহাদের কার্য্যপরিচয় 🏨 কুঞ্জয় বলেন তবে শুনহে রাজন্। যুদ্ধেৰ আৱম্ভ যাহা করিব বর্ণন॥ शीखदवत रमनाशंद पाथि वृश्कारत । রণবেশে স্থসজ্জিত হেরিয়া তাদেরে॥ पूर्वगाधन बांका राम जाराव निकटि। বিবরিয়া বলো সব তাক সন্মিকটে ॥ (मथ (मथ खक्रान । भा । भूजान। क्रीशंदमंत्र दमनां भव दक कदत्र भगन ॥

ত্র ি শ্র বিষ্ট্রম তাহাদের এইন। कार शन एपेनामह रमद्खार न तारी।। क्रि. निका जाएक विकास नाम करा। त्रक (लरे जक जक जीगार्ज्य गग॥ শাত্রীকি, বিনাট রাজা জগদের সহ। धृष्टरक्कू, रहिक्छांन, काशी ताज मह। নরএেষ্ট পুরুজিত কুণ্ডিভোজ রাজা। উত্তদৌজা, यूशामद्रा, शताबहार ताजा॥ र्मोभनीत भक्षप्त गकर । ज्ये छगरा जानि मत्व मकदन है तथी। अन अदव गग माद्य दग म्ल्न वीव। করিব তালের নান ওন মহাব্রর ॥ मुक्तजरी कुशाहाना, जीय जान कर। जयमामा, जुरियमा, जाशिस विकर्ण॥ u ছोड़ो आभाव मदन आदह बहवीत। জীবন দানেতে তাবা না হন অস্থির। অগণন দেনা মন্ ভীখের রক্ষিত। পাওবৈর নাহি তত ভীনের সহিত॥ निक निक रेरक मा कतिया विजात। वृार्द्ध बहुनां कत अर्थ गर्। छात्र ॥ বাহদারে অবস্থিত হইবা এখন। "বীর জীয়া পিতামহে রক্ষ স্ক্র্ণ।। পশ্চতি পাৰ্ষৈতে নেন নাহি থাকে ভগ্ন এরতেপ রক্ষক তারে বর্নে আহিলার।।

সেই ভীন্ন বলে আজি আমাদের বল হইলে চধুল তিনি আমরা নির্মিল। क्र्याभारत क्रियादन कीय गरावीता भाष्यात मगत्रस्तनि करतन मधीत्। ভীখোর শজোর ধানি শুনিরা সংক্র ত্র্যোধন মহাবীর বহু সৈগুগণ॥ মূদক নাগরা আদি রণ শিল্প ভেরী। छे ठिंच भक्ती दर्भाच गर्भागिन कति॥ न्दिक ही हैंया जान गांवशी अर्जून i' প্ৰেতাশ্ব সংযুক্ত বণে হয়ে সমাসীন॥ জীমোর শজোর ধননি গুনিয়া তথনি। क्तिरणन विचा भेरका गमस्त्र अवनिता खीरिश्व करतन भाभकागं मुक्तभवनि। अर्ज्जुत्मत किवम छ जीम त्थों धु ध्विम ॥ সর্বা লোকে ভয় পায় শুজার্বনি গুনি। এসন শভোর ধ্বনি কভু মাহি শুনি।। কুন্তি হতে বৃধিন্তির অন'ন বিজয়। गरदम्य मंभिश्रा, नकुन खुर्धाय॥ परिक्रण कामीताल, मिनछी, मात्रगी। মহাবীৰ ধৃষ্টভ্ৰম, বিলাট সাত্যকি॥ অভিমন্ত্য আদি সৰ কৰে শজা ধানি। धारक धारक प्रकृतिहरू करन भन्नाभवनि॥ वैष्टे भव गरानान शिविभवनि रुता ! पूर्णिक जनका क मन की भाष्ट्रस ॥

শ্রীমন্তগবলগীতা

্তরাট্র পূল আর তার সেনগৈণে क्षित्र विद्वार्ग करत शुरे देश गरन। वाभिनात भूक वाहि नीत ताक शरन। দেখিয়া আগত সৰে যুদ্ধের কারণে॥ ক্ষ পিধবজ রপারাত অর্জুন মহাবীর। কোন ও কারণে চিত্তে হইয়া অস্থির॥ ट्न कारण भवागन कति উर्छाणन। শীরুষ্ণের নিকটেতে করে নিবেদন॥ प्याञ्चल गग तथ कत्रह श्रीमन। देश शरकत रमना कति वित्नाकन ॥ যুদ্ধকেত্রে অবস্থিত বীর বাজগণে। যুঁহোরা আগত আজি যুদ্ধের কারণে॥ গতকণ নাহি দেখি তাঁহাদের আমি ততক্ষণ মধ্যস্থলে রথ রাথ তুমি॥ वर्ष्यान्य अधिकशी खनि गोताप्रध। রাজগণ মধ্যে রথ করিল হাপন। রথ রাখি হাষীকেশ অর্জুনে তখন। नरनम को तब मन कत नित्रीक्षण॥ क्ट्रेमन रमनाभारधा जर्ज्ज्न जयन। আশ্চর্যা, পিতৃবা, পুত্র করে বিলোকন॥ পিতামহ, পোন্ত, মিত্র, মাতৃল খণ্ডর। উপকারী অতি মিত্র বহু বহু শুর॥ দেখিয়া দেনার মধ্যে পীত্মীয় স্বজ্বে। দয়াবান হয়ে অতি বিবয় বদনে।

क्रस्कदत्र वर्णिन कथा छन छनवास् यक रम्भि वक्षान आधीय श्रमपु मगरतत जिल्लाद्य वर्दत्र भगने रिक हेरां पिटक दमस्य गग जननाम रग। भारीत कै। भिग्ना छेटे इत्रामा बिश्क हम ॥ म्य ७फ इरेट उद्ध छः १थन कान्। গাঞীৰ ধরিতে আর না পারি এখন ॥ कि वर्ता का द्वीव जामि गरनत रवन्ता স্বৰ্থৰ সমহতেছে দাহন 🖟 স্থিয় হতে শক্তি আর না আছে এখনস চারিদিক আলেইভিত হয় সম মন।। (यह मिरकलगंग का भिकति विल्लाकृतनः) দেই দিকে দেখি আমি বত কুমাকাণ।। गुक्र कारज वध कति जायीत खजरम । ना পाই তাহাতে কিছু टেशः গণি गत्न ॥ यपि वन अग्न नाज इहरव जागात। বিজয় কামনা আমি নাহি রাখি আর ॥ রাজীয়স্থ নাহি চাই যুদ্দ লাভ করি। আক্জিন তাহাও নাই স্ক্রন ব্ধ করি॥ ताकाटভारण किया स्था, कि क्षम सीयरम । আত্মীয় স্বজন গণে ব্যিয়া এ রণে॥ ताका एका न स्थ-का ना गैरिए त नाति। তাহারাই রণদেশতে উপস্থিত দেশি॥ প্রতাসহ, পিতীপল, জাচার্যা, মাতুল।

জ্রী মন্ত গ্রহ দ্যৌত।

বশু বিশু লিক, পৌল, সকলে অতুল। অবিদাৰ প্ৰজনগণ হাবাকে জীবন এপ্রৈছেইন বণক্ষেত্রে করে মহী পণ॥ नकरैन करवन यकि आंगारकव नाम। ত্ত্ত্তি না করি কভু এঁদেব বিনাশ॥ बिल्लीतकत वाष्ट्रा यपि किर एपम तमार्व। জবু আমি বিনাশিতে না পাবি এঁদেৰে॥ পৃথিবীর বাজাভোগ তুচ্ছ ছুবি কাছে। অ্ধিয়া এঁদেবে তবে কিবা স্থ আছে 🕈 পুৰ্ব্যাধন আদি সবে ক্ৰিয়া সংহাৰ। আমাদেব ক্ৰথ লাভ কি হইবে আৰ ॥ ध्रज्ञा मम अक वर्षे वर्षे शाश्च नाहि। ধার্ত্বাইগুণে তবু না ব্ধিতে চাই 🔟 हेशान्दव विमानित्व इत्व महाशान। স্পাশীয় স্বন্ধন গণে বধে কিবা শাভ। লোভে অতিভূত চিত্ত ছযোঁ।ধনগণ। क्षक्ष गिज्याह मा करत पर्यम ॥ म्णकः। क्राया भाभ कति विल्लाकन ना इव निवृष्ड दक्त कह जनापन ॥ ী শুনহ মাধ্ব তবে ধরি তব কর। कर्वता देशाद्भारा गर्ट क्रिया ध्रीमार्म क्लंकव रेटल एव धटाव विनाम । क्षथर्म नहें हरन महिरिकाम आंग সকলি অধর্ম মার্ম অভিভূত ইয়ী

কুলেতে ধিখন্ম হলে নাহিক উপ্ৰায় ॥ कुलनात्री भग स्थ खंडे जानात्रिमी ; 🖟 বর্ণ শঙ্কর গর্ভে ধবেশ্সে কামিনীশা, वर्गभक्षव इरम भरत कुरमत विनाम । क्लक्य कातीरमंत्र नवरक हयू वाम । थर्याद्दीन कूरण शिख, जर्शनि किया। किছू नाहि थात्क, यात्र वित्नां भ भाहेगा॥ পিতৃ পিতারুহ আর গুঞ্জন গণ। ্সালুতি না হ্ৰ তাঁদেৰ নরকে পতন ॥ কুলনাশকারীদেব জাতি ধর্ম ধাষাক্ আশ্রমাদি কুলুধর্ম উৎসন্ন যায়। वह जिन् धर्म शाम श्वीन सनार्मम् था अना नतक वाग करव रमरे अन्॥ আহা কি খেদেব কথা হতেছে এখন। কি পাপে নিযুক্ত হায় হজেছি এখন॥ সামান্ত রাজ্যের অ্ধ ভুগ্নিবারে আগ। ष्यां भीम प्रक्रम भटन श्राटन वध कांचा॥ ধীয় কি দারণ কথা কি কহিব আর। কি পাপে আশক্ত আক্ত শ্রীর আমার॥ প্রতি কানে বন্ধহীন অশন্ত এখন। भार्कताक्षेत्रण यपि नत्य ७ औनम ॥ **छ**वू अभ्रम जागां व श्रेटव निक्या। তথাপি এদীৰ ব্বৈধে কিবা লাভ হয়॥ শঞ্য বলেন খন গতরাই বীর

শ্ৰীমন্তাগবদগীতা

শার্কীত হয়ে হেন অর্জন স্থার॥ ধর্মাণ পরিত্যাগ করিয়ে তখন। সমবৈশনমূল হতে করিল মুন্য।

দ্বিভীয় ভাখ্যায়।

প্ৰজ্বে বাকুল চিত সজল নায়ন। (मिश्रा विलग करव **क्षीमधूरमग**। বিষশ সম্বটে কেন মোহ, উপস্থিত। ह्युक्त । व्यागानान व नरक छेहिउ॥ স্বর্গের গমন পথ ইহা করে রোধ। অধশের হেতৃ হয় এই সম বোধ ॥ ত্**র্বাল কাত**র ভাব পরিহর এবে। ব্যাকুলিত কেন হও অলকণ ভেবে॥ এ হেন হৰ্বল ভাব কৃত্ৰ জনে সাজে। উঠ উঠ পরস্তপ রত হও কাজে॥ व्यर्জ्न वरनम खन रह गशुरुमन। ভীন্ন জোণ আদি সৰ পূজার ভাজন॥ কেমনে তাঁদের উপর করিব আঘাত। ্কেমনে করিব তাঁদের রণেতে নিপতি। মহাভাগ জকগণে না বৰে এখন। ভিক্ষার ভোজনে যদি যার এ জীপন।।

खबुख आयोगगार्व कतिया नियन h ना कति कथित माथा विषय मनान ॥ না পারি জানিতে এবে জন পুরাক্ষয়ণ গোরবের পরিচয় কেবা বড় হয় ॥ 🐴 যাদের সংহার করি মরণ উচিত। তাঁরাই আছেন সব ষুদ্ধে উপস্থিত ॥ कुलक्ष क्र पारिष धर्म वृक्तिशीन। হয়েছি একৰে আমি বৃদ্ধি বিছাহীন॥ তেব শিশ্য হয়ে আমি নিতেছি শরণ। ट्याप्रः छिभएमभ रगारत वन् ध्यान ॥ 🛪 र्द्यट् वागोत गत्न निजाङ विकात। খুচাবরি দ্লাহি দেখি কোন প্রতিকার॥ সমুক্ত পূথীর রাজ্য যদি পাই হাতে। তবৃত্ত না দেখি লাভ কিঞ্চিৎ তাহাতে। স্বর্গের প্রভূত আদি পাইলে এখন। তব্ও ইহাতে সম না যায় মনন॥ किहूर उरे मिथ जागि ना जाटह कमानि তবে কেন বুথা যুদ্ধে যাব জগবান। পরস্থপ জিতনিদ্র অর্জন স্থীর। श्वीटकम दशाविदमादत मिदबरमम श्वित ॥ অর্নের এই ভাব হেরিয়া তখন। शित शिति स्वीटकण करत्र मस्त्रीयग्। याशामत बर्क एनाक नाहि थाःयोकन ि अगर्थक कत कश्य किरमत का बन ॥

কিখাঁবও তুমি এবে যে নহ পিডিত। ্বৰ্ণ তৰে কাৰ্য্যে কেন হেন বিপরীত। পণ্ডিতির সমজান মৃত বা জীবিত। কার জ ন্ত কোন শোক না করে পণ্ডিত। ্ ক্রে বলিদেব আমি তুমি না ছিলাম আগে। এইসব রাজগণ না ছিলেন আগে॥ ছিলাম আমরা সব পুরের বিজ্ঞান। ইহার অগুণা তুমি নাহি স্নুনে জান। নকে পারে বলিতে মোরা কা থাকির পরে প্রবিশ্য আমরা সব থাকি এর পরে॥ ा देकोगांत योजन खंदा गांक्रयंत्र दम्दर्थ। সেইরূপ দেহান্তর মানুযের গেহে॥ এইরাপ তিন দশা যেন জমে হয়। ৴ সেইরূপ দেহাস্তর শেষ দশা হয়॥ স্থা সহাজনগণ না দেখেন ভেদ। জ্ঞানের চক্তে জানী না করেন খেদ। শীতোঞ্জা অথ তঃখ ইন্সিয়ের সনো কিছুকাল স্বায়ী হয় মানবের সনে॥ কিন্ত হে ভারত তাহ। কয় দিন রহে। তেমার কর্ত্বা এইসর যাতে সহে।। এইরূপ ইপ্টানিষ্ট চিরকাল হয়। ে প্লেখ চংগ সেই জন্ত কভ্ ভাল নয়। ? जानी हे या भीत छोटन दम गर्य महिएत। স্থ হঃথ বোধ তাহে কিছু না করিবে।

सीत रूर्य देश हः त्थ भात गम छात्री भगंछान नाछ कति (नाककन दीन ए সংসারেতে সং 🐨 বঙ্গ চিরকাল রয়। कानक (ल ८म वजन विनाम ना इसी। এক হতে অভভাবে তাহা পীনু হয়। সংসারে বিনাশ তার কতু নাহি ইয় ॥ শীতোফ ভাবের কোন সন্থা নাছি রয়। তাহাই 'অসম' ভাব জানিগণ কয় ॥ नदाताल পरिवाधि विनि व मश्मदित्। व्यविनामी (महे महा मः नात माबादत न সেই আশা নিতা স্বাদী না আছে বিনাশ না পায় দেখিতে তায় সৰ দেহে বাসুনা এইরূপ বলেছেন তত্ত্বশিগ্য। 🧆 অতএঁৰ হে ভারত ব্রেদাও মন। णाया करू कारारिक इसा करत रमन না হয় অত্যের ধারা হতও কথন। আত্মা নিহত হয় বা অত্যে করে হত ্ৰ এক্ষণ বিধান যাৱ হয় অভিনত॥ অভিজ্ঞ নহেন তিনি আগাণ বিষয় পণ্ডিতের কথা এই জানিহ নিশ্চয়॥

[्]र भौडिक जाव देखिए सब प्राचा जाना गाम। भोज उ देश भूतिम्।
- (कृति) शमार्थ विदेश गार्थ । त्राप्त प्राचा शमार्थ । व्यक्ति प्राचा क्षित्र ।
- प्रादेश अगर्थ ज्यार द्वाधिक विदेश । वाचा देखियापि वाचा ज्यस्य क रूप - श्रीहा क्षेत्र 'गर्थ ज्यार क्षीयक विदेश । वाचा देखियापि वाचा ज्यस्य क्ष्म

ኃዲ

আমা কভ কৰে নাই জনম গ্ৰহণ। নি হয় মৃত্যুর মূথে পর্তিত ক্রখন॥ वात्रशात छिएनदम दक्षि नाहि भान। 🛊 অজ, নিত্য সর্ক্ব্যাপী অতীব পুরাণ্ ॥ नैनीव लिन्हें इय यथन ७थन। আখার বিনাশ কভু নাহি কদাচন। এইবাপ আত্মজান জন্মিয়াছে যাঁর। কিরূপে কবেন তিনি কাহীর সংহার॥ 🕳 कीर्वस एएल मिरत्र यन नर्ककन। सेववळ भौतिधादन-कत्रदम शक्ष ॥ সেইরূপ এই আত্মা এনত্যাগ করে। **ঐ**ত্য এক মানবেব নব দেহ ধরে । पाद भारतक्षेत्र को जा हिन्न गाहि हरी। व्याखरक्ट एक नित्व । पद्म नाशि श्रा জালেতে ভিজাতে কিন্তা বায়ুতে গুষিতে। কিছুঁতে না পারে কিছু এব কবিতে॥ ुमाहि रम पद्ध देश नाहि रूम हिसा। ना गांत्र खेकाद्य देश नाहि इय क्रिम ॥ गर्वा व र्षा है है है।, जन न किया। निछा, द्वित, वापि नारे, अशुक्त दक्वन ॥ िखारक नो शांत्र क्टर, ना शांत्र निर्नेम_{री}

* তথ্ শ্বিষ্টিত। প্রিবাদ, অপাক্ষয় ও বিদাদ এই ইন্টাণ কিল্প শামে ক্তিহিত। প্রিয়ার এগুর কিছুই দাই। সামা এই স্কৃতি কিল্প বিভা ক্ষ-জ্ববিহান; রিজ্য-স্তাবহিত।—

ুৰিতীয় অধ্যায়ু৷

এরপে আসার হয় প্রকৃত বর্গন ॥ 🏃 আত্মার ধ্বনপ তুমি হইলে বিদিত ধ অতএব উঠ এবে না শোক উচিৎ ॥ জন্ম মৃত্যু বারধার আত্মারু যুদি হয়। धमनहे यपि कञ्च छरव मरन नेम ॥ তথাচ হে মহাবাহো শোক কেন কৰ। এ নহে কর্ত্তব্য তব, ছঃখ পবিহর॥ मिक्टिय इत्व लहेल जनम । িপুনরায় কর্মফলে হইবে জন্ম ॥ **এইরপ জगा মৃত্যু नि**न्छ र यथन । তবে কৈন হংথ কর র্থা অকারণ ॥ প্রথমে অব্যক্ত সব আছিল জগত। মধ্যেৰ অবস্থা পেয়ে হইপ'দীৰ ব্যক্ত * ॥ পুনরায় বিনাশান্তে হইবে অব্যক্ত। 🔧 অতএব হৃংধ কেন করছে ভারত॥ কেহ বা এ আত্মাকে আশ্চর্য্য বলে ভাবে। স্বর্ণন প্রবণ কবে সেইরূপ ভাবে॥ কেহই শ্ৰবণ কৰে নাহি হয় জ্ঞাত। ্পাত্মার পর্রপভাব রহিবে অজ্ঞাত ॥

जीव सम्याहन कित्रिक्त मरमाद्य वाल एत, स्विति वीव-व्यवज्ञान वाल, स्वर्थ अनुवास मृज्य भवल अवाल छाटन वाटक; विभाग वाल, क्रांनल व्यवज्ञान व्यवज्ञान कित्रकान विभागान आहह; छाहात

58

সকল দেহৈতে আত্মা করে অবস্থিত। বিত্যন্ত অধীধ্য এই শুন হে ভারত। অতএঁৰ ছইল্লেও দেইের বিনাশ। কর্ত্তব্য তোসার নহে শোকের প্রকাশ॥ अभ्रद्धा्त पिटुक यपि कत्रर्थ पर्नन । তোগার কর্ত্তব্য নহে তবে এ কম্পন॥ ধর্মাযুদ্ধ চেয়ে কিছু নাহি শ্রেয়ন্কর। অতএৰ মহাবাহো ছঃখ পরিশ্বর॥ অনামানে প্রাপ্তযুদ্ধ স্বর্ণের সাধন। স্থপনাভ করে তাহে ক্ষত্র রাজগণ॥ धुर्मायूक यपि जूमि ना कन्न ब्रांजन। স্বধর্ম্মের লোপ হবে অকীর্ত্তিভাজন॥ नकरणहे हित्रुमिन ज्यम त्यां विद्य । অকীর্ত্তি গুণীর পকে মৃত্যু সম হবে॥ যে সকল মহারথ বহু মাগ্র করে। मिथिएन विश्थ यूरक नयुक्तान करत्।। रहेल विभूथ यूटक, करव मर्खाइन। রণে ভঙ্গ দিয়ে ভয়ে কর পশায়ন 🛚 **इ्ट्यां धनश् जैव नामर्था निक्टिव।** অকথ্য কুকথা কত কতই বলিবে॥ অধিক কি আর ছঃথ তদপেকা হয়। ষ্মুত্রএব কর পণ যুদ্ধেতে নিশ্চয়॥ ব্যুদ্ধেতে মরণ হলে স্বর্গবাসী হবে। বিজয়ী হইলে মুদ্ধে বহু লাভ হবে॥

সসাগরা পূথিবীর হবে অধীশ্বর ে অতএব উঠ ট্টঠ যুদ্ধে স্থিন কর 🤛 স্থুখ হুঃখ লাভালান্ড জয় নেরাজয়। সমতুল্য জ্ঞান করি যুদ্ধেতে নিশ্চয়॥ না জন্মিবে তব পাধপ তাহাতে তোমার। অতএব যুদ্ধে কেন গৌণ কর আর ॥ সাংখ্যযোগ তত্ত্বপা করিলে শ্রবণ। কর্মায়োগ ব্যাখ্যা এবে শুনহ এখন॥ 🕰 रे कर्फरयोशेक्षांन क्षियाल निभ्हत्र। কৰ্মবন্ধন হতে মুক্তি হবে ধনঞ্জয় 🖪 নিষাম কর্মফলের নাহিক বিনাশ। অল্লকশৈ ফল হয় মহাভয় নাশ ॥ • ুনিকাম কর্ম্মের ফলে এক বৃদ্ধি হয়। ঈশীরেতে ভক্তি রেথে তরিবে নিশ্চয়॥ এক মাত্র ভগবানে করিলে চিন্তন। নিষ্কাম কন্মীর হয় অতি শুদ্ধ মন॥ সকাম কুর্মের যারা করে অনুষ্ঠান। ঞ্ারা অতি চিস্তাবান্॥ ফল আস

শ্রীমন্তগবদগীতা

বুদ্ধির চীঞ্জা ঘটে চিন্তার ক্লাকুল। "নিষ্ঠাৰী কন্মীর বৃদ্ধি ভক্তিতে আকুল। ্ এক্টিত্রতা হেতু তার তথ্বজান হয়। मकांस निकीय कर्या वह रखन हरा॥ ৰে সকল কৰ্ম্মকাণ্ড বেদেতে বিহিত। "ক্রিলে স্থাপাত ফঁল ফলিবে নিশ্চিত॥ যজ্ঞাদি সাধন হলে কামনা সফল। সৰ্গ আদি লাভ হয় না যায় বিফল॥ পবিত্র আনন্দ লাভ না হয় ভাঁহাতে। জন্ম, কর্ম্ম, পুত্র, আদি লভিবে তাহাজে॥ সৰ্গ আদি ফললাভ কৰ্মকাতে হয়। বিশেষ আনন্দ লাভ কর্মেতে না হ্য॥ দেশগেধনে অনুরক্ত থাহার জীবন। মিষ্টবাক্যে সুদাক্ষ্ট সুগ্ধ যার মন॥ মনেতে ঈশব চিন্তা না হব থাহার। বিলাস আদিতে মন চঞ্চল যাহার॥ কাসনাধ আকুলিত চিত্ত তার সদা। স্বৰ্গাদি বিষয় চায় না ভাবে অন্তথা ॥ কর্ম্মকাণ্ড করিবেক ফল আশাহীন। হইবে गাৰ্জিত চিত্ত কামনাবিহীন॥ চিত্তগুদ্ধি হযে তার একভক্তি হবে। 🗣 একভক্তি হয়ে দেই মুক্তিকে লভিবে॥ অধিহোত কর্ম আদি করে শেই জন। সকাম পুরুষ সেই লভে কাম্যুখন ॥

দ্বিতীয় অধ্যায় ৷

य क्रम यो प्रथ कर्य करत श्रेष्ट्रांतृत বিধিমতে সেই ুফল কর্ম্ম এদান 📙 স্থুখ ছঃখেণ্ভিন্নভাব কর পরিহার।" কাম্যধনে আশা তুমি নাহি কর জীর॥ প্রাপ্তধনে রক্ষা আশা করহ বর্জন। ू সম্বভাবে একমনে শভ আত্মজীন 🗐 অৱ যা গভীর জল যেই জলাশয়। উভয়েতে স্থান পান সমভাবে হয়॥ ^ কাম্যুকর্ণ্টেশ্বর্গলাভে যে আনন্দ হয়। ীব্রন্সবেত্তা পুরুষের সে আন্দ হয় 🛙 🔍 স্বৰ্গাদি কামনা লাভে যে আনন্দ হয়। আত্মজ্ঞান আনিন্দের তুলনা না হুয়॥ হে অর্জুন আছে তব কর্মে অধিকরি। কর্মাদলে কিন্তু তব নাছি অধিকার॥ ফল হেতু কর্ম্মে ষেন প্রবৃত্তি না হয়। কর্মা পরিত্যাগে নাহি প্রীতির উদয়॥ কর্মফল আশা তুমি করহ বর্জন। मिक्ति व्यमिकित पिटक ना कत गनन ॥ মনবোগী হয়ে কর্ম কর অনুষ্ঠান। চিত্ত সাম্যরূপ যোগ করছ সাধন॥ निकाम कर्णात रहरत कामा रहत हम। নিকাস সে কর্মা তুমি কর ধনঞ্জয়॥ পরমাত্ম বুদ্দিশাভ হইবে তোমার। শিক্ট সে বৃদ্ধি তার দলাকাতা দার॥

পরগঠ্মাবৃদ্ধিযুক্ত যে মানবপণ। हेश्यात्मिक गीनभूग का करत वर्ष्ट्य ॥ পর্মাত্মবৃদ্ধিযোগে এবে হওঁ রত। বুদ্ধিযুক্তকর্ম এই যোগ নামে খ্যাত॥ - কুর্মফল ভ্যাগ করি বৃদ্ধি পরায়ণ। পরমাত্মলাভ হেতু করয়ে যতন॥ জন্মরূপ বন্ধন হতে বিমৃক্ত কারণ। বিষ্ণুপদ লাভ করি মোক্ষেত্ত গমন॥ जव वृक्षि इरव यरव खारनरक मधन ६ নিবেক বৈরাগ্য আসি উদিবে তথন॥ পর্যাত্মজানে বুদ্ধি হইবে নি*6ল। হুইবে তথন তব তবজান ফল ৷ অৰ্জুন বলেন এবে খনহে কেশব। সমাধিস্থ স্থিতিপ্ৰজ্ঞ লক্ষণ কি সৰ্ব 🕯 কিন্নপ তাঁহার বাক্য, কিবা তাঁব স্থিতি। কিন্ধপ তাঁহার কার্য্য, কিবা তার গতি॥ প্রীকৃষ্ণ বলেন এবে শুনহে অর্জুন। স্থিতপ্রজ্ঞ পুরুষের এই হয় গুণ॥ চিত্তের বাসনা যিনি পরিত্যাগ করি। সাধন আত্মাতে তাঁর আত্ম-তৃপ্তি করি॥*

শ সাত্রীক সহিত কিছুই সংগ্রিষ্ট নাই, এইরপে জানই আর্জান; কান্যাদি সাসনিক ধর্ম; স্তরাং স্থ, মুংগ, ইচ্ছা, মেদ, প্রমূতি ভাববিধীর তুইয়া মুমিরণ নিজ শাত্রাতেই ভৃগুলাভ করিয়া থাকেন ৮

দ্বিতীয় অধ্যায়।

ना इम्र উদেদী यात्र मध्य इरणना বিষয়ের শ্বথে চিত্ত নিষ্ট্ ইইলে 🌇 ভর ক্রোধ হীন হয ক্রীভরাগঞ্জে। স্থিরবৃদ্ধি স্থিতপ্রজ তাহাকেই কলে॥ पिक्षि निमार्थ योज स्मिक्ष नाहि क्षे। প্রিয় বা অপ্রিয় লাভে সমজান হয়॥ **সং**गोत्र विद्यां किया जनग मत्रात्। भरखाय वियोग किया नांटि रश भरने॥ প্রশংসা বিশেষ ভাব ন হি আছে বার। সর্বজনে স্থিতপ্রজ্ঞ নাম দেয় তাঁর॥ 🧸 কুশা যথা শির:পুদ সন্ধৃচিত রাথে। তাহার ইজিয় সব সেইরূপ থাকে ॥ कामु विषय जांत्र ना थाक भनन। ইন্রিয় ও বহিঃ কার্য্য না কর্ম্বে তথন ॥ ইঞ্রিয় হর্কল তার পীড়িত যে জন। भिकिशीन हरा भया ना करत छार्ग॥ তারও ইদ্রিয় সব নাহি করে কাঞ্চ। ী অত্যন্ত প্রভেদ কিন্ত উভয়ের মাঝ। বিষয় বাসনা তার নাহি হর শেষ। স্থিতপ্রজের বাসনাদি সকলি নি:শেষ॥ পীড়িত ইন্দ্রিয়ের থাকে সমস্ত কামনা। বন্দদর্শী স্থিত্বপ্রতির নাহি কোন বাসমুশ। हर अर्ब्बन वनमानी त्य देखिय भग। বুলৈতে বিবেকী খন করে আকুর্যণ 🛮

দেহের উশর তাঁদের ক্ষমতা অপার। विद्वकीत गद्धा त्म क्यामा विकास ॥ ইন্দিয় সংযুত ব্যক্তি আমান যে ভক্ত। নিপ্হীত চিত্ত হয়ে আমায় হয় ব্লত ॥ रेखिय मकरण यिनि करत्रहिन वर्ष। স্থিতপ্রভা নাম ধরে অতুল হয় যশ॥ বিষয় চিন্তায় হয়, মানসে আসজি'। কামনা উদিত হয় হইতে আস্তি ॥ কামনাতে বিশ্ব হলে জোধের উদয়। • ক্রোধেতে সমোহ, মোহে স্বতি ভ্রম হর।। স্থৃতি ভ্রংশ হতে হয় বুদ্ধির বিনাশ। বুদ্ধিনাশ হলে হয় মান্টবর নুশি॥ গিনিশ ইন্সিয় হয় বশীভূত যাঁর। রাগ, দেক, আদি রিপু নাছি থাকে তার॥ নিগৃহীত চিত্ত হয়ে মনে শান্তি পায়। এইরূপ শাস্তি হলে ছঃখ দূরে যায়॥ শুদ্ধচিত্ত জন বৃদ্ধি আত্মলাভ পায়। কোনরূপ হঃখ তাঁরে না করে অশ্রয় 🛚 আপনার চিত্ত যেই না জিনিতে পারে। আত্মজ্ঞান নাহি তার ধ্যানের কি ধারে॥ আস্ক্রানহীন জনে শাস্তি নাহি হয়। শাস্তিহীন পুরুষের যোক্ষ কোপা রয়॥ জীলের উপরে নৌকা ভাসমীন হলে। বিচলিত হা বছা ।

দ্বিতীয় অধ্যায়।

সেইরূপ ইটি র যদি বিচলিত-হর। সাধকের নিঃসন্দেহ প্রজ্ঞা হরি লয়। जक्ल हे छित्रा दांति निवृत्व **हर**श्रह । মুনিগণ স্থিতপ্রজ্ঞ তাঁহারে বলেছে॥ ~ আত্মজান শাভ হলে স্থিতপ্ৰক্ত হয়। জীবে ব্রক্ষে ভিয় বোধ নাহি তার রয়-ি প্রজা হয় অজ্ঞানীর রাত্তির স্বরূপ। ইহাকে তাহারা দেখে অন্ধকার রূপ। ष्ट्रेष्ट्रभ ताजिएक स्मिर्श ह्यां शिशन कार्श। সক্রপ ইন্সিয় যারা সংযতই রাথে। অজ্ঞানী জাগ্ৰত থাকে অবিভা নিদ্ৰায়। স্থিত প্রারজ্ঞার অধিকা হয় রাত্রি প্রায়। নদ নদী জলপূর্ণ গভীর সাগরে। যদিও বুর্ধার জল তাহাতেই পুঞ্জে॥ তাতেও সমুদ্ৰ যেন ক্ষতি বৃদ্ধি হীন। সেইরূপ স্থিতপ্রজ্ঞও চাঞ্চল্য বিহীন॥ যদি ও কামনা কোন করয়ে প্রবেশ। ুতথনি তাহার হয় সম্পূর্ণ নিঃশেষ॥ মহাত্মার মন কভু না হয় চঞ্চল। चगर निनि श एएक भाग भाष्टिकन ॥ विषयकांगी जत्न ध नांखि कांगा। ব্ৰহ্মনিষ্ঠা অবস্থাতে কেবল এ হয়। কামনা করিয়া ভুটাগ থাকেন সংসারে। । নি<u>ম্পু</u>হ নির্মাম হ্লয়ে সংসার ভিতরে॥

শ্বিতপ্রজ্ঞ পুরুষের শান্তি লাভ হয়
শ্বেহংকার বিপু আদ্বি অতি দুরে রয়॥
এরপেঞ্চাকেন যিনি সংসার মাঝার।
মায়ায় মোহিত মন নাহি হয় তাঁর॥
মৃত্যুকালে যদি কারও থাকে এই জ্ঞান।
নিঃসন্দেহে পান তিনি ব্রন্মেতে নির্বাণ॥

তৃতীয় অধ্যায়।

खांचाकान कर्यं रूट यहि द्यंष्ठं रयः।

उद किन रह क्मेंच चलार जामायः॥

रावात्रकत रा शिश्माय रेक्टा नाहि यायः।

रावे यूर्ति किन जांक द्यतिष्ठं जामायः॥

कक् कर्यः, कक् छान, धरे द्यंष्ठं वनः।

किना रूट कान् द्यंष्ठं नाशि क्मि दनः॥

रेशांकरे वृष्तिजांख रहेंदकि जागि।

किर्म मम द्यंपः रूट किक वन क्मि॥

रह शतकान, शृद्धं व वरनिष्ट रजामायः।

रेशांकर छान, कर्या प्रशे निष्ठा हयः।

छानी ज्ञान छानर्यांश द्यंष्ठं विन्न मारनः।

कर्यो निकाम रूटन निक्रिय छान र्यः।

कर्यं निकाम रूटन निक्रिय छान र्यः।

ভূতীয় অধ্যায়।

एकि छिछ नाहि राग कि हुई ना रश 🗠 সন্যাসেও কভু নাহি জ্ঞানেরাউদ্দ ॥ मगारमत हिङ्ग निरम : क्वान ना शिष्ट्य । निकारमञ्ज हिल्ला कि श्रेट्स खारनाम्य ॥ বিনা কর্মো কভু কেহ না পারে থাকিতে প্রভাবতঃ রত হয় তাদের কাজেতে॥ गत्न भत्न विषयोषि अत्र (प करत्। কর্শেন্ড্রিয় সংধন্দিলে অজ্ঞ বলি তারে॥ दर् व्यक्ति, क्वारनिक्षित्र कतिरत्र मः यण । ্রত্যজ্ঞিরে ফলের আশা কর্মে হয় রত॥ ্রেষ্ঠব্যক্তি তিনি হন নাহিক সংশ্র। অগুদ্ধচেতা হয়্যাসীকে করে পরাজয়। হে অর্জুন নিত্যক্রিয়া কর অনুষ্ঠান কর্ম নাহি করা চেয়ে করাই প্রধান॥ যতদিন চিত্তগুদ্ধি নাহি হয় তব। বেদবিহিত কর্মাদি কর তুমি সব॥ कर्य नाहि क'रत यनि कत जवशान। পরীর যাতাও তব না হবে সাধন॥ नियत छ एम एम कर्या करत (यह व्यन নিফাম হেতু নাহি হয় কর্ণোতে বন্ধন। অগ্রথা করিলে কর্মা কর্মের বন্ধন। কামনা রহিত হয়ে কর্মে দাও মন। ने बंद फेरफर्य कर्य कद अनुष्ठीन। वसनि मनोत्र क्षेत्र ना इदव छथन ॥

অতএক হে অৰ্জুন হয়ে শুদ্ধ মন। না ক'রে ফলের আশা কর্ত্য দাও মন। কগারন্তে প্রজাপতি স্থজি সব জীবে। আজ্ঞা দেন যজ্ঞ দারা বৃদ্ধি প্রাপ্ত হবে॥ िक मिन कर मत्व युक्त व्यक्ष्मान। প্ৰাপ্ত হবে তাহাতেই যে ফল বিধান। প্রজাগণ যাগযক্ত কর অমুষ্ঠান। দেবতা দিগকে কর সম্ভোষ্ প্রদান ॥ = দেবতা সম্ভষ্ট হলে হইবে সাধনা। इहेटव कनामि लाख रिकाश कामिनी॥ দেবদত্তভোগ লাভ হইবে শুখক। েই ভোগে তাঁহাদের করিবে পুজন॥ (मरवारमध्यः शक्ष्यक कत्रित्व शाहारी। যজ্জেতে সম্ভষ্ট তবে হবে দেবগণ॥ যজ্ঞাবশিষ্ট অল্ল যে কন্নয়ে ভোজন। সর্বা পাপ হতে তিনি বিনিশ্ব কৈ হন 🛭 দেবনিবেদিত জন্ন করিলে ভোজন। (मरवत व्यमान পেয়ে পবিত হয় गन। কেবল আপন জন্ম বেই অন্ন করে। আক্রান্ত নিশ্চিত হয় সে পার্পের ভরে॥ শবীর অন্নেতে হ্য, জন্ন বৃষ্টি হতে। ীয়ক্ত হতে হয় মেঘ, যজ্ঞ কৰ্মা হতে॥ অগ্নিহোত্র কর্ম্ম সব বেদক্ততে হয় 🙌 বেদের-জনম পুনঃ ব্রন্ম হতে হয় ॥ 🥷

ধর্মারপে পরব্রহ্ন যজ্জেতেই স্থিত। ত্বিনাশী ধর্ম এই জগতে বিদ্যুত। रा अन भानक दिन के कद्राय शांतूर्व। প্রবর্ত্তিত কর্ম্ম পথে না করে গমন ₩ हेक्तिया जामक मिहे शोशयूक सन। রুথা বহে সেই তার পাপের জীবীন॥ 🗝 আত্মাতেই যেই জন প্রীতি লাভ করে। আত্মাতেই আনন্দ সে অন্তব করে। আত্মাতে সম্ভুষ্ট হয়ে থাকেন যে জন। আবগুক নাহয় তাঁর কর্ম অহ্ঠান॥ (ह व्यर्जुन, छानी जित्र जित्र जाव हम । পাপ পূশ্য তাহাদেব নাহি কিছু হয়॥ কর্মেতে বিরত কিম্বা ক্রিয়াসক্ত হয় 🟲 প্রয়োজন সিদ্ধি হেতু সহায় না•লয়॥ কামনা ত্যজিয়ে কর্ম কর অহ্ঠান। তবেত পাইবে তুমি মুক্তির নির্বাণ॥ जनकानि सिविशन कर्पा निरम्भन। 🤈 করেছিল জ্ঞান লাভ তাঁহারা তথন॥ স্বধর্মে প্রাবৃত্তি হেতু তাঁহাদ্যের মত। वृशिया कर्षवा कार्या २७ जूमि तक ॥ শেষ্ঠলোকে যেই কর্ম করে অনুষ্ঠান। भाषात्रत्। त्यरे कर्षं गणित्व श्रधान ॥ প্রবৃত্তি নিবৃত্তি কিমা শ্রেষ্ঠ যাহা বলে । স্থারণে মানী করি সেই মত চলে।

ন্মা দেখি কর্ত্তব্য মম ত্রিলোক মাঝার। <u>,পুলৰ লৈম্ব।</u> কিম্বানা আছে আমার ॥ হে অৰ্জ্ন, তাহা তুমি আছত বিদিত। তিথাপি কার্য্যেতে আমি না রহি বিরত 🛚 আশশু ত্যজিনে যদি নাহি করি কাজ। ৈ এখনই ত্যজিবে কর্ম মানব্দমাজ॥ কর্মে রত নাহি হলে ধর্ম লোপ হবে। সর্বলোক তাহা হলে উৎসন্ন যাইবে॥ यांग युक्त नाहि इत्र कियाहीन इरम् ু ধৰ্ম্মন্ত্ৰষ্ট হবে লোক বিপথে যাইলে॥ বর্ণসন্ধর হয়ে প্রজা হইবে নিধন। আমি তবে এ সবেব হইক কারণ॥ অজানী মানব গণ হইয়ে আসকু। কর্মের্ডে বেরূপে তারা থাকে **ই**য়ে রত ॥ জ্ঞানিগণ সেই রূপে থাকিবেক রত। কদাচ কর্ম্মেতে তাঁরা না হবে বিরত॥ অনাসক্ত চিত্তে তাঁরা করে অনুষ্ঠান। লোক শিক্ষার এই হয় উত্তম বিধান ি **ज्ञानी कामना करत प्रशीपि विषया ।** ফল আশা করে তারা কর্ম্ম অনুষ্ঠিয়ে। স্বৰ্গ আদি ফল লাভে অধিকারী হয়। নিখামার্থ আত্মজান নাহিং লাভ হয় ॥ জানী কিন্তু সেই কর্ম করে অন্নষ্ঠানু। নিষাম কামনা হেতু লভে আত্মজনি॥

কর্মোতে আশত্ত্ব চিত্ত, অজ্ঞানী খে জন্। •বুদ্ধি ভেদ নাহি তার করিবে কঞ্চন॥ জ্ঞানি জনে স্বয়ৎ কর্ম করে অনুষ্ঠান। কার্য্যেতে হইতে রত দিবেক বিধান * কর্ণাহীন হলে তার ছইদ্বিক যাবে। স্বৰ্গাদি কামনা লাভে বঞ্চিত হইথে॥ নিকাম কর্মেতে তার নাহি আছে জান। আত্মজান লাভ হেতু না পাবে নির্মাণ॥ প্রস্কৃতির গুণরাশি কার্য্যে করে রত। বিষ্ঢাত্মা মনে করে সেই হয় রত ॥ । ইন্সিয়েরা করে কাজ প্রকৃতির গুণে। विष्यंत श्रीम भेष और करत गरन ॥ আত্মার সংশ্রব নাহি তাদের সহিত। আমি করি এই মনে না করা ঊচিত॥ জানহীন যে সানব প্রকৃতির গুণে বিষয়েতে রত হয় অমুরক্ত মনে॥ ভাহার কর্মের প্রতি ভক্তি যাহা হয়। চ্মাত্মজ্ঞ বিদ্বান কভু না দুষিবে তায়॥ অতএব হে অর্জুন গুনহে বচন। কর্ণারাশি তব কর আগাতে **অ**র্পণ॥ কামনা, মমতা, শোক, হইয়ে রহিত। যুদ্ধহেতু হও এবে তুমি হে উণিত॥ শ্রদা করি, হিংসা ত্যজি, যে মানব গণ । ক্ষু যারা এইরপ মতামুসরণ।।

ঝৰ্শজাল হতে তারা মুক্তি লাভ পায়। ভাহাতে দনেহ কভুনাহিক জনায়॥ পূর্ব্বোক্তনিমতেতে যারা না করে গমন নিবুদ্ধি অজ্ঞান তান্না বিহীন চেতন॥ ুজ্ঞানীপু স্বভাবগুণে করে থাকে কাজ। প্রকৃতির বশ সবে পৃথিবীর মাঝ॥ অজ্ঞানী করিবে কাজ স্বভাবের গুণে! ইহাতে আশ্চর্য্য কিছু নহি লয় মনে॥ তখন শাসন মম কি করিতে পান্ধে। *শ্বভাবের অতিক্রম কে করিতে পারে*॥ সানব প্রকৃতি হয় ইক্রিয়ের বৃশ। অুমুক্লে অমুরক্ত প্রতিক্লে দেয়॥ **শানবের শক্ত তারা উভয়েই হয় ৯** তাহাদের বশ হওয়া উচিত না হয়॥ স্বধর্ম সাধনে যদি অঙ্গহানি হয়। তাহাতেও নাহি কিছু প্ৰত্যবায় হয়॥ পরধর্মা অমুষ্ঠানে অতি ভয় হয়। স্বধর্ম্যে নিধন ভাল পর কিছু নয়॥ প্রকৃতির অনুগামী নিজধর্ম হয়। স্বধর্মসাধন তার অতি শীঘ্র হয়॥ ব্রাস্থাতাহার ধর্মকেরে অনুষ্ঠান। ্ক্রতিয়ের সেই ধর্মে নাহ্নিপ্রয়োজন॥ অহিংসা ভ্রান্ধণ ধর্ম, ভ্রান্ধণেই সাজে 🛚 যুদ্ধাদি ক্ষত্রিয় ধর্ম সংসারের মাবে 🕻

ভূতীয় অধ্যায়।

श्वधर्षाभागती यपि प्रशास्त्र अ १ रहा । তাতেও কল্যাণ লাভ জানিকা নিশ্যু॥ व्यर्क्त क्रम्भरक अरव विक्राह्म ठर्थन। অনিচ্ছাতে যেই করে পাপ আচরণ। কি কারণ পাপে তাকে কে করে প্রেরণা বলহ আমায় তুমি সেই বিবর্গী॥ ঞ্জীকৃষ্ণ বলেন তবে শুনহে অর্জুন। ক্রোধরূপ ক্বাম হতে হয় রজেপ্তিণ॥ " পুরুণ না হয় এর, উগ্র অভিশয়। ভয়ানক বৈরী কাম জানিহ নিশ্চয় ॥ ধুমে বহুত হয় যথা, ধূলাতে দৰ্পণ। জরায় চর্ক্তে যথা গর্জ আবরণ।। সেইরূপ কামরিপু জ্ঞানাব্ত করে। পণ্ডিতে বিদিত ইহা পৃথি**লী**'ভিতরে ॥ জ্ঞানিদের শত্রু ইহা পুরণ না হয়। অনলের সম ইহা জ্ঞান আবর্য। कर्ण्यक्तिय, क्लान्तियम, वृष्ति, जात गन। কামরিপু করে এদের আশ্রয় গ্রহণ॥ জ্ঞানকে আরুত রাধে-ুমানব শরীরে। অঞানী সানবে, সোহে অভিভূত করে॥ আগেতে ইন্দ্রিয় সবে বশীভূত কর। তারপর জ্ঞাননাশী কাম নষ্ট কর॥ শরীর হতে ইন্সিয় অতি শ্রেষ্ঠ হয়। ¹ ই জিয় হইতে মন তত্পরি বুদ্ধি হয়॥

ক্ষি হতে আত্মা প্নঃ শ্রেষ্ঠ হয়।
সর্বৃত্তের আত্মা হয় ক্মানিবে নিশ্চয়॥
আত্মাকে এইক্সপে হইয়া বিদিত।
স্থির বৃদ্ধি হয়ে এবে কর নিজ হিত॥
সনকে অস্থির করি কামে কর নাশ।
আায়জ্ঞান কর লাভ এই সম আশ॥

চতুৰ্থ অধ্যায়।

প্রীর্ফ বলেন প্নঃ গুনহে ক্রর্জুন।
প্রিথমে স্থাকে আমি দিয়েছি এ জ্ঞান॥
স্থা দেয় নিজপ্জে, মহু দেয় ইক্ষুকুরে।
এইরূপে এই জ্ঞান পরস্পরাগত।
কালবশে এবে যোগ হইয়াছে হত॥

একণে তোমার কাছে করিছ কীর্ত্তন।
কানি তুমি ভক্ত মম, স্থা, হে অর্জুন।
তাহাতেই এ রহস্য,
হইল আজ প্রকাশ্য
নত্বা এ জানষোগ না হয় প্রকাশ।
তানাদি তাবায় ইহা জ্ঞানেতে বিকাশ।

জর্ন একথা শুনি বলেন কেশবে। জুর জুনা বহু পূর্বের, সুর্যা এই ভবে

ত তুর্থ অধ্যায়।

তবে তুমি কি প্রকারে, দিয়েছ জ্ঞান স্থোরে, প্রস্থির সময়ে জ্ঞান করিলৈ প্রকাশ্বন কিরূপে বুঝিব তাহানা হয় বিশ্বাস।

শীরক্ষ কহেন তবে, শুন ধনপ্রয়।
তোমার আমার প্রশা বছবার ইয়॥
জন্ম জন্মের অন্থানী, তাহাত বিদিত আমি,
সে সব জন্মের কথা শুন পরস্তপ।
শা হও বিদ্বিত তুমি সে ব্স্তান্ত সব॥

না আছে জনম মন না হয় সরণ।
সবার স্থার আনি আনে সাধারণ॥
প্রকৃতির বশ হয়ে, সাধাতে জনম লয়ে,
সময়ে সময়ে করি দেহের ধ্রারণ।
অধর্ণেতে করে যবে ধর্মের পীড়ন॥

স্বধর্মে থাকিয়া যারা করে সাচরণ।
তাহাদের রক্ষা আমি করি অমুক্ষণ॥
করি ছপ্টের দলন, আর ধ্যের স্থাপন,
জগতের এই কাজ সাধিবার তরে।
যুগে যুগে স্বতরি মানব ভিতরে॥

হে অর্জন । এই সব যে হয় বিদিত।
তার করু এই জন্মে না হয় অহিত॥
শরণ ইইলে তার,
সরণ ইইলে তার,

দ্বিয় এই জ্ঞানলাভ করে সেইজন। তাহার আক্ষার হয আত্মাতে মিলন॥

বিয়য়ে জীগজি নাই ভয় ক্রোধহীন।
তামাতে সংযত চিত্ত থাকে চিরদিন॥
তামার দারা লয়ে, তপশ্রায় রত হয়ে,
তামার দারা লাভ করে সেই জন।
তাহাতে সন্দেহ আর না হয় কথন॥

যেভাবে যে জন মম উপাসনা করে।
পেই জন সেই ভাবে ফল লাভ করে।
কর্গে অধিকাবী যারা, নানারপে পুজে তান্না,
আমার দর্শিত পথে করবে গর্মন।
তীহাদের রক্ষা আমি করি সর্বাক্ষণ।

ইহলোকে কর্মফল আগু লাভ হয়।
সে হেতু সকাম জনে ইন্দ্রাদি পূজ্য়॥
গুণ জার কর্ম যত করিয়ে বিভাগ তত
চাবি বর্ণ সৃষ্টি আমি করেছি ভূতলে।
অধ্যয় অকর্তা তবু জানিবে সকলে॥

না আছে বাসনা মম কভু কর্মফলে।
না হই অনুরক্ত সৃষ্টি কার্য্য সকলে॥
ইতিব ভাহার হিত হলে এরপ বিদিত
কর্মজালে বদ্ধ কভু না হবে সে জন।
অকর্ত্তা অভোক্তা আত্মা জানে ঋষিনি।

চতুর্থ অখ্যায়।

পুরাকালে নোকলোতী যত থামিগু।

আত্মার স্বরূপ তুর জানিয়ে তুখন ।

করেছিল আয়োজন কুরি কিয়ার সাধন
গৃহী হয়ে তাঁরা সব কর্মে ছিল রও।

তুমিও তাঁদের মত কর্মে হও রত।

সেইরূপে কর্মমোগ কর অহুষ্ঠান।

কর্ত্ব্য বা অকর্ত্ব্য না কর সমান।

কর্ত্তব্য অকর্ত্তব্য কিবা না কর স্থির।

নির্মণণে বৃদ্ধিমান হয়েন অন্থির ॥

তাই এই উপদেশ করহে অভিনিবেশ

জানিলে তোমার মুক্তি হইবে নিশ্ব ।

তাহাতে কভ্ও তুমি না কর সংশয়॥

বিহিত, নিষিদ্ধ, আর কর্ম ক্ষিবিহিত। হয় কর্ম তিথা এই জগতে বিদিত॥ জান যদি সব তত্ত্ব স্থাতে ব্যক্তির তবু এ তত্ত্ব

অকর্ণেতে কর্ণ থিনি করেন দর্শন।
কর্ণেতে অকর্ণ তাঁর হয় নিরীক্ষণ॥
কর্ণবের আরাধনা বিষয় যাহার।
কর্ণা ও অকর্ণা ভাব কি আছে তাধাব।
জ্ঞানহেতু কোন কার্য্যে বন্ধন না ভাবে।
কর্ণা ও অকর্ণা ছই এক বলে ভাবে॥
মানব সধ্যেতে ভারে বৃদ্ধিয়ান গণে।
সর্বা কর্ণা অনুষ্ঠাতা যোগী বলে ভণে॥

কর্শ হবে অনুষ্ঠত কাম সঙ্গল বর্জিত জানরূপ অধী দ্বারা হবে বিমিপ্রিত। তিবে পেই কুর্মী জনে জানিবে পণ্ডিত॥

আগজি না থাকে যাঁর কর্ম কিয়া ফলে।
নদ্যুই প্রফুল্ল অন্তর গব অবহেলে॥
যদি কর্মেরত হয় তবু কিছু নাহি হয়
যে হেতু কামনা তাঁব হইয়াছে হত।
আত্মা ও চিত্ত তার হয়েছে সংযত ॥
শরীর নির্বাহ হেতু কর্ম অর্ম্ভান। *
করিলেও নাহি হব সংসার বন্ধন॥

অনায়াসে লক্ক যাহা সম্ভূষ্ট তাহাঁতে।
শীত উষ্ণ আদি ঋতু নাহি কিছু বাধে॥
লাভালাভে সমজ্ঞান মাংসঁহ্য বিহীন
এই ক্লপে কৰ্ম যদি করে অমুষ্ঠান।
কভু নাহি হয় তার সংসার বন্ধন॥

কর্ম ফলে যার নাহি থাকে অভিলাষ। কাম কোধাদির যিনি নাহি হন দাস॥
ব্রুক্ষেতে বাঁহার চিত স্থির ভাবে অবস্থিত
যাগ ষজ্ঞ আদি যদি করে অনুষ্ঠান।
স্ব কর্মেতে তিনি লিগু নাহি হন॥
কিলোর সহিত কর্ম্ম নষ্ট হয়ে যায়।
সেই কর্মা হতে তার বন্ধন না হয়॥

্চতুর্থ অধ্যায়। ১

যজ্ঞ আদি কর্মে থার প্রদা বৃদ্ধি হয়।
হোগ হোতা মকলেতে প্রদা জালাহ্য হয়।
সকলেতে প্রদা থিকি কর্মেণ সনন।
প্রদা লাভ হয় তার নিশ্চয় তথ্য।।

অধিকারী ভেদে যজ্ঞ নানাস্থপ হয়।
সর্বাত্র প্রন্ধ দর্শন সর্বা শ্রেষ্ঠ হয়।
ইন্দ্রাদি দেবতা জন্ম দেবযজ্ঞ হয়।
দেবতার তৃপ্তি হেতু অস্কৃষ্ঠিত হয়।
ত্রবেত্তা যোগীগণ জ্ঞানযোগ করে।
প্রন্ধরণ হোমাগিতে আত্মাহতি করে।

বহুজন ইন্দ্রিয়াদি করিয়ে সংযত।
সংযদে আছুতি দিয়ে ইন্দ্রিয়াদি যত।
জিভেন্তিয়ে তাবা হয় সংসাপ ভিতর।
কার্যোতে বিরত হয় সংযম তৎপর॥

পুনঃ আছে হেনজন করে তারা আয়োজন ইন্দ্রিয়াদি কার্য্য সব করমে সাধন। বিষয়াদি ভোগে কিন্তু আসক্ত না হয়। যদিও ইন্দ্রিয় সব কাজে রত হয়॥

জ্ঞানেন্দ্রিয় কর্মেন্দ্রিয় আর পঞ্চ প্রাণ।
মন আর বৃদ্ধি সহ শরীব ধারণ॥
সকলি সংযত করে আগ্রন্তান লুভি করে
ভাষাসংয় করে আহুতি প্রদান।
এইরূপে যোগী তারা গভে আগ্রন্তান॥

এই রূপে নানাজনে নানা যজ্ঞ করে।
জিন্ন ভিন্ন যোগগণ ভিন্ন আখ্যা ধরে।
কৈছ তড়ীগ ধন্নন কৈছ তপ কেছ করে যোগ।
কেছ করে বেদাস্থ্যাস কেছ জ্ঞানযোগ।
কি

দৃঢ়ত্রত যজ্ঞ কেহ করে জার্ম্চান।
বিভিন্ন যজ্ঞের এই বিভিন্ন বিধান

যথাশক্তি বহিবারু করে আকর্ষণ।
খাস প্রথাস হলে রোধ প্রক তর্থন ।
খাস প্রথাশক্তি করিরে নির্গত।
খাস প্রথাস হলে রোধ রেচক স্পডিহিত॥

নিংসারণ আকর্ষণ কিছু নাহি করে। প্রাণবার্যু কৈবল অন্তরেতে ধরে॥ মুথ আর নাসারদ্ধ, করে অবরোধ। কুম্তক আখ্যাত হয় নিখাসের রোধ॥ কেহবা পুরক করে কেহবা রেচক। কেহবা কুম্তক করে বসিয়ে একক॥

কেহবা আহার নিজ করিয়ে সংযত।
প্রাণবায় প্রভৃতিকে রাখনে সংযত॥
প্রাণাপাণ বায় সব করে সুংযমন।
প্রইরূপে হয় যোগী প্রাণায়াম পরায়ণ॥
যক্ত সম্পাদনে তারা পাপশ্র হন।

চতুৰ্থ অধ্যায় ৷

যজাতে করথে তারা অমৃত ভোজন।
এইরূপে করে লাভ ব্রন্ধ লনাভন।
না পায় মহয়েলোক হলে যজাহীন।
স্বৰ্গাদি সম্পদ লাভ নাহি কোন দিন।

যে মানব নাহি করে বঁজা অনুষ্ঠান।
মন্ত্র্যা লোকেও তার না হয় গমন॥

বজ্ঞা হয় বহুদ্ধপ বেদে লিখিত এরপ

স্কল বজ্ঞাই জান কর্মা জনিত।

সংসার হতে মুক্ত হও হইয়ে বিদিত॥

দান্যজ্ঞ হতে শ্রেষ্ঠ জ্ঞান্যজ্ঞ হয়।
কারণ সক্ত্র কর্মা জ্ঞানেতেই লয়॥
এই জ্ঞান লভিবারে উপদেপ্তা চাই।
বন্ধবেতা শুরু কাছে জ্ঞিজ্ঞান্ত সদাই॥

দেওবং প্রশিপাত আর সাঠাকপাত প্রশ্ন আর সেবাগুণে আত্মশিক্ষা কর। তবদর্শী গুরু কাছে শিক্ষা লাভ কর॥ হে অর্জ্জন এইজ্ঞান লভিবে যথন। মোহেতে আবদ্ধ তুমি না হবে তথন॥

সকল জীবের আলা আমার এ পর্যাখ্রা সর্বভূতে এক আলাই করিবে দর্শন। সাম্বাজ্ঞান সেই কালে ঘূচিবে তথন॥ পাপাচারী যদি হও অন্ত পাপী হতে।
তথাপি তোমার জ্ঞান পারিবে তরাতে ।
'বেমন এলপ্ত বহি কাঠ ভন্মে তথনি
ভানাগি তেমন নাশে পূর্বে কর্ম ফল।
আজ্ঞান লাভ ভিন্ন সকলি নিক্ষল ॥
ইংলোকে জ্ঞান ভিন্ন নাহি কিছু আর ।
পরম পবিত্র ইহা সকলের সার ॥
কর্মবোগে ক্রমশঃ রত হলে মন।
ভবিশ্বতে অনায়াসে সভত আত্মুক্তানী ॥
শ্রমবান জিতেক্রিয় গুরুসেবাপর ।
আত্মজান লাভ করে মৃতি তৎপর ॥
জানহীন শ্রমাহীন আর বিশ্বাস বিহীন
ইহলোকে ভাহাদের বিনাশ নিশ্চয়।
পরলোকে ভাহাদের বিনাশ নিশ্চয়।

সমর্দ্ধি যোগ হে অর্জ্ন। জানে যেই জন। ভগবানে সর্বাফল করন্ত্রে অর্পণ॥ সকল সংশ্য যার নাহি কোন আর

> সংশয় হয়েছে হত, আত্মজ্ঞানে যায়। কর্মেতে আবদ্ধ নয় সে আত্মজ্ঞ আয়॥

শুনহে ভারত, জ্ঞানেতে সংশয়, করহে ছেদুন।, অজ্ঞানে করে দূর, যুদ্ধেতে মন, দাওহে এখন॥

পঞ্চম অধ্যায় ৷

অৰ্জুন বলেন ক্বফ, শুনহে এখন। কর্মাযোগ ও সন্তাস, তুমি করালেশ্রবণ্ कर्पारयोश कि मञ्जोम क्वां टक्षाः २म । নিশ্চয় করিয়া ভূমি বলহ আগায়॥ জ্ঞাবান্ বলিলেন শুনহে অর্জ্ন। উভয়ই মুক্তির হেতু জানিবে অর্জুন॥ কর্ম্ম সন্থাস চেয়ে কর্মযোগ শ্রেষ্ঠ হয়। ° हेहाहे क्लागुनिक इंग्लिनिटव निम्हंश। दियोकाष्क्री माहि यात्र त्काधापि विक्रम। স্বৰ্গ জীদি স্থথে যার নাহি হয় মন ॥ তিনিই সম্ভাসী, নিত্য কামনা রহিত। তিনিই লভেন মুক্তি সহজে নিশ্চিত॥ এক ফল উভয়ের পিথিতেরা কয়। কোন এক অমুষ্ঠিলে সেই ফল হয় ॥ कानी ७ मर्यामी करन त्यहें द्वान भाग्र। কর্মযোগী সেই স্থান অনায়াদে পায়॥ ছুইযোগ একরপ যার মনে হয়। পরমার্থ সঙ্গে দেখা তাঁহার নিশ্চয়॥ চিতভদি नार्टि राम जान नारि रग। শিলা কৰ্মযোৰ্জে সন্তাস ভাল নাহি হয়॥

কৰ্মাবোগী সিদ্ধ হতে বিশন্ত না হয়। ব্রক্ষির সুক্ষেতে শীঘ্র সাক্ষাৎ কার হয়॥ থে ধ্যুক্ত শুদ্ধচিত্ত জিতে ক্রিয়ে ভাব। সর্ব্বভূতা ীাম যার নিজাগে ভাব ॥ किर्मिष्ठं रूरमञ्जूष्टिनिनिर्मिश्च रून। 🔩 কুর্দা 🛪 রিলেও তিনি বদ্ধ নাহি হন॥ मृर्ग्त, अवन, न्थर्म, जांधान नगन। শয়ন, নিখাসত্যাগ, গ্রহণ কথন 🛚 উলোষ, নিমেষ, সব ইন্ত্রিয়েতে করে, সকলই ইন্ডিয় কার্য্য আত্মা নাহি করে॥ কৈর্মফল ত্যাগ করি ঈশবে অর্পণ। কামনা বিহীন কর্ম করে অফ্রান ॥ ক্রমল দল জল সম নিলি প্র হন। পাপ পুণ্যু দ্বারা তিনি আবন্ধ না ইন॥ কর্মফল ত্যাগ করে কর্মযোগিগণ। চিত্তশুদ্ধি হেতু করে কর্মের সাধন॥ কর্মযোগী কর্মফল পরিত্যাগ করে। মোক্ষরণ শান্তিলাভ করে অকাতরে॥ কর্মফলে কর্মীব্যক্তি করিয়ে কামনা। বন্ধন দুশা গ্রন্থ হয় সংসার কাম্না॥ জিতে ক্রিয় আত্মদর্শী যিনি মহাজন। সন হতে কর্মারাশি করে বিদূরণ ॥ চিত্তস্থাে এই দেহে করে জবস্থান। স্বয়ং না করে কাজ না প্লন্যে প্রবর্ত্তর ॥

লোকের,কর্তৃত্ব কভু না করে ঈশর। না হয় কর্ম্ম সকল রচনা তাঁহ।র ॥ অজ্ঞান মায়াই হয় সবার আকর 🖋 কার্য্যকর্ত্তা তাহা, প্রবর্ত্তনে উৎপর্মা পাপপুণ্য ঈশ্বর না করেন গ্রহণ। অবিভা মোহেতে মুগ্ধ মানবের সন 🌬 আত্মজ্ঞানে যবে হয় অজ্ঞানতা নাশ। ত্র্য্যবৎ পরত্রুদ্ধে করমে প্রকাশ। শ্রহ্মনিষ্ঠ বুদ্ধি যার পরব্রহ্ম রূপ। পীরত্রশো আত্মভাব ত্রন্ধনিষ্ঠা রূপ॥ ত্রহ্মপরায়ণ হয় যে মানব গণ। পাপ পুখ্যু নিখৃত হয় যার মন॥ মহাজানী মহাযোগী সে সন্মাসিগণ जम नाहि रत्र मुक्ति नएजन प्रक्षन॥ সমদশী কাছে হয় সকল সমান। কুকুর চণ্ডাল কিখা বিদান আদাণ॥ গো, হস্তী আদি 📉 সকলই সমান। সর্কোপরি সমদৃষ্টি করেন স্থাপন॥ ব্ৰঙ্গভাবে অবস্থিত যাঁহাদের মন। তাঁহারা সকল ভাব করে অতিক্রম। কারণ নির্দেষি ত্রন্স সম স্বরূপ হয়। मगमभी जन खरका উপস্থিত হয়॥ বিজাবান, প্রিয় লাভে জ্বষ্ট নাহি হন 🔏 **"ला**शिय मभागरम कञ् छिषिय ना दन ॥

স্থিরবৃদ্ধি মোহহীন স্রন্ধতেই স্থিত। বক্ষবেভা তিদি হন ব্ৰুকোঁ অবস্থিত 🗟 বাছে। প্রয়ে অনাদত্তি মনে শান্তি হয়। ব্ৰস্ববিশ্বি যুক্ত হ'মে অক্ষয় স্থ্ৰ ইন্মি । रे जिय वियम (जोटमें ना रहेंदेव वर्ज। णिविनेषेत् द्रिषं केत्रे रंगः मक्षा येखा। পণ্ডিতেরা এই ভাব করে অমুমান চ জানিবে, কৌভেয়া তুসিন্মই শ্রেষ্ঠ জান ॥ काम दकांध दवर्ग यिनि कर्छन धाइन। সুমাহিত চিত্ত তাঁর তিনি শ্বৰী ইন া আত্মাতেই স্থা বার আত্মাতে আরাম। আত্মতি প্রকাশ ধার আত্মতে বিরাম ॥ ব্ৰহ্মনিষ্ঠ যোগী তিনি ব্ৰক্ষেতে নিৰ্ক্ষাণ। বহিদু ষ্টি নি হি থাকে লোকপদ পানা নিষ্পাপ, স্ম্যাস্যুক্ত, সংশয় ৰজ্জিতা। সর্বান্তৃত হিতৈষী আব একাগ্র চিত 📭 তারাই লভেন মুক্তি জানিবে'নিশ্চিত। নিধ্বাণ ব্রুফেতে তারা হন উপস্থিত। কাম ত্রেণাধ উৎপন্ন না হয় যাহার ৷' আত্মজানী-সন্যাসী সংযত চিত্ত আর 🛭 তাঁহাদের গোকা লাভ জানহ নিশ্চয়। ুসকল অবস্থাতে হয় নাহিকুসংশয় ॥ 🕐 ীন হতে চিস্তা সব করে বিদ্রিত। চকুষয় ক্রমধ্যে করিয়ে স্থাপিত।

[‡] ষ্ঠি অধ্যায়া 🗗

প্রাণ অপান বায় নাসা রোধ করে ।
ইন্তিরে মনেতে আরু পদ্ধজন করে।
ইন্তিরে মনেতে আরু পদ্ধজন করে।
ইন্তা, ভিয়, তৈলাধ, যাল হইয়াছে বলা।
বিষয়ে বিরাগ যার মনেতে গ্রাসা ।
উচ্চাদের মোক্ষ লাভ হইবে নিক্ষা।
ইহাতে অর্জ্রন করু না কর সংশ্রম।
যত্তে ও তপে যে আনাতে হর রত।
সর্বলোক মহেশ্র স্বার হয়েছে বিদিজ।
তাহানের মোক্ষলাভ হইবে নিন্চিত।
তাহানের মোক্ষলাভ হইবে নিন্চিত।

ষ্ঠ অধ্যায়।

তিবু ও সীয়াসী যোগী,নাহিক সংশয় ৷ निक्षाम, वृष्यक रहजू निश्च नाहि इम ॥ শ্রুতিতৈ স্ন্যাস মাহা তারানাম যোগ। সঙ্ক না হলে ত্যাগ নাহি হয় যোগ॥ যোগেতে আর্দ হুতে বাঁহার মনন। বৈগৈ সধিন পক্ষে তার কর্মাই কারণ। যোগারত হবে যেই শুনহে অর্জুন। কর্ম্ম সন্মাসই হবে তার প্রম সাধন 🛮 ইক্তিয় বিষয়ে যার না আছে আস্ক্রি ৮ স্কল প্রকার কার্য্যে সম্পূর্ণ নিবৃত্তি॥ काग्छ मक्क याँव नाहि पारक गरन। তাহাকেই যোগার্চ দীর্ব জ্বেন ভণে।। জীবীত্মা সংসার হতে আত্মাকে উদ্ধারে। আত্মাকে রন্ধিবে সদা আত্মাই সংসারে॥ যে জন ভাপন আত্মা করিয়াছে জয়। সে আত্মা আত্মার বন্ধ সকলেতে কয়। যে জন আপন আত্মা বশ নাহি করে। সে আত্মা আত্মার শত্রু সর্ব্বজ্ঞান হরে॥ শীত, উষ্ণ, সুথ গুঃথ সব সহ্ করে। गाम जाश्यांन किया गग छान करता॥ মে আত্মা বিজিতাত্মা প্রশাস্ত ভাব ধরে। পরসাত্ম। সহ সেই স্থথে বাস করে॥ জান ও বিজ্ঞানে* চিত্ত পরিতৃপ্ত যার।

জিতে ক্রিয় জ্ঞানশীল নাহিক বিকার॥ মৃত্তিকা স্বৰ্ণে কিন্তা সম্জ্ঞান হয় 🔭 সেই যোগী যোগীরঢ় জানিবে ক্রিচয় ॥ স্থলৎ, মিজ, কিম্বা অরি, উদাসীর। সাধু, অসাধু, ছেয়া, বন্ধু, জ্ঞানহীন॥ এই রূপ সর্ব্ব জীবে সম দরশব। 🔑 তবে তারে যোগারত বলে সর্বজন॥ সর্বাদা নির্জ্জন স্থানে করিয়ে বস্তি। সংযমিয়ে, দেহ মন আশাতে সংহতি॥ প্রকৃথে একাকী চিত্ত করে সমাহিত। পরিগ্রহ শূস্ত হলে যোগে হয় স্থিত॥ 🕈 পুত স্থানে স্ব জ।সন করিরে স্থাপন। অতি, উচ্চ অতি নিয় না হয় থেমন্ধ क्रिन जामन जारभ भरत मुशाखिन। তাহার উপরে দিবে বস্ত্র আচ্ছাদন॥ এক্ষপ আসনে বসি ক্লিভেন্তিয় হয়ে। একাণ্ডা করিয়ে চিত্ত সংযত হইয়ে॥ এইরাপে সমাধিতে হইবে নিযুক্ত। হইবে চিত্তের শুদ্ধি হলে অমুরক্ত ॥ কায় শিরঃ ত্রীবা যোগী রাখিয়ে সর্ল। নাসাগ্র দর্শন করে হইমে অচল। অহ্য দিকে নাহি দেখে শান্ত ভাব ধরে। রাগ, দেষ পরিত্যাগে চিত্ত স্থির করে 🕵 ক্লাত্মাকে প্র<u>কাতি</u> করে হয়ে ভয়হীন।

শ্রীমন্তগবদগীতা।

গুৰুদেৰা ও ভিক্ষান্নে কাটে চিরদিন॥ ভোগস্থধেনকোন আশা নাহি থাকে যার বিষয় ধররাগ্য হেতু চিত্ত শুদ্দি তার॥ মদ্গক চিত্ত হয়ে মৎপরায়ণ। সমাধিতে অবস্থিত যোগাড়্যাসী জন ॥ সংখ্যত চিত্তি হয়ে যোগাড্যাসী জন। আমার স্বরূপ লভে পাইয়া নির্বাণ ॥ পরিমিতাহারী কিম্বা নাহিক আহার। অত্যস্ত নিজালু কিন্বা নাহি নিজা যার ॥৽ যোগ সমাধি না হয় তার শুনহে অর্জুনী যৌগাভ্যাসী মানবের এই সব গুণ॥ নিয়মে আহার যার নির্ধন বিহ্নার। প্রণশজপেতে যার নিয়ত আচার॥ নিয়মে নিদ্ধিত আর নিয়মে জাগ্রহে । সমাধি যোগ তার করে দুঃধ হত॥ সংযত হইয়ে চিত্ত আত্মাতে নিশ্চল। কামনা ভ্যাগিলে যোগী পাবে যোগফল। বাতশুগ্র স্থানে দীপ যেমন নিশ্চল। ধোগশীল জন চিত্ত তেমনি নিশ্চল।। যোগাভ্যাসে যবে চিত্ত উপশম গত। তখন পবিত্র আঝা আআতেই রত। আখানন লাভ করে সেই যোগীজন। ্ৰাপ্ৰাকেই দেখে সেই অতি গুদ্ধ মন। ইন্দ্রিয় অতীত খুর্থে চিত্ত হয় রত।

ষষ্ঠ অধ্যায়।

আত্মরূপ হতে চিত্ত না হয় বিচলিত। তখন হইবে যোগীর সিদ্ধ যোগ মুগব। আসালাভ সর্ব্ধ সার অন্ত তুট্ছ ভাব॥ ছঃসহ ছঃখেও কভু সা হয় বিচৰ্ণ। না থাকে দুঃখের লেশ আত্মাই সঁমল। কামনা সঙ্গল জাত করিবে বুর্জন। यम द्वाता रेखियां कि कति निवर्सन । যোগিজনে করিবেক যোগ আরাধন। शनम निर्दर्शन भूख श्हेरम मञ्जन॥ धीत ভাবে धीरत धोरत वशीख्य मन। আত্মাতে করিয়ে রত চিন্তার বজ্জ 🖥 ॥ इक्षण् यथन यन विषयः धाविज। তথন বিষয় হতে করে প্রত্যাহত ॥ শ্বাথিবেক নিজবশে আপনার মন। অভ্যাদেতে হইবেক আগী সন্মিলন॥ নজ: তস: গুণ আদি করিয়ে বজ্জ ন। ত্রন্মপদ লাভ করে শান্ত যোগিগণ॥ অতিশয় স্থানাভ করয়ে তথ্য। ত্রন্ধ সাক্ষাৎকার হেতু নিম্পাপ খোগিগণ॥ সর্পতি সমান দেখে যোগী সহাজন। সক্তৃতে আহারও আহাতে দর্শন ॥ সকাভূতে আঝার যিনি করেন দর্শন। আমাতেও সর্বাভূত পান নিদর্শন ॥ ু ^ মদৃশ্য না হই আমি কখনও তাহারী

না হয় অনুশ্র সে কখন আমার॥ সকঁণী প্রাণীতে আমি করি অবস্থান। । যে য়োগী অভেদ ভেবে করুয়ে পূজন॥ অবস্থা তাহীর হেকি যেরূপ যখন। আমাতে অভেদ রূপে করে অবস্থান॥ ল্লিজ ত্বপ হঃথে যেন ত্বথ হঃথ হয়। অক্তের (ও) দেরপ যিনি ভাবেন নিশ্চয়॥ সকলের ত্বথ বাঁর বাঞ্নীর হয়। তাহাকেই শ্রেষ্ঠ যোগী সর্বজনে কয়॥ धनक्षत्र जिक्कारमन रह मधुरुपन । অব্যিযোগ তত্ত্ব যাহা কন্ধালে শ্ৰবণ॥ না দেয় সে ভাব কভু স্পায়ী দীর্ঘদ্দশ। কারণ মানব মন সততঃ চঞ্চল॥ হে কৃষ্ণ। মানব মন নিভান্ত চঞ্চল। " **(मर्ट्सिय) करत वर्भ, धरत वर्ह्स्य ॥** সে মন নিগ্রহ করা নিতাস্ত ছফর। বায়ু গতি রোধ করা যেমন ছফর ॥ ভগবান কহিলেন শুনহে ভার্জুন। । ठक्षण गांगव गन खारन मर्ख्यन ॥ নিগ্রহ নিতান্ত হুদর না আছে সন্দেহ। অভ্যাদ বৈরাগ্যে কিন্তু হইবে নিগ্রহ। অসংযত আত্মা পক্ষে এযোগ ছকর। ৃপীভূত চিত্ত হলে অতীব স্কুৰ্ণর॥ অভ্যাস (ও) বৈরাগ্যে তিনি-দেখেন উপায়। আস্থাকে সংযত করে যোগী আখ্যা পায়॥ ধনঞ্জয় জিজ্ঞাদেন হে মধুসুদন্ধ। শ্রহ্মা সত্ত্তিজনাহি করে যোগের প্রাধন ॥ 🖣 অথবা সাধন পথে পতন যাহীর। যোগদিদ্ধি না হলে কি গতি তাঁহার। फ गर्नान कि शिलान खन धन अप्र। সাধনে পতন হলে সব ভ্রপ্ত হয়॥ সকল কর্মাই তার ঈশরে অর্পণ। সে হেতু স্বৰ্গাদি লাভ নয় কদাচন ॥ পুনঃ উপাদনা পথে হইলে পতন। ছিয় ভিয় মেঘমত বিনষ্ট তখন॥ শ্রীক্ষারে কথা গুনি কহেন অর্জুন। আমার সংশয় ভুমি করতে ছেদন 🏲 ভগৰায় কহিলেন খন ধনপ্ৰয়৷ যোগভাষ্ট হইলে ও ছঃখ নাহি হয়॥ ইছ কিন্তা পরলোকে নাশ নাহি হয়। শাস্ত্রমত কর্মিটের হর্গতি না রয়॥ যোগভ্ৰন্ত পুণ্যাত্মাও প্ৰাপ্য লোক পায়। বছবর্য অতি হুথে তথায় কাটায়॥ পবিত্র ধনীর গৃহে পুনজ গা হয়। সদাচার নিষ্ঠকুলে সেই জন্ম হয় ॥ ष्मथेवा धनीत्र शृंदश् ना लट्स जनम्। ব্ৰহ্মবিন্তাশালী গৃহে লভমে জনম। জাগতে তুল্ ভাত্য এরপ জনম।

পবিত্র পুরুতে ভিয় না হয় জনম ॥ পূর্ণের সংস্কারে তারা জ্ঞান লাভ করে। মুজির নিমিত তারা শছ যুত্র করে॥ যোগজুঁই কাজি यो ने ना করে যতন। তবুও সংসার হেতু যোগে তাঁর মন ॥ সুভাবতঃ যোগে তার প্রবৃত্তি হইবে। তত্ত্বিজ্ঞান্ত হয়ে সেই যোগে মন দিবে॥ তাহাতে অধিক ফল লাভ হয় তার। কর্ম ফলে এই লাভ না ইয় তাহার॥ জ্বনো জন্মে ধে পুরুষ যোগ লাভ করে 🗸 লেই পুণ্য কলে জন্ম পুনু: লাভ করে॥ এইরূপ সাধন খার বহুহার হয় ৄ তি নিই লভেন মুক্তি নাছিক সংশয়॥ তত্তবেক্তা যোগী হয় তপন্থীর শ্রেষ্ঠ 🗠 क्कानिशन जारभका ७ (याशिशन देखर्छ ॥ কর্মিগণ অপেকা ও তাঁহারা প্রধান। অতএব হে অর্জুন যোগে দাও মন॥ **ट्या**शिदमत ग्रद्धा विनि जागाटजर त्रज। কেবল মাত্র আমারই আরাধনা রত ॥ তিনি হন সকণের পর্ম প্রধান। অতএব এবে যোগ কর অন্নষ্ঠান॥

সপ্তম অধ্যায়।

জানি আমি তব চিত্ত আমাতেই রত। আমার আছ তুমি হয়ে শরণাগত। অতএব এই যোগে দাও তব মন। যে যোগ পুর্ব্বেডে তুমি করিলে শ্রবণ॥ क्षेट्रे (योश्य युद्य स्ट्रेंदिक गम। কিবাপে জানিবে মোরে করহ প্রবণ॥ কিরপ করিষে কাজ হইবে সাধন। ্কিরূপে কুরিবে তুসি জ্ঞান আরাধন॥ 🧪 দেই সব জ্ঞান তুমি হইলে বিদিত 🏲 কিছুই পাকিবে তব নাহি জ্বারিদিত॥ সহল্ল গধ্যে একজন সে জ্ঞান পায়। সকলের পুণ্য কিছু সমান না হয়। সেরপ সহজ্র মধ্যে কেহু মোরে পায়। তবে সে আমার তত্ত্ জানিবারে পায়। পৃথিবী, আকাশ, ডেজ, জল, বায়, মন। অহস্কার বৃদ্ধি আর এই অষ্ট গণ।। প্রকৃতির এই হয় অষ্টবিধ রূপ। ইহারা প্রকৃতি মম অপরা শ্বরূপ॥ জীবরূপ প্রকৃতি জগৎ ভিতরে। শ্বপরা প্রকৃতি হতে ভিন্ন নাম ধরে॥

জীবরূপ একতি পরা নাম হয়। জীবদ্ধীপে সংসারেতে পরিব্যাপ্ত হয়॥ সকল প্রাণীর জন্ম প্রকৃতি চুইতে। প্রালয় উৎপশ্তি সর্ব হয় আমা হতে॥ আমা হতে কোন বস্তু পৃথক না রয়।, মূৰি সৰ হেত্ৰে যেন গ্ৰাথিত থাকয়॥ সকল পদার্খ মোরে করয়ে ধারণ। সকল স্থানেতে আমি করি অধিষ্ঠান॥ জল মধ্যে রস আমি চক্র সুর্য্যে তেজ। বেদের গ্রেণব আমি আকাশের শন্ধী। 🛧 পূক্ষধের তেজরূপে আয়ি বিস্তমান। আমি হই তাহাদের স্বার প্রধান 🛚 মমুখু-পৌক্ষ তেজে করে সবঁ কাজ। উভানেই ধূলুর রাখে সংসারের মাঝু । পৃথিবীতে ব্যাপ্ত আমি আগুণের তেজ। সর্ব্বজীবে প্রাণ বায়ু তপস্বীর তেজ। সর্বভূতে সনাতন সকলের বীজ। বুদ্ধিনধ্যে প্রজ্ঞা আমি তেজস্বীর তেজ ॥ অ প্রাপ্ত বিষয়ে আশা কাম হতে হয়। প্রাপ্ত ধনে রক্ষা হলে আসক্তি জনায়। এই ছুই হীন হয় ষেই শক্তি বলে। আমি হই সেই শক্তি জানিবে সকলে! প্রাণীর কামনা পুনঃ আমা হতে হয়। এইরূপ সকলেই আমার অগ্রেয়।

সপ্তাম অধ্যায় !

স্ত্ব রজঃ তমঃ সহ বত বস্তু আছে। সে সকল আমা হতে উৎপদ্ধ হঙ্গছে॥ আমি কিন্তু তাহাদের না হই অধীর। তারাই আমার আছে অপ্রিত অধীক। এ তিন গুণেতে জগৎ হয়েছে মেছিত। জানিব অব্যয় আমি এ সৰ অকীত ॥ •* এ তিন মিপ্রিত মায়া অত্যন্ত হত্তর। না পারে করিতে কেহ অতিক্রম তার ॥ জাসাব শরণ শুরে ভজনা যে করে। ছুষ্টির মায়া হতে উত্তীর্ণ হতে পারে॥ নরাধ্য মৃঢ় যারা পাপ কর্মে রত। মায়াতে খাদের জীন হইয়াছে হত॥ দক্তে ও দর্শেতে যাবা অস্কুর ভাব ধরী। তাহারা আমাব কভু ভল্পনা না করে॥ রোগ দাবা অভিভূত যে মানবগণ। আত্মজান লভিবারে যাহার মনন॥ ইহ পরকাণ স্থ্য যাহার কামনা। তাবা আর জানী ধনে করে মম ভজনা॥ ध नक्ष एक मरश कानीहे क्षश्न। क्यांनी गम थिय रूद्य कदत जात्राधन ॥ জ্ঞানীজন আমাতেই সদা হয় রত। না আছে কামনা অহা কামাতেই রত। करमा करमा ज्ञान (शरम क्ञान वान् रूरम। সমস্ত জগৎ যিশি অভেদ দেপয়ে॥

তাদৃশ মহাঝা জন মহাজ্ঞানী হয়॥ আর্মার প্লরূপ,পান তাহারা নিশ্চয়॥ বিষয় কাঁমনা হয় প্রবঁশ য়ান। বিবেক নাঁশক জ্ঞান হয়য়ে তখন। নিজ নিজ বাসনায় নিয়ম আচরে। হতে উপবাস আদি কত ব্রত করে॥ এইরূপে তারা দব শোরে নাহি চায়। অন্ত অন্ত দেবতারে তাহারা পূজ্য ॥ । সকাম মানবগণ ভক্তি যুক্ত হয়ে। নিজ আশা লভিবারে যে সূর্ত্তি পূজ্বেশ किछग्रामी ज्ञत्य जामि-तम मूर्खि शृक्तन। ভক্তিযুক্ত করি আমি তাহাদের মনে। প্রাদাশযুক্ত হয়ে সব যেই ভক্তগণ। যে সকল দেবগুর্ত্তি করয়ে পুজনু 🗗 ` তাদের সঞ্চল আমি করমে পুর্ব। অন্তর্যামী বলে আমি জানি সে কারণ ॥ অগ্নবুদ্ধি ব্যক্তিগণ আগ্নাধনা করে। य कल नजरम जोत्री स्वत श्रुका करत ॥ সে ফল বিনাশ পায় নাহিক সংশয়। (प्रविक्ति। करत त्योक (प्रवत्योक शोश। কিন্তু আমার ভক্ত যে মানবগণ। পরিণামে লাভ করে আমাকে তথন 🛚 ्रभूष्व जागादक जवाय ना जारन। সর্বেণিকৃষ্ট আমাকেও লংছি তারা সংযো

না জেনে আমার স্বরূপ অব্যক্ত আমায়। ব্যক্তি ভাবে আমাকে সন্ধাই জারা গায়॥ সকলের কাচ্ছে আমি না হই প্রকুশ। যোগমায়া আচ্ছাদনে না হয় প্রকাশ। জনম রহিত মোরে না চিনিতে পারে। পরমেশ্বর বলে কভু নাহি জানে মোরে। ত্রিকালজ্ঞ হই আমি সমস্ত বিদিত। অভক্ত মানবুগণ নহে অবগত॥ ् हर प्यर्ज्न , कीव (यह पार वाष्ठ करत। हैक्हा, दिय जानि তারে कार्या त्रज करता। শীত, উষ্ণ, সুধা, তৃষ্ণা সকলি জনায় ৷ न्नथ, ह्रश्रु अर्डिमात्न स्माहावद्य ह्य ॥ পুণ্য কর্ম্ম অন্তর্ভানে যে মানবগণ। 🦘 निर्देशका भीर्थ ताभि कत्रस्य श्रीमन ॥ षम्य गार विनिष् क तम मानवश्व। আগাকেই একমনে করয়ে অর্জন 🖟 জরামৃত্যু নিবারণে যে মানব গণ। আমাকে আশ্রম করে, করয়ে সাধন॥ ত্রপাজ্ঞান লাভ করি সে মানবগণ। আত্মা ও সাধন জ্ঞান অবগত হন॥ অধিভূত অধিদৈব অধিযক্ত আর। এইরূপে করে থেই সাধন আসার॥ মৃত্যুকাল যবে তার উপস্থিত হয়। ক্ষথন ও আৰাকে সে অবগত হয়॥

অফ্লীয় অধ্যায়।

अर्জ्भ वर्णन अर्व रह मध्यमन । ব্রগা আধ্যাপা ও কর্মা কি করাও প্রবণ ॥ অধিভূত অধিদেব অধিযক্ত আর। কিরূপ ইহারা সব সাধনা কি প্রকার॥ অধিযক্ত চিন্তা যেই কি প্রাকার হয়। দেহমধ্যে বাহিরে কিম্বা অব্যস্থিত হয়। স্থিরচিত প্রদেষর মরণ সময়। কিরূপে তোমার জ্ঞান লঁভে সে সময়॥ 📱 ভগবান কহিলেন গুনহে অৰ্জ্জুন 🕯 ত্রদাহিন জগতের মূলের কারণ॥ অবিনাশী পর্মব্যাপী সেই একা হয়। সকলের মূল তিনি তিনিই অক্ষা। দেহীর স্বভাব লোকে অধ্যাত্ম বাথানৈ। **७७कत यर्जिं कर्या वरन जारम** ॥ শস্যাদির উৎপত্তি হয় যে কারণ। े পীড়াদির শাস্তি হয় যজের কারণ॥ প্রোণিগণ যে ভাবের অধিকৃত হয। ধ্বংসশীল সেই ভাবে অধিভূত কয় ii , নশ্বর পদার্থগণে অধিভূত বলে।

💂 🔭 র্মনের পুরুষেরে অধিদৈর বলে ॥

সর্ব দেবতার যেই অধিপতি হয়।

অষ্টম অধ্যায়।

অধিষ্ঠাত্ৰী দেবতা বলি অধিদৈব কয়॥ বিষ্ণুর স্বরূপ যজ্ঞ অধিযক্তা,খ্যাতা। অধিযক্ত পুরুষই নরদেহে স্থিত ॥ 🎤 তাহাই সানবে করে যজে ঐবর্তন 🕨 যজ্ঞ ফল দেয় তাহা পুরুষ প্রধান ॥ মরণ সময়ে যে মম চিন্তা করে। আমার স্বরূপ লাভ সেইজন করে। সেইক্ষণ মম জ্ঞান উদয় তথন। ইহাতে সংশয় ভুমি না কর কখন॥ বেরূপ উদিত চিন্তা মরণ সময়। সেইরূপ জ্ঞান আর্থ্যি উপস্থিত হয়॥ অতএব সারাদিন"মম ধাান কর। যুদ্ধেতে প্রবৃত্ত হও বুদ্ধি স্থির কর 📭 ৰনেবিজি কর সব আমাতে প্রপ্রণ। অবগু পাইবে মোরে সংশয় অকারণ। मात्रापिन य्येष्टे कदत्र भन्नमार्थ हिखन। এরপ সমাধি যোগে স্থির চিত্ত হন॥ স্থির চিত্ত হয়ে তারা দিব্য লোকে যায়। ইহাতে তুমিহে অর্জুন না কর সংশয়॥ मर्क्छ जनामि यिष्टे श्रुक्य श्रिधान । স্থ গা হতে স্থা তিনি সকল প্ৰধান॥ সবার বিধাতা তিনি অচিন্ত্য পর্মণ। প্রকৃতি অতীত তিনি আদিত্য স্বরূপ। মৃত্যুকালে মন মার একাগ্রতা লভে।

শ্ৰীসম্ভগবদগুীতা ৷

€b

পর্মান্তা ভৈবে যেই যোগধল লভে॥ ভক্তিযুক্ত যোগবলে হয়ে বলীয়ান 🗈 জামধ্যে প্রাণ বায়ু,করয়ে রক্ষণ॥ ममार्थि करन मिरा श्रुक्य थीन। পরমাত্মা চিন্তা হয় সবার প্রধান ॥ বেদেতে পিণ্ডিভ সব যে মানবগণ। **অক্ষ**র পুরুষ কথা করায়ে জ্ঞাপন । নিম্পৃহ সন্ন্যাসিগণ থাঁরে ল্বাভ করে। সাধক পাবার তরে ব্রন্ধচর্য্যা ধরে॥ সংক্ষেপে ভাঁহার কথা করিব বর্ণ। महावीत धनक्षत्र एक क्रिया मन ॥ हे जिता नकल विनि जर्नेक्ष कूट्य । मन्दिक निकक्ष बांदिश अपन्न जिज्दत्र॥ ध्योगवायुर्क्कारमध्य कतिय शापन । এরপে আজু সমাধি করেন সাধন॥ একাক্ষর ওঁকার করে উচ্চারণ। এইরূপে আসাকে যে কর্য়ে চিন্তন॥ দৈহান্ত কালে তার পরমা গতি হয়। নিশ্চয় জানিবে অর্জুন না কর সংশয়॥ স্থিরচিত্ত হয়ে থেই আমারে চিন্তর। সমাহিত চিত্ত সেই আমাকেই পায়॥ মম উপাসক সব লভিয়ে আমায়। শা লয় জনম তারা সর্ব ছঃথালয়॥ সৰ মহাত্মাগণ সিদ্ধি মুক্তি পায় 🤎

হে অর্জুন এতে তুমি না করু সংশয় 🛭 যত প্রাণী আছে এই পৃথিবী ভিত্ত আব্রদ্ধ সকল লেখকে জন্মৈ বছবার ॥ ব্ৰন্ধলোক লভিবেও নীহিক নিৰ্পীর। অবগ্র তাহার হবে জন্ম বার্থার॥ মম উপাদৃক কিন্তু লভিলে আহ্বার। না হয় জনম তার কভূ পুনরায়॥ চতুর্গ সহস্রেতে ব্রহ্মার একদিন। সেরপ সহজে হয় ত্রকার রাতিদিন ॥ के हेक्क भिवानिभि थे किरल विविज् । দিবা রাত্র জ্ঞান তাঁর নহে অবিদিত 🖦 ব্ৰহ্মার দিবস যথ্নে সমাগত হয়। **অব্যক্ত হইতে ২্যক্ত চরাচর হ**য় ॥ ত্রহার রাতি যবে পুনঃ হয় উদ্বয়। ব্যক্ত চরাচর পুনঃ শীল্ন পায় বর ॥ ত্রন্ধ দিবাগমে যাঃ। উৎপন্ন হয়। রাত্রি সমাগণে তারা পুনঃ লয় হয়॥ ইন্দ্রিয় গোচর নম্ম অব্যক্ত অতীত। সর্ব্ব হতে ভিন্ন থাকে পদার্থ যে নিত্য ॥ সেই সত্বা কথনও না হয় সিশ্রিত। না হয় বিনাশ তার স্বাকার হিত ॥ প্রতি ইহাকেই শ্রেষ্ঠ গতি খলে। এইরূপ ইহা**দে**র ভাবয়ে সকলে॥ ষ্টে সন্থারপ ভাব বে মানব পায়।

তাহার জনম কভু নহে পুনরায়॥ मर्काट्यर्क्ष शान, त्यरे गग धाम रुप्र। পরশ্বা হলে লাভ তথা স্থিতি হয়॥ এক্সনে উক্ত হলে সে পুরুষ পায়। সবার আশ্রয় তি^{নি} জগৎ ব্যাপয়॥ 'য়েই থোকে যোগিগণ করিলে গমন। না হয় আর্তি পুনঃকরিব কীর্ত্তন॥ ব্ৰহ্ম উপাসনা শীল যে মান্ব হয়। দেবযান পথে ভ্ৰমি ব্ৰহ্মলাভ হয় ॥ অগ্নি দিন শুক্লপক্ষ উত্তরায়ণ। একে একে সর্বলোকে করমে ভ্রমণ। व्यवरनारम हक्त स्या जीति र्लाहक गांत्र। এরপে ব্রুগেতে তার দাকাৎকার হয়॥ পুনঃ ক্র্ত্ত্তিতা যে মানব হুয় । সংসারে আর্ত্তি তার পুন: লাভ হয়॥ ধুমরাত্রি কৃষ্ণপক্ষ দক্ষিণায়ন। এইসব লোকে সেই করে **অবস্থান** 🛚 সে স্থানে থাকিয়া কণ্মী 🚃 লোক পায় কর্মা ফল ভুঞ্জি তথা পুনর্জনা হয়॥ শুক্ল কুণ্ণ তুই পক্ষ জগতে বিদিত। 🕙 প্রথমে আবৃত্তি নাই ক্বফেতে উদিত॥ শুক্রমার্গ দেবধান জ্ঞানালোকময়। ্ৰপিতৃথান মাৰ্গ কিন্তু তমে। ময় হয়॥ জ্ঞানের বিকাশ হেতু জীব্ল মুক্তি পাক্ষ

ন্ধ্য অধ্যায়।

আব্দুজান নাহি হলে পুনর্জন হয়।
হে অর্জ্বন ছই পণ হয়ে অবগত।
নির্দ্যোহ যোগীর মত ব্লোগে হও কুট।
বৈদ ষজ্ঞ তপদ্যায় দানে পুণ্য হয়।
ধানি নিষ্ঠ যোগিগণ এ সব না চায়।
উৎক্তি এই স্থান তাঁরা প্রাপ্ত হন।
লভিয়া এ পদ তাঁরা মোক্ষ প্রাপ্ত হন।

নব্ম অধ্যায়।

ভগবান কহিলেন শুনহে অর্জুন।
ভানি আমি তুমি হও হিংসা হৈ ধহীন॥
তাই এই জ্ঞান যোগ করিম বর্ণন।
ভানিলে ঘুটিবে তব সংসার বন্ধন॥
সকল বিভার শ্রেষ্ঠ এই আত্মজ্ঞান।
না জানে এ জ্ঞান কেহ সবার প্রধান॥
সবার উত্তম ইহা পবিত্র অত্যন্ত॥
প্রথাণে প্রত্যক্ষ সিদ্ধ সর্ব্ব ধর্মায়ত॥
প্রথ সাধ্য এই যোগে অক্ষর ফল হয়।
না কর সন্দেহ এতে শুনহে চুর্জ্জন॥
আত্মজ্ঞান ধর্মে বার শ্রদ্ধা নাহি হয়।
আত্মিকে না লভে তারা সংসারেতে ধার॥

মৃত্যু সমাক্ষীর্ণ পথে করয়ে ভ্রমণ। জদীে জয়ো করে শেই সংসার গসন॥ অব্যক্ত রূপে ব্যক্ত আঁমি জুগৎ ভিতর। সর্বাণী আছে এই জামার ভিতর ॥ সর্বাভূত হতে কিন্তু নিপ্ত হই আমি। নিঃসঙ্গ দাতীত তামি নিশ্চয় জেন তুমি 🛭 অডুত প্রভাব মম করহ দর্শন। সর্বভূতে স্থামি নাহি করি অবহান ॥ মম আত্মা দক্তিতে করয়ে ধারণ। এরপে তাদের করি আমিই পালর। দৰ্শবিগ বাৰু যেন আকাশেই স্থিত। সর্ব প্রাণী সেই রূপ জ্বামাতেই, স্থিত। थ्रगृद्धा मगस थानी यह थार्थ इह। সৃষ্টিকালে,আমা হতে পুনঃ বাহির্দ॥ মাগ্নাকপ প্রকৃতিকে করিয়া অপ্রিয়। আকাশাদি ভূত সব উৎপন্ন হয়॥ কৰ্মেতে আদক্তি হীন হয়ে উদাদীন। शृष्टिं कार्या आित इंहे वक्षन विहीन ॥ প্রকৃতিতে আমি মবে হই অধিষ্ঠান। চরাচর বিশ হয় উৎপন্ন তখন ▮ সর্বভূত মহেশ্বর স্বরূপ আমার। অবিবেকী ব্যক্তিগণ না জানে প্রকার॥ পরমার্থ তত্ত্ব মন নাহি আথে তারা। আমার মহয় কপে অবজা করে তারা,

অগ্নিহোত্র কর্ম্ম তার ফল হীন হয় 🛦 আ্মায় অবজ্ঞা হেতু জ্ঞানিহীন হয়। অবিবেকী তারা সবলাক্ষ্যু সমর্থী। অস্থর প্রকৃতি ধরে অতি মোহবারী॥ ভোজন আহার, আর পরস হ্রণ। হিংসাদি আন্থরী ভাব করয়ে ধারণ 🕇 ভগবন্তক্তি পুনঃ যাহাদের হয়। দৈবী প্রকৃতি ভারা করমে আশ্রম। ুঁশস, দম, দমা, প্রান্ধা, ভাতি যুক্ত হয়। ্ঞক্সনে ঈশ্বর জ্ঞানে আসাকে চিস্কার ॥ मकन शागीत दूरे जागिरे जाअंग । অবিনাশী জেনে তারা আমাকে পূজ্য॥ मर्द्धाना जागात नाग करत मर्कीर्जन। দৃঢ়ব্ৰত গল সহ আমার পূঞ্বীনী॥ निष्ठी हिट्छ উপাদনা করে ষেই জন। ,সে জনু আমার ভক্ত থাকে সর্বকণ। জ্ঞানরপে দজ্ঞে কেহ করে উপাসন। কারও বা মম সনে অভিন্ন চিন্তন ॥ কেহুবা,আগাকে স্বতন্ত্র ভাবে মনে। ভিন্ন লোকে ভিন্ন ভাবে থাকে আরাধনে॥ আমি ক্রতু, আমি যজ্ঞ, আমি স্বধা 🕸 হই। আমি ঔষ্ট্র, আমি মন্ত্র, ঈশর আমি হই 🛚 🕆

ক্তু — পীনিধীমাদি; প্রধা—পিত্রানাদিদর।

আঞ্জী । আমি, অমি আমি, আমিই হবন ।। এ**ই**রপে জানে মারে সর্ব সাধারণ॥ জগতের পিতা, মাতা, আর বিধাতা। चागिर अंकात रहे, हजूर्खम माठा॥ শুভাশুভ কর্মফল আমা হতে হয়। পৰিতা 📭 জেয় আমি পিতামহ কয়॥ গতি, ভর্তা প্রভু আমি আমি বাসস্থান। শুভাশুভ দ্রষ্টা আমি রক্ষক প্রধান । হিতকারী স্ষ্টিকর্তা আর্থিই প্রায়। আধার ও আধের আমি, আমিই অব্যুখ। হে অৰ্জুন! আমি আছি আদিত্য রূপ দরি। জল আকর্ষণে আমি জ্বলর্ষ্টি কুরি॥ আর্মিই অমৃত হই মৃত্যুর স্বর্দিপ। ्ग॰ 🛊 ଓ प्राग॰ । जागि गर्वताश 🛚 যে সৰ মনিবগণ বেদেতে নিপুণ। কাম্য যজ্ঞাদি কর্ম কবে অমুষ্ঠান॥ মম পূজা কবে তারা সোমপানে রত। স্বর্থে কামনা কবি স্বর্গ স্থে রুত ॥ স্বৰ্গস্থথ ভোগে পুণ্যক্ষয় হলে। পুনর্কাব জন্ম হবে এই মর্ত্তাম্বনে॥ স্বর্ণের কামনা হেতু যজ্ঞ অন্তর্ভানে। সংসারেতে যাতায়াত ভাবপ্ত বিধানে॥

[■] व्यक्ति—पूष्ट ; द्यन—हारमद्र ममग्र गरि। किছ् व्यपिष्ट मिश्वा ६४।

हिम९—पूच, पृष्ट ; व्यम९—प्रकः, व्यपृष्ट ।

নবম অধ্যায়।

একমনে চিন্তা হেতু যেই মোরে পায়। একমাত্র নিষ্ঠাহেতু যোগ ক্ষেম পীয়॥ অপ্রাপ্য বন্ধুর প্রাপ্তি যোগ শাসু,হয়। প্ৰাপ্তধন বক্ষা হলে কেম শাম হয়॥ ভক্তি শ্রদারক্ত হবে **অন্ত দেবে পুজে**। তাঁহাবাই অজ্ঞানে আসাকেই পুজে ॥ সর্বায়জে ভোক্তা আমি সর্বকলদাতা। জানিতে না পারে নোরে সর্ব্ধ কর্ম্ম কর্ত্তা॥ ুসেই জন্ত সংসারেতে পুনঃ জন্ম হয়। •ইহাতে আঁমার কোন দোষ নাহি হ**ন**। ভেদ বুদ্ধি হেতু,তাব নোক্ষ নাহি হয়। স্বর্গেকে গ্রান স্থাব প্রঃ চ্যুতি হয়। সর্বাদের মধ্যে যেই আমাকেই দেৱে। অক্তদেবে পুজিলেও আমাকেই ভাবে॥ তাহাদের মোক্ষলাভ ঘটিবে নিশ্চয়। এক মনে তারা কেবল আমাকে চিন্তয় 🛚 যে দেবতা পুজে লোক জীবন সময়। দে দেবতা লভে দেই অন্তিম সময়॥ পিতৃগণে পুজিলে পিতৃলোক পায়। ভূতগণে পূজিলে ভূতলোক পায়॥ সম পূজা করে যেই আমাকে শভয়। মোক্ষ লাভ হয় তাব জন্ম নাহি হয়॥ পত্র, পুষ্প, ফল, জল, যে কিছু অর্পণ্র 🛶 ক্রি সহ দিলে মোবে করি সে গ্রহণ।

যা কিছু কর্মা করে ভোজন, হোম, দান। তপস্তা শক্ষি কয় আসাতে অৰ্পণ॥ এর । পাধনা হলে জীব মৃত্তি পার। শুক্তাশুভ কীর্মে তার বন্ধন না হয়। ভূমিও এরপে করু সন্যাস গ্রহণ। স্বৈ কৰা কর ভুগি আসাতে অর্পণ। কৰ্ম্ম বন্ধন হতে তব মুক্তি পাভ হবে। অবশেষে নিশ্চয় তুমি আমাকে পাইবে॥ সকল জীবের পক্ষে এক ভাব শোর 🕨 প্রিয় বা অপ্রিয় কিছু না আছে আমার। ভক্তিদহ করে থেই আনার ভজনা। আমাতে স্থিত সেই জীমি তার ভাবনা॥ শিতীত্তই ছুরাচাব কেহ যদি হয়। একচিত্তে যদি তবু আসাতে ভুজরী। তবু তারে সাধু বলে জানিবে নিশ্চর। কারণ তাহার যত্ন অতি সাধু হয ॥ শীঘই ধর্মাত্মা হয় সেই মহাজন। নিত্য শান্তি করে লাভ সেই সাধু জন ॥ मग ज्ङ कथनरे विनाम ना भाग। निःमरमर्ट, धहेक्राथ, कानर जागाप्त ॥ भाभ-त्यांनि काङ मद त्म**ई की**रशब। স্ত্রীধ্যোক, বৈশ্বাদি, আর শুদ্র যতগণ ॥ ,ভক্তি হেতু তাহাদের পর্য গতি হয়। বে অর্ন। ইহা তুসি লানিহ নিগল ॥

বর্ণের প্রধান জাতি উত্তম ব্রান্ধণ ।

নত্ত পর জাতি ক্ষত্রির ভক্তগণ্ড ॥

নত্তি হেতু তারা শ্রেষ্ঠ গতি পারে।

সর্বলোক জানে ইহা অব্যর্গ জানিবে॥

অত এব তুমি যদি শ্রেম গতি চাও।

নিংসলেহ তুমি তবে মম ভক্ত হও॥

তর্তি সহ আমার কর আরাধন ॥

মদ্যত চিক্ত হয়ে জামাতে হও ভক্ত।

প্রভা পরায়ণ হয়ে আমা অহরক ॥

ভক্তিভাবে মোরে তুমি কর নমন্ধার দ

আমার শরণাপত তুমি হও এইবার॥

নিজ অতীংকরণ কর আমাতে অপ্র্রণ।

নিশ্চর হইবে মৃক্তি তোমান্ধ এক্ষণ॥

দশম অধ্যায়।

ভগবান কহিলেন শুনহে অর্জ্ব।
প্রায়াশুন তুমি আমার বচন॥
তোমার মঙ্গল হেতু করিব বর্ণন।
শুনিলে মঙ্গল তব ঘটিনে এখন॥
দেবতা মইবি কিশা যত মুনিগণ।
আমার প্রভাব কেহ না জানে কখন॥

আমীর প্রভাব হয় স্বার প্রধান। मकिटलातू कामि इहे कामि। अ कात्रवा॥ জনাহীদ আদিহীন সর্বা লোকেশর। अजार शे व्यक्तभादक विशेष जारनन विशेष ॥ দর্কণাপ হতে তার মৃক্তি লাভ হয়। মোহ বা অজ্ঞান তাঁর কিছু নাহি রয়॥ বৃদ্ধি, জ্ঞান, অসগোহ*, ক্ষমা; সভ্য, দম। ত্বথ, তৃঃথ, ভয়াভয়, অহিংদা, ও সম ॥ সাস্য, তুষ্টি, তপ, দান, মান, অপমানু ৷ উত্তব, প্রশন্ন, আদি আমিই নিদান ॥ ভৃগু আদি সপ্ত ঋযি যুক্ত মুনিগণ। আমার প্রভাবে তাঁদের জীবনগারণ ॥ আ্ফার আনেশ মত দব স্প্রিইয়। সর্কলোক প্রজা সব সেরূপে জনার। বিভূতি ও যোগ মম জানে বেই জন। যোগযুক্ত হয়ে করে সমাক্ দর্শন॥ সর্ব্ধ জগতের আমি উৎপত্তি কারণ। আ্যা হতে সকলের বুদ্ধি আর জ্ঞান। ध गव इहेर अ छा छ विदक्ती रम सन्। **८थ्रम शूर्वक कामाम करत कात्राधन** ॥ মন প্রাণ যাঁথা করে আমাতে অর্পণ।

अमरणाञ्च
 उपाद्ध
 अभरणाञ्च
 उपाद्ध
 अभरणाञ्च
 अभर

স্থলাভ করে তারা আমার কীর্ত্ন ॥ এক্ষপ একাগ্র চিত্তে আ্নাক্তে যে ভ্রে । বুদ্ধিযোগে আসাকে পাইবে সহফুল। সে সব ভজের প্রতি আঞ্চিদ্যা বুরি। জ্ঞানেতে অজ্ঞাননাশ তাহাদের করি॥ অৰ্জুন বলেন ভবে শুন বাস্থ্যের। পরব্রহ্ম ও পরাশ্রয় তুমি আদি দেব। ভূমি অঙ্গ, ভূমি বিভু, পরম পবিত্র। ুশাখত অনাদি তুমি স্বাকার মিত্ত।। হদবর্ষি নারদ আদি ভৃগু ঋষিগণ। অসিত, দেবল, ক্যাস, আদি মুনিগণী সকলেই করে তব বিভূতি কীর্ত্তন। এরপে সকলে তোমা করেছে বর্ণব্দ ॥ ভোগার নিকট ইহা ভনিমু এখন। সমস্তই সত্য ৰলে জানিমু এখন ॥ ভোমার প্রভাব নহে জ্ঞাত স্বাকার। দেৰ বা দানবগণ না জানে তোমার॥ পুৰুযোত্ত্য তুমি দেব ভূতভাবন। দেব দেব জ্বগৎপতে, পতিত্তপাৰন॥ অন্ত দারা ভূমি কভু না হও বিদিত। আপন আত্মার দারা আপনি বিদিত্॥ সর্বব্যাপী তুমি, অনস্ত বিভূতি। আ্যায় বলহঁ সব করিয়ে বিশুতি 🛭 🚤 🍂 ভাবে ত্যোমায় চিন্তা করিব এখন। 📜

ত্বৈ ভাব জাত হব বল ভগবন ॥ বৈশিগ ঔ বিভূতি তথ বল পুনরায়। ভনিষ্ণে বচনামৃত্ব তৃথি নাহি হয় ॥ শ্রীকৃষ্ণ বলেন'তর্বে গুল পর্বস্তপ। অনস্ত অপাব মমু বিভূতি অগীম॥ প্রধান বিভূতি স্ব করিব বর্ণন। বিন্তারি বলিব সব কবছ প্রবণ ॥ সৰ্বভূতে স্থিতি মম, সক্ৰেৰ আদি। উৎপত্তি, বিনাশ, স্থিতি, আমি অনাদি ॥ আদিত্য মধ্যে বিষ্ণু, আমি আকাশে ভাস্কৰ। মক্লতে মবীচ, তারা সাঁবে স্থাক্ব॥ **८ यम भएधा जाम (यम, हेट्स (पर्वगरन)** প্রীণীব চৈতক্ত আমি, মন ইক্রিয়ুগণে ॥ একাদশ ক্জুমধ্যে আমিই শক্ষৰ। यक तक गर्धा हहे जागिहे धन्धनः॥ বস্থ মধ্যে অগি আমি, পর্বতে স্থমেক। সৰ্ব্য বস্তু মধ্যে হই স্বাকাৰ গুক্ । পুরোহিত মধ্যে হই আর্নি বৃহত্পতি। সেনানীর মধ্যে আমি স্বন্ধ সেনাপতি॥ **জলাশ**য় মধ্যে যথা আছুয়ে সাগর। আমার বিভূতি কীর্তি ব্যক্ত চরচির॥ মহষি মধ্যে ভৃত্ত আমি, শুবের ঔকার। 🗝জ মধ্যে জপরাপ, হিমাচল স্থাব্র ॥

दमविषे भरशा नौत्रम, बृदक्षत्र, व्यक्षेष । পিদ্ধ ও গৃন্ধর্বের, কপিল চিত্ররথ ॥ সমূদ্র মন্থনে যথা উচ্চৈঃপ্রবা আমি,। হস্তি সধ্যে ঐবাবত মানব শ্রেষ্ঠ আমি॥ हैटा त वर्षे वांगि, क्रांगर्धस् त्रार्थ। কামনার কাম আমি, বাস্থকি স্বরূপ 👢 🗸 নাগ মধ্যে অনন্ত, আমি, বরুণ জলচর। পিতৃগণেৰ অধ্যমী আমি, শুন নৃপৰর ॥ क्षियम काती मत्था आगि रहे यमक्रथ। শৈত্য যথ্যে প্রহলাদ আমি, কাল স্বরূপ ॥ চতুম্পদ মধ্যে আমি সিংহের স্বরূপ। 🦈 বিহুঙ্গরারে মধ্যেশ্যক্রড় যেকপ ॥ বেগগামী মধ্যে হই আমিই প্ৰন ' শক্তধ†वी गर्धा श्रे त्रांचव द्यमन ॥ মৎস্থাপ মধ্যে মকর নাম ধরি। নদী সব মধ্যে হই আমি গঙ্গাবারি। স্ট বন্তর আমি হই আদি, স্থিতি, শ্রম। विनात व्यथाय विना, क्यांनर निक्रम। তার্কিক পুরুষ মধ্যে তর্কের স্বরূপ। অক্ষব সমূহ মধ্যে অকারে স্বরূপ ॥ স্থাসের দৃশ্ আমি অক্ষয় কাল্রপ। कर्यम्बनाजा गरधा भेषत् अक्षा मश्हर्शियात नैया जामि मृश्राक्षण। करिया कलान भरता भन्न सन्भा

কী্ত্রি, জ্রী, বাক্, স্বৃত্তি, মেধা, ক্ষমা, ধৃতি। ধর্ম্ম সপ্ত গত্নী এই করিম বিবৃতি॥ ं त्वम श्रेष्ठ भरशा भाग, जाभिष्टे अधान। **इन्सं कार्या भीयखी, गाम फ**डारायन ॥ ঋতু মধ্যে বসস্ত আুমি, দ্যুত রূপ ছল। বিশ্বয়ীর জয় আমি, তেজস্বীর বল।। বণিকের ব্যবসা আমি সান্তিকের সত্ত। वाञ्चरमय क्रदश इट यामदवद् गरुष ॥ পা গুৰগণের মধ্যে আমি ধুরুঞ্জয়। भूनिभर्धा द्यारात्र कवि ७क रम्। দমনের দওরপ, ছায়ক্প নীতি। গুঞ্ বিষয়ে আগার সৌন হয়ুরীতি॥ জ্ঞানিগিণে জ্ঞান আমি, প্রাণীর চেতন। आगा ছार्जा कतांहरत नाहि वस दहन ॥ বিভূতির সীমা নাই, শুন পরস্তপ। या किছू रिलिस् कांगि नकलि नश्टकशे॥ ঐখর্য্য, বল, আর যাহা লক্ষীযুক্ত। আমার শক্তি হতে সকলি উদ্ভূত ॥ অথবা হে অর্জুন, তাতে কি প্রয়োজন। জানিও জগৎ করি একাংশে ধারণ॥ এক অংশে গৃত হয়ে, বিশ্ব অবস্থিত। জানিও বিভূতি সম এ সব নিশ্চিত॥

একাদশ অ্ধ্যায়

অৰ্জ্ন বলেন পুনঃ তাকিয়ে কেুশবে। **অধ্যাত্ম তত্ত্বের কথা গুনাইলে ভবে।** ইহাতে আযার-মোহ ঘুচিল এক্ষণ। दिरवक विषर्त्र खान खिणान এकन। ওহে কমল লোচন, গুনিমু বিস্তর। উৎপত্তি শয়কারা যে গুণ তোমার 🖦 স্ষ্টি পূর্বাপর কুথা করেছ কীর্ত্তন। ব্দব্যয় মহ্পত্ম্য তব কবিন্ন প্ৰবণ ॥ আত্মতন্ত্ব, যোগতন্ব, শুনালে,যে সব। সে সকল সত্য মানি গুনহে কৈশব 🖁 কর দয়া মোর প্রতি কমল লোচন। একবার ঈশরপ দাও দর্শন ॥ দেখিতে এরূপ তব বড়ই বাসনা। হে দেবেশ যদি মোরে যোগ্য ভাব মনে। অবিনাশী নিত্যরূপ দেখাও দর্শনে ॥ শ্রীক্ষা বলেন তবে শুন পরস্তপ। নানাবর্ণ অংকারেতে আমার এরপ ॥ সূহস্র সহস্র প্রাণী অভূত ব্যাপার। ভিন্ন ভিন্ন ধরে বিভিন্ন আকার।

আদিত্য অওল দেখ, দেখ বহুগণ। কি ভীম আক্রার দেখ সব ক্রগণ॥ अभिन्ते कुमात पत्र मक्ष मक्ष मारकः। নানারপ এক কেতে ভয়ত্বর সাজে॥ পূৰ্ব্বে যাহা কথনও না হয় দৰ্শন। এক্লপ জড়ুত রূপ দেখহ এখন॥ प्रिथर व्यर्ज्स जूमि এই मम ऋष। সকলের মধ্যে ইহা অর্ভুত যে কপ। স্থাবর জন্স সহ জগ**ং বিরাজে**। দেহের একাংশে তাহ। কিবা রূপ সাঞ্জে॥ পীর যদি দেখিতে বাষ্কনা হয় মনে। দেখে পত্ত পবস্তুপ তাংশ এইকলে॥ সামান্ত চকুতে তুমি না পাবে দেখিতে। লও এই শিূব্য চকু দেখিব দহিতে । তদারা আমর রূপ করিবে দর্শন। দেখ ঐরুপে যাহা করিছ মনন। मक्षय वर्णन जाका ७न पिया मन। অর্জুন যে রূপ দেখে তার বিববণ॥ থোগেশ্বর ভগবান কহিয়া এরপ। দেখাইন পাপুপুনে তাঁহার সরপ ▮ কি ক্ৰ য়াজন্। তোমায় মে ভীমর্প । শে রূপের কভু নাছি গুনি অনুরূপ॥ পুদুত আকার তার অসংখ্য বদন। অসংখ্য প্ৰাণীর তাতে অসঃখ্য লোচন∰

একাদশ অধ্যায়।

বহু প্রাণী একত্রিত তাহার ভিতর। অভুত ভূষণ পরে সবার শরীর্ঝা বছ অন্তর, বছ শস্ত্র, মাল্য দিব্য, আর। নিতান্ত আশ্চর্য্য রূপ সেই স্পাক্রি॥ ় প্রকাশ স্বরূপ তাব, অনন্ত আকার। সর্ব্বদিকে ভয়ঙ্কর বদন উাহার 🗈 সহস্র সূর্য্যও যদি আকাশে উদয়। তবু তার আলেটিকব তুলনা নাহ্য॥ ্রিশ্বরূপ শরীরের একাংশ ভি :ব। ভিন্ন ভিন্ন বিশ্ব দেখে তাহার ভিতর ॥ দেব, পিতৃ, মহুয়াদি সর্বা লোক আছে। সকল দেখেন অৰ্জ্জন সে শরীর মাঝে॥ আশ্চর্য্য ওঁরূপ দেখে বীর ধনঞ্জয়। 🖚 বিসায়ে শরীর তার রোমাঞ্জু হয় ॥ অবনত শির হয়ে কবে নমস্কার। ক্বতাঞ্জনি নারায়ণে করে বার বার॥ অৰ্জ্জুন বলেন পরে খনহে কেশব। ত্ৰ বিধৰ্ষণ দেহে দেখি দেব সব॥ স্থাবর জধ্ম ভূত দেখিছি সকল। চহুৰ্গ্ম ব্ৰহ্মা দেখি আসন কমল॥ ঋষিগণ সর্পাণ বাকী নাই কেহ। সর্বা বিশ ধবে দেখি তোমার এ দেহ। একিরূপ বিশ্বীরূপ দেখি বিশ্বেশ্বর। प्रभुष्ट्या वनगद्भाय व्यम्था छ नत् ॥

অসংখ্য আনন দেখি অসংখ্য লোচন। আনুস্ত ঐর্কণ তব করি দরশন॥ ভয়ঙ্কর রীপ কভু নাহি দেখি হেন। আদি, অন্ত, মধা, বিভো নাহি কেন ॥ গদা, চক্ৰ, কিয়ীট, কিবা শোভা ধরে! তেজোরাশি আলো করে যেন দিবা করে। অধি স্থ্য সম তেজ প্রভাব তাহার। অপ্রমের* দেখি আমি শরীর তোমার॥ পরবন্ধ তুমি দেব তুমি নারায়ণ। বিশ্ব মধ্যে তুমি ধর্মের পাত্মন ॥ এই বিশ্ব চরাচর তোগাতে আগ্রিত। সনাতন ভূমি দেব সকলৈর হিত॥ অবায় পুরুষ তুমি জগৎ নিধানী मश्यम नाहिक **(**पन (परवन श्राधान ॥ উৎপত্তি 🕸ত লয় না আছে তোমার। অনন্ত প্রভাব তব অনন্ত আকার॥ অমস্ত বাহু তব বহু বল ধরে। চন্দ্র নেত্র সম মুখোজন করে। বদনে তোমার যেন জ্বলে ছ্জাশন! তব তেজে বিশ্ব এই সম্ভপ্ত এখন॥ স্বৰ্গ সৰ্ভ্য অস্তব্যক্ষা সৰ্ব্বদিক ব্যেপে। একাকী হয়েও ভূগি ব্যাপ্ত হও ভবে ॥

⁻ **অলবে**য়-^{এই}লপরিনীম্র।

'এক'দি**শ অ**ধ্যায়।

অন্তুত প্রচণ্ড মৃত্তি করিয়ে ধর্শন। শোকত্তম ভীত সবে হয়েছে এখন। দেখি আমি দেবগণ লয়ে তোমার শরণ 🕨 জীত মনে তারা ব্যাকুলিত হয়।

কেহ কুডাঞ্জলি করে শঙ্কাযুক্ত কলেবরে।

গুণগান করে তারা অতি সভহয়। মহর্ষিগণ "স্বন্তি" শব্দে শুবে মন্ত হয়॥

ক্ষুদ্র আদি দেবগণ " আদিত্য সাধারণ। ·

, वञ्च, गांधा, विश्व**र**णव, ष्यञ्चत, भिक्रशण॥ অখিগীকুমারদর মগৎ উদ্বাপাচয়।

> গদ্ধৰ্ব ও গক্ষমত্ৰ বিশ্বিত এখন॥ তোমার্ক অজুক্তরপ করে দরশন॥

মহান এরূপ তব বহু নেত্র মুখ স্ব।

ব'ছি উক্, আর অসংখ্য উদ্র॥

বহু দক্ত মুথোপরী উঠে শরীর শিহরি।

ভয়ানক রূপ এবে দেখির এবার ॥

(मधिरा नगराजीव ভারে কুও গ্রীব।

ওরূপ দেখে ভয় না হয় কার॥ আকাশ মণ্ডল বাটী তোমার শরীর। নানা বর্ণে প্রভালিত বিশাল শরীর॥ বিক্লারিত সে লোচন প্রশান্ত বদন। तिरथ गग तिरह भाष्ठि ना तरह **এ**थन ॥ দশন পুংজি দেখে ভয় হয় মনে।

এপ্রাপ্তার সমুখ তব দর্শনে ॥

হয় দিকভ্রম মম নাহি ত্বখ পাই। জগীনাথ তুমি দেব, কিসে ত্বখ পাই ॥ প্রসন্ন জামার প্রতি হওহে দেবেশ। অভ্য় দানওকরু এবে সহি ত্বথ লেশ। কিবা ভয়শ্বর রূপ দেখিছি এথন। ধুতরাষ্ট্র পুত্র সব ছবোঁগনগণ॥ ভীম্ম, জোণ, কর্ণ, বীর বহু রাঞ্চগণ। আমাদের আত্মীয় গোদ্ধ রাজগণ ॥ ভয়ন্ধর মুখে তব করিছে গমন। সে সব করিছে গ্রাস তোমীর বদন॥ স্বতিবেগে এসে তারা করিছে প্রবেশ। ेদস্ত পূংক্তি মূখ নধ্যে ক্ষা তারা নেষ॥' কারু(ও) অজ কার (ও) শাণা চূর্ণ হয়ে যায়। विभाग मुद्ध भटशा मःगध रूटम साम्र अ বহুধারা প্রবাহিত নদীজল বেন। জ্রতগতি করে তাহা দাগরে গমন॥ সেইরূপ লোক মধ্যে ঐ বীরগণ। প্রজালিত মুখে তব করিছে গমন॥ থেমন পত্তম সব অতি বেগে ধায়। প্রজ্ঞলিত হতাশনে সরিবারে যায়॥ সেইরূপ লোক সব ধায় মুথ পালে। নিশ্যম সরিবে তারা কভু নাহি জানে॥ দেখিয়া এদব কৃষ্ণ এই মনে লয়। সক্রলোক গ্রাসিবারে তোমার নি*চম ।

ব্যাদন করেছ নিজ প্রদীপ্ত বুদন ি বীর বর্গে যেন তুমি করিছ ভক্ষণ। তেজোরাশি দারা জগৎ সম্বপ্ত-এখন ৷ প্রতাপে সকল বিখ হয় ভীত মন 🛚 যত সব বীরহৃদ মুখের ভিতর। পড়িয়া তাহারা সব ইয় মর মর ॥ কে তুমি আমায় বল হেন মুর্তি ধর। এই ভীম মৃতি তব এবে পরিহর॥ -ুনম্**কার করি তোমা প্রস**ন্ন হও মোরে। সকল কারণী রূপ জানিছি তোমারে॥ ময় অভিলাষ হয় তোমাকে জানিতেন। তোমার চরিত্র লার্ডা জানি না মহীতে॥ লোককর্ত্ত করি আমি কালের স্বরূপ। সংখ্যর কর্তা আমি ধর্মরাজ পরুপ ॥ ত্র্যোধন আদি এবে করিব সংহার। তাহাতে, প্রবৃত্তি আজ হয়েছে আমার॥ হে অর্জুন, তুমি যদি নাহি কর রণ। তাহলেও প্রতিপক্ষে না থাকে জীবন॥ অতএব যুদ্ধ জন্ত হও সমুখিত। মধুণাভ যশোরাশি লভিবে নিশ্তিত। শক্রনর্গ প্রাভবে কর রাজ্য ভোগ। নিষ্ণটক রাজ্য তব হইবেক ভোগ॥ ঐ সকল শোদ্বর্গ পূর্ব্ব হতে হত 📘 শাশার বিক্রমে তাবা হয়ে আছে মৃত।

তব সৰ শক্তাগণ করেছি সংহাব। কেঁবল নিমিত্ত ভাগী হইবে তাহার॥ ডবৈ এই ভুচ্ছ কাজে কেন কর ভয়॥ উঠু উঠ প্রস্থূপ নিশ্চয় হবে জয় ॥ জোণ, ভীম্ম, জয়দ্রণ যত মহাবীর। কুৰ্ণ আদি যত আঁছে সব যোদাবীর ॥ সকলে রেখেছি আমি পূর্বো কৰে হত। অন্তরেতে তারা সব হঁয়ে আছে হত।। । তাদের সকলে তুমি কবহ বিনাশ। 💃 নাহি কর হঃখ এতে না হও হতাশ। শংগ্রামে নিশ্চিত তব হুইবেক জন। বীর তুমি পরস্তপ। কেন এত छ র 🛚 **জীক্লকের কথা সব গুনিয়া জীর্জুন।** কাঁপিতে•কাঁপিতে কথা কহেন তথ্ন # অতিশয় ভীত হয়ে কৃতাঞ্জলি পুটে। क्ट्न नमछ कथा क्रम निकटि॥ । অৰ্জুন বলেন তবে শুন হাৰীকেশ। মাহাত্ম্য কীর্তনে তব নাহি ভয় লেশ॥ भक्ष जार इस जाइस एम मश्न। অমুরাগ লাভ কবে সর্বজনগণ ॥ রাক্ষসেরা ভয়ে সব করে পলায়ন। সিদ্ধগণ নমস্বার করে সর্কাঞ্চণ। ্রহ্ন অনন্ত। হে দেবেশ। জগৎ প্রধান। ব্রনারও গুরু তুমি বেদের প্রধান॥ 🗛

একাদশ অধ্যায়

173

অব্যক্ত অনস্ত তুমি জগৎ কারণ। কেন নাহি পূজিবেক দেব সাধারণ তুমি হও আদি দেব হে অনন্ত রপ। পুরাণ পুরুষ তুমি বিশ্বের স্বরূপ 🛭 তুমিই সর্বজ্ঞ হও তুমি হঁও জৈয়। সর্বাবাপী ভূমি হও মুবার আধেয়॥ তুমি বায়, তুমি যম, অগ্নিও বঁকণ। প্রজাপতি তুমি, চন্ত্র, পিতামহ গণ; সকলই তুমি-দেব সবার আধার। সহস্র সহস্র তোমায় করি নম্যার ॥ সবার প্রধান তুমি সবার আকার। পুন: পুন: তোমীয় করি নমস্বার॥ সন্থে পুশ্চাতে তব, করি নমস্বার। চারিদিকে তব আমি করি নমস্বারী ম অনস্ত শক্তি তব বলীর প্রমান। জগতের সর্বাত্ত তুমি হও বিভ্যমান ॥ এই জন্ম তব নাম সর্ক অভিহিত। তোমার ঐশ্বর্যা রূপে জগৎ বিদিত॥ ঐখর্য্য মহিমা তব এই বিশ্বরূপ। জানিতাম নাহি আগে তোমারস্বরূপ॥ 🥌 হৈ কুফ যাদব বলে ডেকেছি তোমায়। লৌকিক সম্বন্ধে তাহা জানিবে নিশ্চয়॥ এই হেতু যুদি কোন হয়ে থাকে দোষ। ক্ষমাকৈর ব্যবহার নাহি কর রোক্ষ

আহরি বিহার কিমা শরন ভোজনে। অৰ্থবা যথুন ভূমি থাক একস্থানে॥ ছইয়া একাকী যদি কর অবস্থান। বন্ধবূর্ণ গধে কিম্বী কর অবস্থান॥ यि कोन करत थाकि मन वावहात। পরিহাস ছলে হবি ক্ষমা কর তার॥ অপ্রামেয় তবরূপ কামনা অতীত। ক্ষম মোরে তুমি দেব জগতের হিতা।। অপ্রতিম তব নাপ অতি ঐভা ধরে। চরাচর সর্বজীব তোসার ভিতরে॥ তুমি পুজ্য তুমি গুরু অভি গুরুতর। তব তুল্য কেহ নাহি ঞ্গৎ ভিজন্ন॥ যেবর্থ পুত্রের দোষ পিতা ক্ষমী করে। স্থা মিত্রের পতি পত্নীর ক্ষমা করে।। সেই রূপ অপরাধ ক্ষমা কর ম্ম। পৃথিবীতে পূজনীয় নাহি তব সম॥ হয়েছি সম্ভষ্ট আমি দেখে তব ৰূপ। অপূর্ব্ধ এইরূপ তোমার স্বরূপ॥ ভথে মম প্রাণ কিন্ত ব্যাকুণিত হয়। দেথিবারে পূর্বাক্ষপ বড় ইচ্ছা হয়॥ মনোহর পুর্বারূপ দেখাও আমায়। নতুবা হে দেবেশ ভয়ে প্রাণ যায়।। হে কুঞ্চ কিরীট গদা চক্ত ভূমি ধর। ভীম ভয়ম্বর রূপ এবে পরিহর ॥

একাদশু অধ্যায়

ইচ্ছা হয় পূর্ব্বরূপ দেখি নারায়ণ ্দেখাও সেরূপ হরি করিয়ে ধারণ।। বিশ্বসূর্ত্তে। সহস্র বাহু। দাও দর্গশন। কর তুমি চতুতুজি মৃত্তির ধারণ। শ্রীহরি বলেন তবে শুনহে অর্জ্জুন। क्ति कि আত্মযোগ বলে মম, এ মৃর্তি ধারণ। অনাদি অনন্তবাপী হল দরশন।। তোমা ছাড়া এই ৰূপ দেখিতে না পায়। প্রসন্ন হইয়ে আমি দেখাই তোমাধ।। বেদ অধ্যয়ন কিঞ্লা যজ্ঞ অনুষ্ঠান। ধর্ম্ম কর্ম্ম আর যত যথা ইচ্ছা দান।। অতি উপ্রতিপ (যই কবে অমুষ্ঠানর ' তথাপি আমার রূপ না পায় দুর্শন।। নাহি কর ভয় কোন, আমার দর্শন। নির্জয়ে পূর্বেব রূপ কর্ছ দর্শন।। জীকৃষ্ণ অৰ্জ্জানে কথা কহে পুনরায়। ष्ट्रप्र्युक्त कथ धति भनीत रमथात्र॥ নির্ভীক হইল চিত্ত অর্জ্জানের তবে। দেখায় শরীর তার সোম্যরূপ ভাবে॥ প্রকৃতিস্থ হই আমি তোমার দর্শনে। ব্যাকুলিত পূর্বামন স্থির এইক্ষণে ॥ এরপ দর্শন কর্জু কাব নাহি হয়। ঞ্জেপ দর্শন নিতা দেবতা কাময়॥

দ্বাদশ অধ্যায় ৷

দর্ব্যক্ষ করে তোমাতে অর্পণ।
ভক্তিযুক্ত হয়ে তোমা পুজে নিরম্বর।।
অক্ষয় অব্যয় জ্ঞানে যে করে পুজন।
এই চুই মধ্যে কেবা অধিক অন্তর।।
ভগবান কহিলেন শুনহে অর্জ্জ্ন।
এক মনে সম্বভাবে শ্রদ্ধায়ক্ত হয়।
যে করে আমার শুণ রূপ আরাধন।।
মিশ্চয় আমার মতে যোগরত হয়।।
ইন্দ্রিয় সকল যিনি নিরোধ করিয়ে।
সর্ব্র এই সমর্দ্ধি করেন দর্শন।
সর্ব্রেত্ত হিতে যিরি নিযুক্ত হইয়ে।।
অব্যক্ত শাখতরূপ করেন চিন্তন।।

অনিৰ্দেশ্য সৰ্ববীপী অচিন্তা অচল নি গুর্প অক্ষয় রূপ করে আরাধন। তাহাদের চিত্ত কভু না হয় চঞ্চল। নিগুণ স্বরূপ মোরে তাঁরা প্রাপ্ত হন ॥ নিশুণ ব্রন্দেতে চিত্ত যাহাদের রত অত্যস্ত অধিক ক্লেশ তাহাদের হয়। উত্তম উপায় এই জ্ঞানী অভিমত ॥ নিশুণ ব্রন্মের লাভে অতি কণ্ট হয়। (क् व्यर्ज्न । व्यर्भनील (य मानवर्गन । আমাতে সকল্প কর্ম কর্মে অর্পণ। ভক্তিযোগ সমাধিতে করমে চিন্তন। এইরূপে সকলেই করে উপাসন॥ আমাতে খ্রুভিষ্ট চিত্ত হয়েছে যাহার। আমা হতে শীঘ্র তার হয় উপকার ॥ মৃত্যু সমাকুল এই সংসার সাগর। নিশ্চয় তাহার আমি করিব উদ্ধার॥ হে অর্জুন। যম বাণী গুনহ সম্বর। মন আর বুদ্ধি তব করে স্থিরতর॥ করহ আমাতে তুমি তাদের অর্পণ। গুদ্ধ ব্ৰহ্মে দেহাত্তে হইবেক স্থান॥ তাহাতে সংশয় মনে না কর অর্জুন। াহান্তে আমাতে তব হইবে মিলন **।** শগুণ ত্রন্মেত্তে চিত্ত না পার রাখিতে। बेत्रवृक्ति यपि नाहि इत्र এই হিছে।

শ্রীমন্তগবদগাতা।

অভ্যাদ থোগেতে তুমি দিয়ে তবে মন। আঁমাকে করহ লাভ করিয়ে যতন॥ ষ্ণভ্যাসপ্যাগেতে যদি হও অপারগ। তপ্ৰং কৰ্মে তবে হওহে পারগ। মম জন্ম কর্ম তুমি কর অনুষ্ঠান। শভিবে ত্রগেতে তুমি করি অমুমান ৷ क्यं जञ्जीत्न यपि इउ हीनवन। থোগপরায়ণ হয়ে থাকই কেবল 🛚 আত্মার সংযম তুমি করহ এখন। কর্মফল কর ত্যাগ লইয়ে শরণ॥ খিত্যাস যোগ চেয়ে জ্ঞান শ্রেষ্ঠ হয়। জানের অপেকা ধ্যান[©]অতি শ্রেষ্ঠ হয়॥ কর্মদল ভাগে পুনঃ সর্ব শ্রেষ্ঠ হয়। ত্যাগ পুরু মুক্তি লাভ জানহ নিশ্ব 🛚 मर्स्व प्राचारमज नाहि बारह दिय। মৈত্রীভাব বাহাদের হয় এক শেষ॥ করণা ভানয়ে যার, নাহি অহকার। সর্বভূতে সমগৃষ্টি, নির্শ্বম আচার॥ अथ एः एथ ममञाव विनि अभागील। সদাই সম্ভষ্ট যিনি স্থিরচিত্তশীল। এইরূপ আত্মা হয় সংযত যাঁহার। স্থাদুড় নিশ্চয় হয় মানদ তাঁহার॥ মুক্ত, বুনি, যার হয় আমাতে অপী। সেই হয় প্রিয় মম'ভক্তি প্রয়েণ।

भागम कार्यायः।

হাহা হতে কোন জন না পায় সন্তাপ। অন্ত হতেও যিনি কভু না পান্<mark>ধ সন্তার্</mark>ণ ॥ হরিষ বিযাদে যার দমতুল্য জ্ঞাল। ভয়োদেগ পরিত্যাগে সকুলি সম্নি 🖟 সেই ভক্তজন মন অতিপ্রিয় হয়। ইহাতে সন্দেহ নাহি কর ধনএয় ॥ ষদৃক্ষালব্ধ অর্থেও নাহি প্রয়োজন। বাহিরে অন্তরে শুঁচি থাকে যেইজন॥ না আছে অলস যার নাহি পক্ষপাত। স্বার্য্যদক্ষ, উদাধীন, বেদনা বর্জিত॥ স্ক্রারন্ত প রতা। যেই জন হয়। ' সেই জন ভক্ত মগা অজি প্রিয় হয়। প্রিমবস্ত লাভে যার নাহি হয় সংখ্যা व्यध्यित्र लाट्ड, रेहेनात्म, नाह्नि रत्र प्रश्य ॥ ना रग व्याकाष्क्र। यात्र, ष्यशाश्च विष्रम । পাপ পুণ্য বিষয়েও নাহি আছে হিরে॥ সেই ভক্তিমান্ মম অতি প্রিয় হয়। ना कत गरमह क हू अन धन अस्॥ শক্র মিতা যারে হয় সমতুল্য জ্ঞান। नारि चादह त्वाध त्कास गांस खशमांस ॥ भक्ति ममान इस यङ् अङ् खाता। 🛪 थ इः १२ मग वृक्ति नां हि मक 🔳 जाता।

ত্রীমন্তগবন্দুরীতা।

বিন্দাতে স্থাতিতে যার সমজ্ঞান
শৌনীভীবে একরপে দিন বহে যার ॥
খির মৃতি হয়ে মিনি গৃহেতে বর্জিত।
শেই পুরুষ শ্রিয় হয় তাছ। স্থানিভিত ॥
শুদ্ধাবান্ হয়ে যেই মৎ পরায়ণ।
পূর্বের কণিত ধর্ম করে আলাপন ॥
সেই ভক্তজনগণ অতি প্রিয় হয়।
না আছে সন্দেহ এতে গুন ধনঞ্জয়।।

ত্ৰয়োদশ ভাষ্যায়।

প্রকৃতি পুরুষ যেবা কেত্র ও কেত্রপ্ত।
কান প্রেয় সকলেতে আমি অতি অপ্ত।
আনিতে মানস মম শুনহে কেশব।
বল মোরে সে বৃত্তান্ত বিবরিয়া সব॥
ভগবান কহিলেন শুন ধনপ্রয়।
শরীর কেত্রের নামে অভিহিত হয়॥
ইহাতে পণ্ডিত যিনি কেত্রজ্ঞ নাম ধরে।
তাঁহার্র প্রাণংসা সবে সংসারেতে করে।
তিনিই ইহার করেন স্বর্ণন ॥

बादगांतुन व्यथां म।

অদ্বিতীয় ত্রহারপ আমি হে ভারত 🏲 ' সকল ক্ষেত্ৰেই হয় আমাতেই যুঁত। एकज ७ एकड छ गर्धा शृथक एव **स्थान**। মম মতে হয় তাহা প্রকৃত্ই জান॥ এ ক্ষেত্র শরীর হয় প্রক্রতিতে রুত। পাবার তাহাই হয় ইন্সিয়াদি রত ॥ এ ক্ষেত্র কারণ হতে যাহা কার্য্য হয়। ক্ষেত্র প্রভাব বা স্বভাব যা হয়॥ ক্ষেত্রজ্ঞ ধনপ•আমি করিব বর্ণন। ংহ ভারত। স্থা তুমি ওম দিয়া মন॥, विशिधि भिरिश्य होना क्षेत्र कन। বেদেও পৃথক ভাব করে নিরূপণ॥ अछत्र याथा करत व् किवानियन। ব্ৰহ্ম স্বত্ৰ থেদে আছে বিভিন্ন **কথিন** 🛭 এরপ বিভিন্ন মুনির ভিন্ন ভিন্ন মত। করিব বর্ণন আমি শুন মম মত। भ्रात्करभ रम मव कथा कहिव ध्यय । श्वित्रवृक्ति इरम जूमि खम निम्ना मन ॥ ঞিতি, জল, তেজ, আর মঙ্গৎ, আকাশ। পঞ্ এই মহাভূতে শরীর বিকাশ॥ পাব্যক্ত প্রায়তি সার বুনি অহমার শ্ৰোতাদি ইন্দিয় দশ মন অধিকার॥ রূপুরদ গাচ আদি ইক্লিয় বিষয়। श्रंथ, पूर्थ, देखी, ८६व, मरवाङ त्य एव ।

ধৈৰ্য্য, ঠেতনাদি, আছে যে সব বিষয়। मक्ति किट्रित नाम खन धनअग्र॥ আৰুখানা, নাহি করে দন্ত গর্বহীন। সরণতা, ভীক্ষেবা, আর হিংগাহীন ॥ ८भोठ, काञ्चि, देष्ट्रया, जामि मश्यम तम ४५० এ সব প্রকৃত জ্ঞান কহে গুণিগণ॥ हे जियोषि विषय एवं ज्ञारात्रीय। মাৎস্ক্য নাহি থাকে অত্রকার হীন ॥ क्या, मृजूा, जवा, चाधि, मु:थ, व्यादनाहरा। नक्षि প্रकृष्ठ खाम श्वनर् এथन ॥ লী পুত্র সংদারেতে না থাকে আদক্তি। পূজा भित्र ऋथ इः दथ नाहि शृंदक श्रीिक ॥ ध्विभात स्थ कृश्य माहि थारक द्वाध। ना करन काशंत्र मदश दकान ७ विदर्शां ॥ देशेनिष्ठे लाएक त्यरे ममिछ रम। তাহার প্রকৃত জ্ঞান শুনহে অর্জুন॥ একথোগে এক ভক্তি যে করে আমার। জনশৃত্ত স্থানে বাস ভজনা আমার॥ विषयी त्यारकत्र मुखा ना करत्र भगग। ইহাই প্রকৃত জ্ঞান কহে মুনিগণ॥ আস্ত্রান, তত্ত্তান, যোক্ষ আলোচন। গৰ্কত্যাগ আদি হয় প্ৰকৃতই জ্ঞান 🛚 ^{প্র} সবার বিপরীত অজ্ঞান কণিত। व्यहिश्या । गर्सापि खड्यान खविहिर्द्धाः

बदशांनुन ज्यादा।

আনের বিষয় শেষ হইল এখন। জ্যের বস্তু কিবা তাহা করিব ব্লর্থন ॥ যাহা হতে মুক্তি লাভ পায় জীবগণ। পরম ত্রন্ধা তিনি সদস্ৎ না≱হন'ী। সর্ববিই হস্তপদ সর্ববি লোচন। সর্বতে শ্রবণেন্দ্রিয় শিরঃ ও বদন ॥ সকল পদার্থে ব্যাপ্ত ঘাহার শরীর। পৃথিবীতে ক্লেয় ভাহা তন মহাবীর ॥ ইন্দ্রিয় আধার হয়ে ইন্দ্রির বিহীন। * সমস্ত পদার্থ যিনি করেন ধারণ ॥ निश्व । निर्णिश्च राम्र खगरणा । रन । সর্বাক্তই বিভাষাশ তিনি জ্ঞেয় হন॥ সকলের বাহ্ তিনি, তিনি অভ্যন্তর। স্থীবর জগদ তিনি অতি স্কাতর॥ প্ৰা হেতু অবিজ্ঞেয় দুর হতে দুরে। জানীর নিকটে পুনঃ অজ্ঞানীর বহু দুরে॥ কারণে অভিন্ন তিনি কার্য্যতঃ ভিন্ন। এইরূপে সর্ব্বভূতে অভিয়েও ভিন্ন॥ স্থিতিতে পালক তিনি প্রলয়ে সংহার। অবিজ্ঞেয় তিনি স্ষ্টিতে প্রভাব তাঁর॥ স্ব্যাদি জ্যোতির হন জ্যোতির স্বরূপ। অজ্ঞান অতীত তিনি জ্ঞানের স্বরূপ।। भकरणत्र वृद्धि जिनि छोन, भगा, दुक्तर,। এরপ তাঁহাব গুণ হয় পরিমেয় ■

ক্ষেত্র, জ্ঞানি, জ্ঞেয়, সব বলিন্ত এখন। এ তিন শদার্থ জানে মম ভক্তগণ॥ হইলে বিদিত ইহা জ্ঞান লাভ হয়। মন্তাবে উপযুক্তগ্রলে মোক্ষ ফল হয়।। প্রকৃতি পুরুষ হয় অনাদি উভয়। বিকার ও গুণ সব প্রকৃতি হতে হয়। পুথ, ছঃথ, গোহ, আদি ইঞ্রিয় বিকার। সকলই প্রকৃত হতে জান এইবার। কার্যাই শরীর হয় কারণ ইপ্রিয়ে। ক্রিয়া ও শক্তির মূল প্রাকৃতিই হয়॥ শ্বথ ছঃখ ভোগে হয় পুয়ুষ কারণ। ে প্রকৃতি পুরুষ ভেদ গুন দিয়া মূন।। ক্ষেত্ৰজ্ঞ পুৰুষ হিত প্ৰকৃতি মায়ায়। স্থপ দুঃখ ভোগ তার দেই হেডু হয়। ত্রিগুণ প্রকৃতি সনে পুরুষ যে রূপ। সদস্ৎ যোগি জন্ম হয় সেইরূপ।। সত্ব রজঃ তমঃ হয় প্রেকু'তর গুণ। শুভাশুভ কর্মা করে এই সব গুণ। तिहे कर्षाकरण इत्र श्रुक्त रयमन । বিভিন্ন যোনিতে জন্ম তাহার তেমন ॥ যদিও সর্বাদা থাকে দেহের সহিত। মিশ্রিত মা হয় তবু দেহের সহিত।। **পে প্র**ক্ষাৰ আত্মা নামে অভিহিত হয় খতর থাকিয়ে সেই উপরাষ্ট্রা, হয় ॥

সেই ভর্তা সেই ভোক্তা, সেই মহেশ্বর। ঞ্জতিতে আখ্যান এই গুন নৃ**প**বর। পরমাত্মা নাম তার খ্রুতিতে কথন। অক্ষয় অব্যয় ইহা জানে সর্বাজন। ক্ষেত্ৰিক্ত পুঞ্বে যেবা জানে এই মন্ত। প্রকৃতির স্থু হঃখ হয় অবগত[®]। यिषि अर्था मिष्टे थारक विश्वमान। পুনর্জন্য লাভ,তার না হয় কথন॥ কেহবা ধ্যানেতে হয় আত্মা অবগত। সাংখ্যযোগে কেহ আত্মা হয় অবগত।। কেহবা কর্মের থোগ করিয়ে পালন। আপন দৈহেতে করে আত্মার দর্শন ॥ আত্ম সাক্ষাৎকার লভে যেই জন। খুচে যায় মোহ তার জান তলোধন।। সাংখ্যযোগ কর্মযোগ করিলে যে জ্ব। না পায় করিতে যেই আখার দর্শন।। গুরু উপ দেশ সেই করিয়ে প্রবণ। মৃত্যুময় সংসার সেই করয়ে লজ্জন।। হাবর জঙ্গম কিম্বা আর উভচর। ণর্বপ্রাণী আছে যত জগৎ ভিতর 🛮 গকল জানিবে কেত্ৰ কেত্ৰজ্ঞ হইতে। দেহের সংযোগে তারা আছে এ মহীতে॥ াশ্বর পদার্থে যাঁর এক আত্মজ্ঞান। কিল পদার্থ⊛এক আত্মা দরশন ॥

অবিনাশী নির্কিকার ভাবে থেই জন। জিনিই যুথার্থদশী বলে ঋষিগণ।। সর্বাভূতে,সমভাবে অবস্থিত রয়। षेश्रं यक्ष श्राचा यांत्र पृष्टे इस ॥ ন! করে আত্মার বার। আত্মার হনন। মোহ লাভে হয় তারি জানহ অর্জুন॥ মামুষের সব কাজ প্রকৃতি করায়। মায়াই প্রকৃতি বশে সকল ঘটায়॥ क्रानित्त्र गात्रात कार्या विर्द्यूकी त्य खन। আত্মাকে অকর্তা বলে ভাবে থেই জন। তিনিই সম্যকদৰ্শী জানী মহাজন। ক্ষেত্ৰজ্ঞ আত্মার রূপ জানে সেই জন॥ সকল প্রাণীই হয় এক আগায়িত। একমাত্র স্থাত্থা হতে সকলে বিস্তৃত।। गक्न थानीरे रम जाजात यक्षभ। দাধক সমন্ত দেখে ত্রহা স্বরূপ।। অনাদি নিগুৰ্থ ইহা অনম্ভ অব্যয়। **मत्रीदत्र (शरक्छ हेहा निश्च माहि हम्र॥** শনস্ত আকাশ যেন সর্বাত্র ব্যাপয়ে। শ্যঙ্গ স্বভাব হেতু মশেনা বিষয়ে॥ সেই রূপে আত্মা হয় অনস্ত অবায়। प्राप्टरक शिकरत्र जाजा विश्व नाहि इत्र ॥ र्शु द्यम गर्स कार कत्रदा थकान्। ক্ষেত্র আখা করেওকেরের বিকাশ।।।

চতুর্দিশ অধ্যায়।

दश्या ७ दश्या विशेष ज्ञानम् ध्राप्त । छोन हश्य वादा दियं विशेष ह्य ह्य द्वाप्त ॥ योगो छेश्यात्म, धारिन द्वार द्वारे जन। देववण भारम् छिन क्रास्त श्रीमा ॥

চতুদ্দশ অখ্যায়।

भित्रमार्थ छान कर विषय छाईन।

छभः सभ मय हरेंड मिट स्मिड छान ॥

सम छान माध्य एत छात्र देवक छे भूमन॥

सम छान तहं छ कथा विषय करात्र।

कतिस्म माध्य छात्र छात्रस्य मश्मात्र॥

माधक यथन करत्र छान माधन।

मम मह छाङ अठा माधन।

मम मह छाङ अठा माधन।

पष्टिकाल छ म, जात्र धान अधन।

शिह्रों ना हम छात्र छानि छ निक्षम॥

धक्रिक माभारे हम गर्छाधान कथ।

जाहा हर्ड मर्स्थाणी छेड्ड क्रिम ॥

भक्ती, कींहें, भठमानि एक क्रिम हम क्रिम ॥

रैद्रशन, स्वर्शन, यह छात्र ॥

।

মায়াহতে উৎপন্ন সবার শরীর। মান্দী মাতা, আমি পিতা শুন মহাবীর ॥ সর, রজঃ, ডমঃ, গুণ প্রকৃতিতে হয়। বন্ধন 💶 য়ে তারা জীবাত্মা অব্যয়॥ (ह निष्णाभ, भेद्रस्थ । मर्क खनाकत । সম্বত্তণ শ্রেষ্ঠ হয় এ তিন ভিতর । নির্মাল, পবিত্র, শান্ত, সত্তপ্রধরে। দেহেতু মানবগণ স্থলাভ করে। खूथ, खान, मक्ष खाद्य कद्रदेश वस्ता। मध्य अर्व पारे रम खन मराबन ॥ कामना, जामिक रम त्रमः खन रहा। कर्षामक पात्रा खाय निवृक्त देशांटल ॥ ভূকা, ও আসঙ্গ, ইচ্ছা উৎপানি ইয়। রজোগুণ এই সবে বলশালী হয় व्यक्तान हरिए करमा, त्यम करमा अने প্রমাদ, আলন্ত, নিদ্রা, এই হয় গুল ॥ এসব গুণেতে কবে জীবের বন্ধন। भार्थाथ रम जीव जात्म नर्सक्त ॥ मञ्चल की वृशर स्थमान करत्र। বঙ্গওণ কণ্ম, তমঃ অন্ধকার করে॥ জ্ঞান আহ্বাদন করি প্রমাদে নিরত। धक्वादत्र माञ्चरयदत्र कदत्र तमग्र रूखः॥ সবার প্রকৃতি এই তিন গুণ ধরে। ছই পরাভবে এক উচ্চডাব ধরে।

চতুদ্দিশ অধ্যায়।

বজঃ তমঃ নত হয়ে, সম্ব শ্রেষ্ঠ হয় ৷ সত্ত তম দূরে গেলে, রজঃ শ্রেষ্ঠ হয় ি সত্ত রজঃ দূবে গেলে, তম প্রধান। যথন প্রাবল্য যার, সে*হয় প্রথা∉ ॥ তখন আপন ধর্ম করিয়ে বিকাশ। निक्र खर्ण मान्द्रवद्य क्याद्य व्यक्ताम ॥ श्रेटल रेजिय मृद्य कार्यत्र श्रेकां में। তথন জানিবে সূত্ৰ জ্ঞানের বিকাশ ॥ রজোগুণ বৃদ্ধি হলে লোভ তার হয়। কুর্শ্বেতে প্রবৃত্তি, স্পৃহা ও অশান্তি হয়॥ তমোগুণ বৃদ্ধি হলে শুন ধনঞ্জয়। অপ্রবৃত্তি, প্রমাদ, মোহ, উৎপন্ন হয়॥ উश्वम, विक्रवक, श्रांकि कन्नदम विशेन। তমোগতা এই সব বৃদ্ধি হয় দিন॥ • সময়ে সময়ে জীব ভিন্নগুণ ধর্মে। কভু সত্ব কভু রঞ্জ কভু তমঃ ধরে॥ কথন সবের বৃদ্ধি কভু রঞ্জঃ হয়। উভয়ই নত হলে তমঃ বুদ্ধি হয়॥ য়খন দেহেতে হয় সত্ত্বে উদয়। তথন মানব যদি মৃত্যুমুখে হয়॥ নির্মাণ লোকেতে গতি সর্বলোক কয়। नेन्छप्र रहेरव छोड़ा खन धनक्षप्र ॥ জেঃগুণ বৃদ্ধি কালে মৃত্যু যদি হয়। হুর্গাধিকারী নরবোলি তাহার ঘটয়॥

শ্রীমন্তগবদগীতা।

তমে গ্ৰেণ বৃদ্দি কালে দেহান্ত যদি হয়। পথীদি যোনিতে তার জনম নিক্ষ। मधिक धर्मन फल, ख्य नित्रमल। রাজসিক ধুমেতে জীব পায় দৃঃথ ফল॥ তাম্য ধর্মের ফল প্রমাদ অজ্ঞান। भूगिन्। अधिकार्य करत वर्गाया माग সর্হতে জ্বান হয় রজঃ হতে লোভ ॥ তম হঠি গ্রমাদ আর ধ্যাহ হতে ভোগ॥ এইরূপে গুণ সব ভিন্ন গুণ থরে। সন্ধ রঞ্জঃ তমঃ আদি মানব ভিতরে 🛘 🤈 সান্ধিক হইলে উর্দ্ধ লোকেতে গমন। রাজসিক নরফোকে অংশ্রয় গ্রহণ ॥ ত্রগোগুণশালী যারা অধোলোক্ষ পায়। এক্নপ ত্রিপ্থণ ব্যাখ্যা মুনিগণ কর ॥ १ मानव यथेन इब्र छ्वादनद् भगन। বিবেক আসিয়া জুটে তাহার তখন। সত্বাদি গুণেতে লোক কার্য্যে হয় রত। অন্ত কেহ কৰ্ত্তা নাই এই অভিমত। এরপ যথন তার হয় জ্ঞানোদয়। আত্মাকেও গুণাতীত মনে তার হয়। ব্ৰশ্বভাব লভে জীব তখন নিশ্চয়। আজ্ঞান লাভ করে ব্রন্ধলাভ হয়। এই তিন গুণ হয় দেহের কারণ। ইহাদের পরিহার করের যেই জন।

চতুর্দিশ অধ্যায়।

জনা মৃত্যু জরা দৃঃখ করি অত্যিক্রম। লভে জীব মোক্ষধাম আনন্দ পুরম 🗗 এই তিন গুণ যারা হয়েন পত্মীত। কিরপ তাঁদের চিহ্ন আঁচার নিশ্চিত। কিন্নপে বা অতিক্রম করে তিন গুণ। বলহ বিস্তারি মোরে তুমিহে বিশুণ । छश्वान विविद्यान छन्दर कर्क्क्न। গুণাতীত কারে•বলে করিব বর্ণন॥ জ্ঞানের বিকশি যথন মানবের হয়। **ध्यवृ**खि भाशीमि मन इट्टा छेमग्र॥ বিদ্বেষ তাঁদের প্রতি না হয় যাঁহার। আকাজ্যাও নাহি হয় তাহা ঘুচাবার॥ সেরপ মহাত্ম। হয় গুণাতীত জন। বেদেতে এরপ বলে শুন মহাজন॥ সর্বাবার্যা উদাসীন ভাবে অবস্থিত। সহাদি গুণেতে নাহি করে বিচলিত॥ গুণ পরম্পরা যোগে সব কাজ হয়। একপ ভাবিয়া যিনি থাকেন নিশ্চয়॥ গুণাতীত তিনি হন, অতীব স্থার। তাহার নিলিপ্ত আখা শুন মহাবীর॥ স্থথে দুঃথে সমজ্ঞান স্বরূপেতে স্থিতি। প্রস্তার কাঞ্চনে কিশা সম অন্তভূতি॥ প্রিয় বা অপ্রিয় হয় উভয় সমান। রিজের প্রশংসা কিছা নিজ নিদা জান ॥ তাদব বিষয়ে থার তুলা জ্ঞান হয়।
তিনি হয় গুণাতীত শুন ধনপ্রয়॥
মান অপমানে থার হয় সমজান।
শত্রু মিন ছয় হয় একই সমান॥
সর্বারগু-গরিত্যাগী থেই মহাজন।
তিনি হন গুণাতীত সবার ভাজন॥
একভক্তি যোগে থেই মম সেবা রত॥
নম ভক্ত গুণত্রয় করয়ে অতীত॥
বক্ষ শ্বরূপ লাভ করে সেই জন।
ব্রহ্মলাভ করে তিনি গুণাতীত হন॥
চিবস্তন ধর্ম আমি হই অনুত অবায়।
চিবস্তন ধর্ম আমি হঠ অনুত অবায়।
এইয়পে মোরে ভক্তি করে থেই জন।
গুণাতীত তিনি হন মুক্তির ভাজন গ

পঞ্চদশ অধ্যায় ৷

সংসার অশ্বথ তক্ষ তুলনা ইহার।
উর্দ্ধিকে মূল তার বৃক্ষের আধার।
অধোগতি শাথা হয় বৃক্ষের এরপ।
কর্গুরুতি বেদ হয়, পত্রের স্বরূপ।
সংসার অশ্বথ ভাবেন্দ্র হন বিদিত।

বেদবেতা নাম ধরে কহেন পণ্ডিত 🛮 সত্ত রজঃ গুণে তার বৃদ্ধি প্রাপ্ত হয়। স্লিল সেচনে যেন তক্ বৃদ্ধি হয়। ইন্দ্রিয় বিষয় সব প্রবল তাব খরে। তক্তর পল্লব যেন অতি শোভা ধরে॥ শাপা সব অধঃ হয় পশুযোনি মত। • উर्कानिक दानवरग्नि এই অভিমত।। সংসারেতে যেই জন পূণ্য কর্ম করে। भ९ त्यां निष्ठ **खु**ना नत्य क्रियां नि भएते ॥ দেইরপ যেই জন পাপে রত হয়। পশুযোনি জন্ম তীর হইবে নিশ্য ॥ কৰ্মফল হৈছু সৰ মুক্তি নাহি পায়। পাপ, পুণ্য উভয়েই ইচ্ছা হতে হয়॥ मा थाकिरन कर्माकन जनम ना का। কামনা হইতে পাপ পুণ্যেব উদয়॥ াংসারবাসীর পক্ষে বিষম সংসার। কিবা দ্বাপ, কোথা অন্ত, আদি, মধ্য, তার॥ केडूरे जारनना जाता मश्मात रकमन। করপে সংসার বুক্ষ করিবে ছেদন॥ গাত্র বৈরাগ্য শঙ্গে ইহার ছেদন। ক্ষেজ্ঞান লভিবারে করিবে যতন॥ **স ব্রহ্ম লভিলে জীব জন্ম নাহি আর** গ্রেজনান্তর ক্লেশ ঘুচে যায় তার। ংসার প্রবৃত্তি দিনি করেন প্রদান।

সেই আদি পুরুষের লইবে শরণ॥ মান, মোহ, অহন্ধার, না থাকিবে আর ! জাদজিশুক্ত, হয়ে পরমার্থ বিচার॥ व्यथ, प्रेश्य ममुख्यान निकाम त्य रुप्र। তিনিই অবায় পদ শভেন নিশ্চয়॥ এ্রপ কাব্যয় পদ গভে খেই জন। না লভে জনম সেই তত্ত্বেতা জন॥ हता, पूर्या, व्यथि योशाना करत्र श्राकाम। ব্ৰহ্মপদ তাহা হয় স্বয়ং স্বঁপ্ৰকাশ॥ সম্ অংশে জন্ম লয় যত জীবগণ। পঞ্জেরিয় (ও) মন জাদি করে আকর্ষণ॥ বায়ু যেন পুষ্প হতে এক বহে সম। यमन (कहरे जाश पिरिक्नना भाग । দেরূপ জীবাত্মা যবে বহির্গত হয় 🟲 गन ଓ ইন্দ্রিয়গণে বাহির্য় লয়॥ পুনরায় অত্য দেহে করয়ে প্রবেশ। ইন্দ্রিয়াদি শক্তিসহ করমে প্রবেশ॥ জীবাত্মা আশ্রয় করি ইন্সিয়াদিগণে। विषयापि (ভाগ करत मरन अप गरन ॥ জীৰাত্মা যথন দেহ পরিত্যাগ করে। ष्मध्वा ইतिम भटन विषय एजांग करत ॥ विद्वक विभूष खीव गाहि प्रत्थ छात्र। জ্ঞানচক্ষু বিদা ভারা দেখিতে না পায়॥ त्याधिश्रम खान मध्य कित्रम गर्भ।

নিজদেহ স্থিত আত্মা করেন । দর্শন ॥ অবিবেকী পুরুষেরা করিলে যুক্তন। আত্মার দর্শন তারা না পায় কথন 🛮 চন্ত্র, স্বর্য্য, অগিদেব যে তেজুজ বার্ণ। করিয়া প্রকাশ করে এ তিন ভুবন॥ (म তেজ আমার রূপ জানিবে•নিকর। তাহাতে সন্দেহ নাহি কর ধনঞ্জয়॥ আমার প্রভাবে পৃথী আছে দৃদ হয়ে। জগতের সর্ব্বপ্রাণী রেপেছি ধরিয়ে॥ গ্রহাধি রাশির করি আমিই বর্দন। রসযুক্ত সোমরূপে করিয়ে পোষণ ॥ জঠরাগিরূপে ক্রেমি থাকি সর্ব দেহে। প্ৰাণাপনি বায়ু হয়ে থাকি জীব দেছে॥ চতুর্বিধ থাদ্য তাই পরিপাক হয়। ष्मरुपाभी कर्ण यम मर्क्तगार्थि दव ॥ সকল হৃদয়ে আমি জীবাত্মা রূপ ধরি। শ্বতি, জ্ঞান, জীবদেহে আমি দান করি॥ আমা হতে তারা পুনঃ লয় প্রাপ্ত হয়। বেদাদিতে মমরূপ অতি বেদা হয় ॥ বেদাস্তের অর্থবেত্তা, জ্ঞানদাতা আমি। বেদের প্রাকৃত বেতা জান মোরে তুমি॥ ক্ষর ও অক্ষর ছই পুরুষ নাম ধরে। नर्भन्न भिनार्थ मव ऋज नाम धरत् ॥ 🦡 ক্ষারণ রূপেতে যায়ণ অক্ষর বলে জানে,।

একপ্ল কথিত হয় শাজের বিধানে।
কর ও অক্ষর মধ্যে উন্তম দেরপ।
উভয় হতে পৃথক হয় পরমান্তা রূপ্॥
পরমান্তা সর্কঞ্জীবে করয়ে পালন।
অবায় ঈশ্বর তিনি জানে সাধারণ॥
কর হতে অতীত আমি অক্ষর প্রধান।
প্রবান্তম নাম ধরি জানে লোকগণ।।
মোহ, মায়া, চিত্ত হতে ঘুচুয়াছে যার।
প্রবান্তম নামে আমি বিদিত তাহার।
সর্বজ্ঞানী তিনি হন ডক্তি থোগে রত।
তামার প্রকৃত দেবা উন্তর অভিমত।
তোমার নিকট শাল্র করিছ কীর্তন।
এ গুহু রহস্ত শাল্রে দাও তুমি মন॥
বিদিত হর্মেন যিনি এই সব জ্ঞান।
ক্তাক্রত্য হন তিনি গভি আত্মজান॥

ষোড়শ তাধ্যায়।

দৈবী সম্পদ কারে বলে কহু নারায়ণ। কাহাদের হয় ভোগ বল মহাজন। শ্রীরক্তি বলেন পুনঃ শুনহে অর্জুন। দৈবী সম্পদ নাম ধরি যে সুকল গুণ॥

চিত্ত প্রসম্নতা, আর জ্ঞানযোগে স্থিতি। দান, দম, যজ্ঞ, তপ, অভয় **প্র**ঞ্জি ॥ ব্রহ্মযজ্ঞ, সরপতা, অহিংদা, অকোধ। য়ত্য, ত্যাগ, শান্তি আরু জ্বপট বোধ॥ পরনিন্দা পরিত্যাগী, সর্বভূতে দয়া। নিলে ভিতা, অচাপল্য, লজ্জা, ও মুগুতা। তেজ, ক্ষমা, শৌচ, ধৃতি, বিজ্ঞোহ-বিহীন। অভিমানী নাহি হয় আর হিংসাহীন ॥ এ সকল সত্ব গুণে, প্রকৃতি যাহার। শ্ৰসৰ দৈবী সম্পদ জানিও তাহার॥ সত্ত্রণ প্রকৃতি লয়ে হইলে জনম। সাধু হ্রপ করে জোগ,প্রিয় হয় মম॥ मस्त्रु एर्न्, व्याग एका मि, त्काथ, व्यक्तिमान। নিষ্ঠ্য পাষ্ড ভাব গুভ্তি অংশুন ॥ অশুভ বাসনাম হলে জনম গ্রহণ। আহুরী সম্পদ পায় দে মানবগণ॥ এ সকল গুণ হয় রজঃ তমঃ হতে। হে পাৰ্থ। এ সৰ হয় অগুভ যোনিতে। रिनदी मण्लीन इय स्मारकात्र कात्रण। আত্রী সম্পদ হয় বন্ধন কারণ॥ হে পার্থ ! দৈবী সম্পদে জনম তোমার ॥ তবে কেন শোক তুমি করহ আবার॥ এ জগতে অশ্বর দেব হুই স্বষ্ট হয়। 🏊 ইएলোকে প্রাণী সব গুইরূপ হয়।

দৈৰ সর্গের কথা করেছি বিস্তার। একবে আধ্বর সর্গ বলিব এবার ■ গুনহে পৃষ্ঠিব তুমি গুন দিয়া মন। অমুর সভাবু কৃথা করিব কীর্ত্তন॥ ধর্মেতে প্রবৃত্তি, কিম্বা অধর্মে নিবৃত্তি। শৌচ, জ্মাচার, কিঁমা সত্য, গুণ, প্রভৃতি॥ আন্থরী মানবগণ কিছু নাহি জানে। অস্থর স্বভাব তারা কিছু নাহি মানে॥ তাহাদের নাহি আছে ধর্দীধর্ম জ্ঞান। অবিবেক সব তারা সকলে অজ্ঞান ॥ • विषापि श्राप गर किहू नाहि गारन। জগৎ অসত্য ভাবে তাদের অজ্ঞানে॥ ধর্মে প্রতিষ্ঠিত এই জগৎ বিশাস। সত্য দারা প্রতিষ্ঠিত, চন্ত্র, স্বর্যা, কাল ॥ षेथत नवात कर्छ। वावश निधान। কিছুই মানে না তারা আপনি প্রধান॥ ন্ধী পুৰুষ সহযোগে যেমন সম্ভতি। তেমনি জগৎ হ্য় স্বভাবে উৎপত্তি॥ অন্ত কারণ কিছু নাহি আছে এতে। না আছে ঈশ্বর রূপী কর্ত্তা এ জগতে। सङ्घे जाजा यहावृक्ति के मागवर्गन। উগ্রক্ষা হয়ে করে মানব নিধন॥ জগ্রুতের সন্দ হেতু শত্ত তারা হয়। হিংসাতে স্তত রহা শুন ধনঞ্জয় ॥

কামনা তাদের কভু না হয় পূরণ 🐚 দন্ত, মান, মদে মত্ত মে অহারগণ॥ মোহেতে আবদ্ধ হয়ে অগুচি ব্রত হয়। বিবেকবিহীন তারা অপর্বিশ্র রয় ॥ বেদ বিরুদ্ধ কর্ম্যে প্রাবৃত্ত হয় তারা। বেদের বিহিত কর্ম মানে নার্হি তারা॥ কেবল মরণ পর্যান্ত আছে এই স্থিতি। এরপ চিস্তাতে তাঁরা করে অবস্থিতি॥ ই ক্রিয় বিষয় ভোগ তাদের বাসনা। তীহাই যথাৰ্থ প্ৰথ তাহাই কামনা॥ আশাপাণে বন্ধ কারা কাম-কোধ-যুত বিষয় ভোগের জন্ত অন্তার সংযুক্ত 🛭 ভোগেচ্ছয়ি করে তারা ধনের হরণ। জগতে অস্থর যারা তারাই এইন ॥ ইহলোকে স্থওভোগে মত্ত হয় তারা। পরলোক আছে মনে ভাবে নাই তারা॥ অত্ত হল ধন লাভ কল্য পুনঃ হবে। মনোরথ তাহাদের শীঘ্র পূর্ণ হবে॥ এই ধন মম গৃছে পূর্ব্বেতে দঞ্চিত। পুনঃ হবে তাহা পুনঃ অত্যন্ত বৰ্দ্ধিত॥ আমি আজ এই শত্রু করিয়াছি নাশ। অভ্য শত্রু পুনঃ আমি করিব বিনাশ ॥ আমিই ঈশ্বর হই আমি ভোগী আর্থী। षांगि वणी षाुभि स्थी मिक वांत्रशंत R

অমুর প্রস্কৃতি লোক এই ভাবে মনে। সৰ্ব গুণ মাহি থাকে তাহাদের সনে॥ আসার সমান কেহ নাহি পৃথিবীতে। धतन, गौतन, कूरमं, भौतम, जाभिष्टे महीएछ ॥ नकरलद्भ ट्रांष्ठ येख्व कदिव भाषन । দান করি আফ্লাদেতে হইব সগন॥ ঘোষিবে সকলে যশঃ করিবে কীর্ত্তন। অধ্র মানবগণ ভাবয়ে এসন ॥ একভাবে তাহাদের চিত্ত নয় স্থির। নানান্ সকল হেডু সর্বাদা অস্থির। স লমেতে জড়িত, শুক্ত হিডাহিত জান। বিষয়ে আসক্ত, করে গাপ আচরণ॥ একপে জজ্ঞান পথে হইয়ে মগন। অবশেষেক্তরে তারা নরকে গমন ॥ আপনিই তারা হয় সন্মান ভাবন। বুথা অভিমানে করে যঞ অনুষ্ঠান 🛚 বেদের বিহিত যজ্ঞ ইহা নাহি হয়। क्यां निर्धा नाहि थाटक वृथा नाम रुप्र॥ অহন্ধার বল দর্প (ও) কন্দর্প মোহিত। হিংদা দ্বেষ রত হয়ে ক্রোধে বশীভূত। ष्यञ्ज श्रीक्रयशेष ष्यवक्या करत स्मारत । নিজ (ও) অন্ত দেহ স্থিত আশ্বারূপী মোরে॥ জুলুদেষ্টা তারা সব নরাধমগণ। নিক্য করে অশুভ°কর্ম্পোৎপাদন॥

र्विष्क्रश्रक्षशांत्र।

কর্দ্ম অনুসারে তার হইবে পতন। সপ ব্যাঘ্র খোনিতে কররে গমন্। অস্ত্র যোনিতে হলে, জনম গ্রহণ্ধ अविदिक्टर्क् जोत्र नत्रदक[े] भैमन ॥ জনম জনম তার অধেরগতি হয় ৷ অবিবেকহেতু সেই না লভে আমায়॥° কাম, জোধ, লোভে, হয় নবককারণ। এদের প্রভাবেক্ষ নরকে গমন॥ স্বর্গের গমন পথ, এরা করে নোধ। নরকের হার হয় এই সম বোধ। এতিন ত্যজিবে দ্বিত্য যত স্থাধিগণ। নচেৎ তাদ্ধের কভু না হয় কল্যাণ॥ এই ফ্রিন পরিত্যাগ করে ঘেই জন। শ্রেষ্ঠ গতি লভে, করে শ্রেষঃ দে সাধন ॥ অধম যোনিতে কিশ্বা নরকে গমন। নাহি হয় তার রিপু করিলে দমন॥ শান্তবিধি পরিত্যাগ করে যেই জন। স্বেচ্ছাচারী হয়ে করে কর্মের সাধন॥ मে अप्नित्र विख क्ष् ७६ नाहि इग्र। रेश्लाक स्थ, चर्ग, त्यांक, नाश् भाष्र ॥ শাস্ত্রই প্রমাণ হয় কার্য্য নিরূপণে। অধিকার অনুসারে জানে সর্বজনে ৷ শাঙ্গের ব্যবস্থা তুমি হুইয়ে বিদিত। ভোষার কর্ম্বর্গ কার্য্যে হন্ত তুমি রত।

খান্তবিধি লভ্বনে অধোগতি হয়। অসৎ যোনিতে জন্ম, জানহ নিশ্চয়॥

সপ্তাদশ অধ্যায়।

তিবিধ মানব আছে জগৎ মাঝারে। দেব, অস্থর, মধ্যস্থ এ তিন প্রকারে ॥ धरक धरक जाशास्त्र क्त्रिया वर्गन। এ তিনের শ্রেষ্ঠ কেবা বলহ এখন॥ শান্তবিধি জানে কিন্তু প্রদা নাহি আছে। স্বেচ্ছার করয়ে কার্জ সংসারের মাঝে। একপে যাহারা কর্ম করে আচরণ। অস্থ্য শ্রীনব বলে তাদের গণ্ন ॥ শাস্ত্রবিধি ধারা সব, আছমে বিদিত। সেইরূপ জ্ঞানে কর্ম্ম করে আচরিত ▮ দেবজুল্য তারা হয়, পৃথিবী ভিতর। শ্রেষ্ঠ বলি গণি তারা জগৎ ভিতর ॥ পার এক সম্প্রাদায় তাছে হে কেশব। (अक्टांश करत कांक भाखिविधि कारन गर ॥ ष्यागदश्च, अतादश्च, काठीग्र मात्राविन। भाक्ष विधि अञ्चर्गादत मा काष्ट्रीय पिन ॥ পেচছায়, শ্রদ্ধাতে, কিন্তু করে অনুষ্ঠান। দেবাস্থ্ৰ, ছই ভবি কলে আচরণ॥

্ৰ ় । এইরূপ জনগণ কির্মূপ আচাত্ত্বে। শাস্ত্রবিধি নাহি মানে স্বেচ্ছাচারু করে। অথচ প্রদাতে তারা করয়ে পূর্জম। এরপ জনের নিষ্ঠা কহ জনুর্দ্ধিন 📭 সন্থ রজঃ তমঃ মধ্যে কোন গুণ ধরে। কোন গুণ শ্রেষ্ঠ হয় সে নিষ্ঠা জিতরে॥ প্রকৃতি প্রভেদ হেতু শ্রদা ভিন্ন হয়। यर्ণिव তাদের নিষ্ঠা শুন ধনঞ্জ । পূর্বজনা কর্মাফলৈ প্রকৃতি লাভ করে। দেই মত এই জ্বলো সেই তাণ ধরে॥ সম্ব রজঃ তমঃ গুণু পূর্বজনাজিত। লভয়ে এ জন্মে তিনি যেরূপ **সা**চরিত ■ একপ প্রকৃতি গুণে তাদের স্বভাব। ভিম ভিন গুণ হেতু ভিন্ন ভিন্ন ষ্ট্ৰাব॥ সে সৰ বৃত্তান্ত আজি কৰিব বৰ্ণনী। হে অৰ্জ্ন তুমি তাহা শুন দিয়া মন। যে প্রাণীর যেরূপ অস্তঃকরণ হয়। সেই মত তাহাদের শ্রদ্ধা ভক্তি রয়॥ মনের বৈচিত্র গুণে শ্রহ্মার প্রভেদ। সম্ব রবঃ তমঃ গুণে ভিন্ন ভিন্ন ভেদ॥ সকল মানবগণ শ্রদ্ধা গুণ ধরে। সর্ব রজঃ তমঃ গুণে ভিন্ন ভাব ধরে॥ যাঁহার যেরপ শ্রদা হয়েন দেরপ। সত্ত রজঃ তম আদি তাৰণর স্বর্গে॥

সাহিক গুণেতে লেকি দেবতা পুৰুষ। পাস্তহেতু তাহাদের হয় জানোদয়॥ क्छ जीमि मिर्गर्श करत्र जोत्राधन। আপুন স্বভাব জাত শ্রদার কারণ॥ कुरवद्रापि यक, त्रक, शृंख (गरे जन। রাজসিক নাম ধরে সে মানবগণ॥ 'ভূত, প্রেড, আদি যারা করয়ে পূজন। তমোগুণে অভিভূত,তারা সর্বজন । বেদ, শ্বৃতি, শ্রুতি, যান্ন নাহি দেয় বিধি। **अभन जविधि एवंटे करतः निक्ष विधि ॥** শাল্ডেরবিকদ্ধ মতে করয়ে গ্যন।। আপন ইচ্ছার মতে করে আচরণ॥ অশ†ক্ষবিহিত ঘোর তপস্থায় রত। কাম, কোেধ, অহস্বার, দন্ত, আুদি রত॥ উপবাঃদ, অনাহারে, দেহে দেয় ক্লেশ। মম আজা লজ্যি যেই করে বহু ক্লেশ। বেদবিধি নাহি মানে বিবেকবজ্জিত। বিবেকবিহীন হয়ে প্রথেতে বঞ্চিত। পরলোকে ভাহাদের অধোগতি হয়। ক্রুর কর্মে রত তারা অপ্রর নিশ্চয়। সকল প্রাণীর হয় তিবিধ আহার। যজ্ঞ, তপ দানাদিও সে তিন প্রকার। আহার তিবিধ হয় করিব বর্ণন। জিতেনিয় হে ভারত। খান দিয়া 💴 🗷

থে আহারে পরমায় অতি দীর্ঘ হয়। যাহাতে শরীর ছঃথ বিদূরিত হয়॥ ভূব্বলৈ দ্বল করে আরোগ্য আভ হয়। পীড়া কভু নাহি তাহে জুনুমে বিশ্চয়। যে বস্তু ভোজনে চিত্ত পরিতৃপ্ত হয়। জেজিনেতে ক্লচি হর স্বাহ্ন, সিঞ্জ হয়॥ শরীরে যাহার ক্রিয়া বছকাণ রয়। দৰ্শনে, আহান্ধে কিম্বা মন ভাল হয়॥ এরাপ আহার সব সান্তিক ভাব ধরে। সত্ত গুণশালী লোকে এইরূপ করে॥ कपू, व्यम्न, शवनामि, व्यक्ति सका रम। অতি উফ, তীক্ষ, উগ্র, প্রদাহ কর্ম॥ ছঃখ, শোক, রোগ, আদি জননৈ তাহায়। সেরপ আহার লোকে রাজয়িক কয়॥ যে থাদ্য প্রস্তুত হয়ে প্রহর হয় গত। বিশুক হয়েছে রস অভক্য, পর্যাধিত 🛚 তুর্গদ্ধ, উচ্ছিষ্ট, আর অপবিত্র, হয়। সেরূপ আহার লোকে তামসিক কয়॥ ফলের আকাজ্জা যিনি করমে বর্জন। অবগ্র কর্ত্তব্য বোধে যজ্ঞ অনুষ্ঠান॥ তাহাই সাধিক যজ্ঞ শুনহে অৰ্জুন। ইহাতে চিত্তের শুদ্ধি; জগ্যে সম্বপ্তণ ॥ अर्शकननाञ्चरङ्कु (यह यक हम । মহত্বপ্রকাশহেতু অক্স্টিত হয়॥

রাজসিক মজ্ঞ তাহা সর্কলোকে কয়। সারিক যুজ্জের চেয়ে বছ নিয়ে হয়॥ শাস্ত্র অধ্যারে যার নাহি অন্টান। শাজের ব্যবুস্থা যেই না করে পালন ॥ ব্ৰাহ্মণাদি ষেই যজ্ঞে অগ্ন নাহি পান। **भारत्वाक ग**जामि देव नारे छेळात्रग ॥ যথাবিধি দক্ষিণাদি না করে প্রদাদ। শ্রদ্ধাতে যাহার নাহি শ্রম অনুষ্ঠান॥ তাহাই তামদ যজ্ঞ মুনিগঁণ কয়। এরপ যজের কোন নাহি ফলোদয়॥ -(मय, विख, खक्न, व्यांक्र, व्यांक्रित भूजन। সত্য, শোচ, ব্রন্ধচর্য্যা, অহিংসা করণ॥ শারীরিক তপঃ সব সহজেই হয়। শ্বীরীর 🖎 দ্ধি এতে জনমে নিশ্চর ॥ त्य कथा छिनित्य प्रःथ नाहि इत्र कात। সত্য, প্রিয়, হিতবাক্য কথনে তৎপব ॥ এোতার শ্তিতে যাহা স্থকর হয়। শাজের নিয়ম মতে বেদ পাঠ হয়। বাক্ শক্তি দ্বারা **হয় এ সকল** তপং ॥ এ স্কল শুদ্ধ তপঃ শুন পরস্তপ। বিষয়ের চিন্তাহেতু চিন্তা নাহি যার। তজ্জ্ম বাংকুল চিত্ত নাহি হয় ধার ॥ মনের নিগ্রহ আর মৌন ভাব হয়। काम दक्षांच निवृक्तिरम छिछ छप्ति इस ॥

সপ্তাদশ অধ্যায়।

ছল কণ্টাদি থেই করে পরিহার। সানসিক তপঃ বলি ব্যাখ্যা করে তীর॥ একমনে প্রদাসহ ফলপুতা হয়ে। পূর্ব্দেকি জিবিধ তপঃ চিত্তগুদ্ধি হয়ে॥ কায়সনোবাক্যে যদি অনুষ্ঠিত হয়। তাহাই সাধিক ভাৰ সুনিজন কয়॥ স্থান ও যশঃ হেতু হলে অমুষ্ঠিত। রাজসিক সেই তথঃ জানিবে নিশ্চিত॥ इश्लारक धैरे जशः करत क्व मान। চঞ্চল নিভাস্ত ইহা অনিশ্চিত জ্ঞান॥ छ। नहीन श्रा (यह (पर (पप दक्ष)। অপর বিনাশহেতু করে তপঃ ক্লেশ॥ এরপ ত্রপঞ্চা যেই করে অনুষ্ঠান। তঃহাই তামন তপঃ হয় অনুষ্ঠান॥ ক র্তুবোর ভান্তরোধে যাহা হর দান। रमभ, कांग, शिवरक्रम कत्रस्य अभाग। প্রতি উপকার আশা নাহি থাকে যার। এরাপ সাত্ত্বিক দানে অতি উপকার ॥ প্রত্যুপকার আশাম যাহা হয় দান। अशापि कामना कटन त्यहे इन्न वान ॥ 'অথবা ক্লেশের সহ যেই দান হয়। ৰাজসিক দান তাহা সৰ্বালোকে কয় দ দেশ কাল পাত্র যদি যোগ্য নাছি হয়। धकर्षर्छ मान काया छ। छ ना ३४॥

শুদ্ধমনে মিষ্টবাক্যে করিবেক দান। অবিক্রা স্থণার সহিত না করিবেক দান॥ ইহার অভাণা হলে তামসিক কয়। मानित्र व्यथम् देश कानित्व निक्षा। ওঁ তৎসৎ বিক্যে হয় পরব্রন্<mark>ধা নাগ।</mark> প্রাচীন মহ্যিগণ করে এই নাম॥ ওঁ নামেতে মুনিগণ পরপ্রকা কয়। শ্রুতিতে কথিত ইহা জ্বানিবে নিশ্চয় ▮ জগৎ কারণ হেতু শ্রেষ্ঠ নাম ধরে। মুনিগণ তৎশব্দে অভিহিত করে। পরমার্থ শ্রেষ্ঠহেতু সৎশব্দ হয়। পরব্রহ্ম এই হেডু তিনু নাম হয়। প্রজাপতি যবে স্মৃষ্টি করয়ে জ্ঞাৎ। শারণ করেন আগে ওঁ তৎসৎ ॥ ত্রন্ধাদি ফর্তা ও করণ রূপ বেদ। কর্মারণ যজ্ঞ এই স্ম্রীতে প্রভেদ॥ এরপেতে প্রজাপতি করিয়ে স্থল। ওঁ তৎসৎ ভ্রমানাম করে উচ্চারণ ॥ এই হেতু ধাঁরা হন বেদবেতাগণ। শাস্ত্রমত যাগ যজ্ঞ তপঃ আরাধন॥ যথন করেন তারা কার্য্য আচরণ। কার্য্যের প্রারম্ভে করেন ও উচ্চারণ॥ সুষ্কু মানব যবে কম্ম আচরণ। যাগ যক্ত তপঃ আদি কৰে আরাধন ।

ফলের কাম্ফা ত্যাগ করয়ে তথন। কার্যোর প্রারম্ভে করে তৎ উচ্চারুণ। বিষয়ের অন্তিত্ব হেডু হলে শন্দিহান। কিয়া যবে নাহি থাকে গুদ্ধাগুদ্ধ জ্ঞান। বিবাহাদি মঙ্গল কাজ লাভাগে বিখন। সকল মহাত্মা করে "সৎ" উচ্চারণ॥ এরপে তাদের হয় পাপের খালন। थोकित्व काने अपाय योग मरत्नाथन॥ गराशांता यार्ग यक कत्रदत्र यथन। কিম্বা তপঃ দান আদি কার্য্য আচরণ॥ ভগবৎ প্রীতিহেতু কর্ম আচরণ। সর্বাতো করঙ্গে ভারা সৎ উচ্চারণ ॥ অপ্রদাতে যদি হয় যজ্ঞ তপঃ,দান। কিয়া অন্ত কর্ম কেহ করে অমুষ্ঠান॥ সকলি 'অসৎ' বলে সর্বলীকে কয়। শ্রদ্ধাহীন কোন কার্য্যে ফল নাহি হয়। हेरलाक পরলোকে নাহি কিছু ফল। অশ্রদা সকল করে তাহার বিফল॥

অফাদশ অধ্যায়।

ত্ৰৰ্জুন বলেন এবে হে কেশিনিহাদন। সয়্যাসত্যাগের ভেদ করহ কথন ॥ জানিতে আমার ইচ্ছা হল স্ব্রীকেশ। कुषा कदत्र वर्ष भारत करित्र शा विष्य ॥ শ্রীকৃষ্ণ বলেন ভবে শুনহে অর্জুন। সন্যাসত্যানের কথা করিব বর্ণন॥ শলহেতু যেই কর্ম অমুষ্টিত হয়। ু ভববদনহেতু তাহা মুক্তি নাহি হয়॥ कामा कर्षे यि नाहि इस अस्क्रीन। কাম্য কর্ম ফ্লে থেই কর্ম্যে বর্জন ॥ ১ স্থাদশী বলৈ তাঁরে সন্ন্যাস কথন। কর্মফল মাত্র ত্যাগের বর্ণন॥ वृक्षिगान् यन करत पार्यत वर्ष्क्रन। কর্মা করিবে ত্যাগ কহে বিচক্ষণ ॥ যজ্ঞ দান তপঃরূপ কর্ম আচরণ। কেহ বলে কভু নাহি করিবে বর্জন॥ কর্মত্যাগ ভিনন্নপ জানিবে অর্জ্জুন। আমার সিদ্ধান্ত তাহা করহ প্রবণ ॥ युक्त मान जुला जामि क्विर्य शामन। কভু নাহি তাহাদের করিবে বর্জন ॥

অন্ত্ৰাদশ অধ্যায় ৷

কাম্মা ড্যঞ্জিয়ে কর্ম্ম করিলৈ সাঞ্জন। হইবেক চিত্তগুদ্ধি জান তপোঁধন॥ यक मान छभः यद इदव कर्युष्टीन । ত্যজিবে তাদের তুমি কর্তা অভিমান ॥ স্বর্গাদি কামনা ফল্প করিবে হে ত্যাগ। মম মতে জান ইহা হয় শ্রেষ্ঠ ত্যাগ। নিত্য কর্ম কোন মতে না করিবে ত্যাগ ৷ মোহ বশে হলে হয় সে তামদ ত্যাগ। নিত্য কর্ম পরিত্যাগ উচিত না হয়। নিত্য কর্ম অনুষ্ঠিলে চিত্ত শুদ্ধি হয়॥ বেদমতে নিভীুকর্মে নোক্ষলাভ হয়। ধর্মের সাধন জন্ম কর্তব্যই হয়।। ক্রা অনুষ্ঠান যার কটকর হয়। কামিক ক্লেশের ভয়ে কর্ণেটিত বর্জ্জগ 🛚 তাহাই রাজ্য ত্যাগ জান হে ভারত। সে ত্যাগের কোন ফল না আছে ভারত॥ কর্ত্তব্য জানিয়ে কর্ম্ম কন্ধ অনুষ্ঠান। শা রেখে আদক্তি তাহে করহ সাধন ॥ কর্মফলে নাহি আশা থাকিবে যাহার। তাহাই সাত্ত্বিক ত্যাগ হইবে তাহার॥ এরূপে সাত্তিক ত্যাগ করয়ে যে জন। ডাগি ফলে হয় সত্ত গুণের ভাজন॥ ছঃখাবহ কার্য্যেত্ত্ত নাছি থাকে দেব। ত্বথ-কর কর্ম্ম ভাবে নাহি ত্বথ লেগ।

এইহেতু হিংর বুদ্ধি হয় সেই জন। रूथ दः थ भिष्रा छोटन मः भग्न वर्ष्कन ॥ সাত্তিক ত্যাব্লের হয় তাহাই লক্ষণ। हेश्हे व्यर्জ्न, जूभि श्वन विश्वा मन॥ पिट्रां जिम्नी इम्र श्रुक्ष य जन। পাগ ধেষ নাছি পারে করিতে বর্জন। সর্ব্য কর্মা ত্যাগে সেই সমর্থ নাছি হয়। দেই হেতু কর্মাফলত্যাগী খেই হয়॥ তাহাকেও ত্যাগী বলে আনিবে নিশ্চয়। ফলত্যাগী হলেও প্রাশংসা লাভ হয়।। অত্যাগীগণের পার্থ হইতল মহণ। ইষ্টানিষ্ট মিশ্র কর্মা ফলের ভাজণ।। পাপ পুণ্য ফলভোগ পরকালে হয় ৷ উত্তয়ের মিশ্রফল ভুঞ্জিবারে হয়।। সম্যাসীরা কর্মফলভোগী নাহি হয়। এ তিনের কোন ফল তাদের না হয়।। সর্ববর্ণানি জিহেতু যে হয় উপায়। বেদাস্ত দিদ্ধান্তে তাহা পঞ্চবিধ কয়।। আমার বচন মত গুনহে রাজন্। मक्ष व इत रम् भभ ध कांत्र ॥ স্থ ছঃথ ইচ্ছা ছেয় 'শরীর' হতে হয়। অনেক কার্য্যের 'কর্ত্তা' অহন্ধার হয় ॥ मक्ल ইस्तिष्ठ कार्या श्वाप नाम ध्रता। नानाविष दुष्ट्ठी मव कात्रव नीम धदत्र॥

अहै। तथ अधारा ।

ध भव कांत्रव भटशा देववखे क्रांत्रव । পঞ্চ করণে অভিহিত ইহারা অর্জুন। कांग्रमदनावांदका त्य दकान काक रंग। थर्म वा क्षथर्म किया त्यहेक्श रह।। তাহাদের হেতু হয় এ সব কারণ। ও সব কারণ বিনা নী হয় কঞ্চা॥ এরপ কারণ পঞ্চ হইয়া বিদিত। আত্মাকে জানিরে সবে অসম নিশ্চিত।। छेमात्रीन आजारक रय कर्छ। यस गारन। নিশ্চয় ছৰ্ম্মতি সেই আত্মা নাছি জানে॥ নিঃদঙ্গ উদাদ স্থাত্মা কর্ত্তা নাছি হয়। কাৰ্য্যেতে সমন্ধ দাহি জানহ নিশ্চয়॥ আমি কণ্ডা এই ভাব নাহি আছে যার। मिट रिष्ठ् कार्या वृक्ति मा आ यादात ॥ আত্মা নহে কর্ম্ম কর্ত্তা জানে যেই জন। ভাল মন্দ কাঞে বৃদ্ধি না করে চালন।। যদ্যপি সমস্ত লোক করে সে হনন। তথাপি ফলের ভাগী নাহি তিনি হন।। আত্মা যখন কোন কাজে কর্তা নাহি হয় 👢 তথন নরক স্বর্গ এই বৃদ্ধি অনিশ্য ॥ প্রত্যক্ষ প্রমাণ দারা দেই জ্ঞান হয়। জ্ঞানের পদার্থ বস্তু 'জেয়' নাম হয়॥ 'পরিজ্ঞাতা' নাম ধরে ক্রিয়ার আশ্রয়। কৰ্ম প্ৰবৰ্ত্তকু গুণ এই তিন হয়॥

ত্মন্তঃ বৃহিঃ ইন্তিয়াদি 'করণ' নাম ধরে। ইষ্টানিষ্ট কার্য্য 'কর্ম্ম' নাম ধরে॥ ইহাদেব প্রযোজক 'কর্ত্তা' নাম হয়। এই তিনৱস্পা হয় কর্মেব আশ্রয় ॥ জ্ঞান কর্ম্ম কর্ত্তা আদি তিনরূপ হয়। সাংখ্যাম্পাজে গুণ ভেদে এরূপ বর্ণয়॥ কবিব ভোমার নিকট তাহার কীর্ত্তন। করহ অর্জুন তুমি দে সুব প্রবণ।। সকল প্রাণীতে থেই এক আত্মা ভাবে। ভিন্ন ভিন্ন প্রাণীতে ও সেইরূপ ভাবে ॥ সর্বভূতে সর্বব্যাপী লাত্মার যে জ্ঞান।। পণ্ডিতে ভাছাব নাম দেয় সাবিক জ্ঞান ॥ সাত্তিক জ্ঞানের যার হইবে উদয়। দৈতভারী সর্বাত্তই নাহি তার রয়।। ভিন্ন ভিন্ন দেহে যথা ভিন্ন বস্তু হয়। একাৰাভাব না দেখে ভিন্ন প্ৰাণী হয়॥ তাহাই রাজস জ্ঞান সর্বলোকে কয়। তন্বারা পৃথক বস্ত অমুভূত হয়॥ প্রত্যেক পদার্থে এক পূর্ণ আত্মা হয়। এইর প জ্ঞান যাব পদার্থেতে রয়॥ তাহাই তামদ জ্ঞান বলে সর্বজন। অপ্রকৃত জান ইহা স্থানিবে অর্জুন॥ অথও অব্যয় আখা সর্বব্যাপী কয়। কোনও প্ৰাণীতে আসা বদ নাহি হয়॥

श्रशी कृशी कानी मूर्य तात्थ त्यूहे अन्। দেখিয়ে শ্বতম্ভ আত্মা ভাবে সেই জন ॥ সর্বত্র একাত্মা যদি হইত কখন। ডবে এত ভেদাভেদ না হ্তু কগুন। এরপ আত্মার রূপ ভাবে যেই জন। তাহাই তামদ জ্ঞান জানিবে স্বর্জ্ন॥ কর্ম্মেতে ফলের আশা নাছি থাকে যার। না থাকে আসন্তি কোন কর্মেতে তাহার॥ রাগ বেষ শৃত্য হয়ে কর্ম অম্প্রান। তাহাই সাত্ত্বিক কর্ম করে জ্ঞানবান্ ॥ কর্মোতে ফলের আশা থাকয়ে যাহার। যাহার মনেতে থীকে অতি অহন্ধার॥ কষ্ট সাধ্য কর্ম যাহা করে অনুষ্ঠান। তাহাই রাজদ কর্ম বলে জান্বান্।। ভবিষ্যতে যেই কাজে হ্য অমঙ্গণ। ব্থা অৰ্থ শক্তি ক্ষয় সকলই বিফল ॥ পৌक्रय हिश्मिपि थोटक ना थोटक विठात। তাহাই তামস কর্ম ভক্তব্য সবার॥ কর্ম ফলে আশা কভু নাহি থাকে যার। উৎসাহ ধৈৰ্য্য আছে নাহি অহঙ্কার॥ স্থিনিদ্ধ অধিদ্ধ কাৰ্য্যে না আছে বিকার। তিনিই সান্বিক কর্ত্তা শ্রেষ্ঠ স্বাকার ॥ পুত্র পরিবার আর আন্মীয় স্বঞ্চন। मकल्बन (सर्विक शरिकन (य जन ॥

বিষয়ালি ভোগে যার থাকে অনুরাগ। হিংসা প্রায়ণ সদা শুচিতে বিরাগ।। পর্ধনে আশা যার হর্য শোক্চিত। তিনিই রাক্ত্য-কণ্ডা বেদেতে বিহিত॥ ভোগাদি বিষয়ে যার নিভান্ত আসজি উটিত বৰ্তব্য কাঞ্চে নাহি থাকে মডি॥ শাস্ত্র সংস্কার আদি সকলি বর্জিত। দেবতা গুরুর কাছে নী-হুয় নমিত॥ নিজের মনের ভাব করিয়ে গোপন। স্বার্থসিদ্ধ হেতু করে অন্তে প্রবিঞ্চন।। যার অপমানে রত নিতান্ত অলস। नर्सना, विश्वान यूक वृद्धि नटर वम ॥ কার্য্যেন্ডে শিথিল যত্ন ব্থা চিন্তা করে। শাল্পেতে তামস কর্তা সেই নাম ধরে॥ গুণভেদে বৃদ্ধি ধৃতি তিনরূপ হয়। সকলি বলিব তোমায় খন ধনঞ্জয়।। প্রবৃত্তি নিবৃত্তি আরি ভয় ও অভয়। কাৰ্য্য ও অকাৰ্য্য কিম্বা মুক্তি যাতে হয়॥ সংসার বন্ধন আদি যাতে জ্বানা যায়। তাহাই সাত্তিক বুদ্ধি সকলেতে কয়॥ ধর্ম 🖷 অধর্ম কাজ উচিত অনুচিত। যে বৃদ্ধিতে এ সব না হয় বিদিত।। অথবা দন্দিগ্ধভাবে যাতে জ্ঞাত হয়। वाखिं निक वृक्षि छोटी खोनिएव निक्ष ॥

ধর্দ্ধকে কাধর্ম বলে ভাবে ধেই জন। সর্বাকার্য্যে বিপরীত কবে আচবণী। ধর্মেতে প্রবৃত্তি নাহি অধর্মে আচার॥ তামদিক বৃদ্ধি তাহা অতি কদাচার॥ মন প্রাণ ইন্তিয়াদি শান্ত্রমূত চলে। উচিত বিষয়ে চেষ্টা-ক্ষবয়ে সকুলে ॥ সাত্ত্বিক ধৃতিই তাহা শুন ধনঞ্জয। भारत्वत्र नियिक्त शब्धे नाहि विष्ठवय् ॥ ধর্ম অর্থ কাম হেতু ষেই বৃদ্ধি ধরে। অভিলাষী হয়ে যারা ফলাকাজ্ঞা করে॥ রাজসিক বৃদ্ধি তাহা বেদেতে কথম। ইহাই निण्ठय खोन, खन धनक्षय ॥ নিদ্রা, জ্বয়, শৌক, হঃখ আর ঐহন্বার। পবিত্যাগ নাহি করে বিষধে তৎপর ॥ তাহাই তামনী ধৃতি সকলেতে কয়। गवात निकृष्ठे देशः (व्यक्ट कथात्र॥ থে স্থথে অস্ত্যাস হেতু আসক্তি ৰাড়ায়। যে স্থা পাইলে ছঃখ অবদান হয়।। সে স্থপ তিবিধ তাহা কবিব বর্ণন। অবহিত চিত্তে তুমি করহ শুবণ।। মনের সংযমে যথা জ্ঞান লাভ হয়। সমাধি বৈরাগ্য যেবা ক্লেশকর হয়।। পরিণামে যাহা হতে স্থথের উদয়। সে স্থ্ৰ অমৃত তুল্য যোগিগণ কয়॥

আত্মগুদ্দি হয়ে তার জীনলাভ হয়। তাই সাত্ত্বিক স্থথ জানিবে নিশ্চয়॥ বিষয় ইঞিয় হতে থেই স্থথ হয়। প্রথমে অমৃত তাহা সকলেতে কয়।। ন্ত্ৰী সংসৰ্গাদি স্থ্ৰ ভোগে যে স্থ্ৰ হয়। প্ৰথমে অমৃত তুক্ষ্ম তাহা বোধ হয়।। বলবীর্য্য উৎসাহ আদি যবে লোগ পায়। সেই স্থা পরিণামে বিষ্যবৎ হয়॥ স্থার বিচ্ছেদ হেতু ছ: পাবহ হয়। এই স্থথ সাধুগণ রাজসিক কয়॥ যে ত্রথ আত্মাকে করে মোহেতে বন্ধন। আরভ্তে কি পরিণামে সম সর্বক্ষণ॥ প্রামাদ আগভা কিমা নিজা হতে হয়। তাহাই ভামদ স্থ সাধ্গণ কয়॥ সৰ রজক্তমঃ গুণ সকলেতে রয়। দেবতা স্বর্গেতে কিন্তা মহীতল ময়॥ নাহি কোন দ্রব্য হেন প্রকৃতি ভিতর। না আছে ত্রিবিধ গুণ যাহার ভিতর ॥ স্বভাব গুণেতে হয় জাতির বিভাগ। সেই হেতু কর্মাদির ভিন্ন ভিন্ন ভাগ ॥ পূर्वका भूगामता त्युष्ठेखन रस्। পুর্বাজনা সংস্থারে ও সেইরূপ হয়॥ ব্রাহ্মণ ক্ষত্রিয় বৈশ্ব আর শুদ্র জাতি। গুণাদির তারতমাে তিম ভিম জাতি॥

শম; দম, তপঃ, শোচ, আরু বেদজান৷ আর্জ্জব, আস্তিক্য, ক্ষান্তি, আুর জীত্মজান ।। উৎপদ স্বভাব হতে এই নয় গুণ। কেবল ব্ৰাহ্মণে থাকে শুনুহ জুর্জুন॥ মনের প্রবৃত্তি রোধ শ্ম নীম ধরে। বাহেছন্তিয়ে কার্য্য ক্লোধ দম নামু ধরে॥ কামমনোবাক্যে তপক্ষা যেই হয়। অন্তঃ বহিঃ পব্লিততা শৌচ নাম হয় ▮ তিরস্কার অপনানে নাহি আছে জোধ। সদাই সরল ভাব আছে ক্ষমা বোধ॥ বেদ আদি অধ্যয়ন জ্ঞান নাম ধরে। यक्तां निष्य देवां भव विकास साम धरत ॥ পরলোক আছে এই নিশ্চয় জ্ঞান যার। পরমাথে শুদ্ধাহেতু আন্তিকা ভাব তাঁর॥ এই নয় গুণ হয় ত্রাহ্মণের সাধা। এ গুলি বিশেষ ধর্ম ব্রাহ্মণ স্বার॥ ক্ষত্রিয় স্বভাব গুণ করিব বর্ণন। মন দিয়া পরস্তপ শুনহ এখন॥ শৌর্যা, তেজঃ, ধৃতি, দাক্ষ্য, যুদ্ধেতে অভয়। দান ও প্রভূত্ব এই অষ্ট গুণ হয়॥ বল বীর্য্য পরাক্রম শোর্য্য নাম ধরে। পরাভবে অপ্রবৃত্তি তেজ: নাম ধরে। বিপদে পড়িলে চিত্ত না হয় অস্থির। এইরূপ ধৃতি গুণ ধুরে থেই বীর॥

कार्यात दुकाशन ट्लंटन कारक एक दश्र। বৰ্ণবীৰ্ঘ্য হেতু যুদ্ধে নাহি ভয় হয়॥ ব্রান্ধণাদু সৎপাত্তে নিঃসঙ্কোচে দান। ত্ত্তের দুমনে করে প্রভুত্ব বিধান॥ এ সব ক্ষর্ত্তিয় ধর্ম জানহ ভারত। স্বভাবজু ধর্ষ ইহা এই মম মত॥ ব্যবসা গোরকা কৃষি বৈশু ধর্ম হয়। শুনের বিজাতি দেবা শুদ্র ধর্ম হয়॥ মানব আপন কর্মে হলে নিষ্ঠাবান্। সকল কাথোঁতে সেই হয় ফলবান॥ কৰ্মনিষ্ঠা হতে যেই সিদ্ধিলাভ হয়। করহ শ্রবণ তুমি কহিন্দ্র নিশ্চয় ॥ আকাশাদি ভূত সব বাঁহার সুজন। বিখের সর্বতি যিনি বিদ্যমান রণ। हि जार्ज्जून तम क्रियात त्य करत कार्कन। যে জন স্বকর্মে করে তাহার পূজন ॥ অবগ্রই সিদ্ধিলাভ ঘটবে তাহার। ইহাতে সন্দেহ কোন নাহি কর আর্ম পরধর্ম ভালরপ হলে অমুষ্ঠান। অঙ্গহীন স্বধর্মের না হয় সমান॥ স্বভাবজ কর্মা লোকে করিলে দাধন। পাপভাগী তাতে সেই না হয় কখন॥ ক্ষত্ৰিয় হইবে এবে যুদ্ধ তব কাজ। করিলেও পাপভাগী নাহি হবে আজ॥

অন্টাদণ অধ্যয়ি।

যুদ্ধই ক্ষত্তিয় ধর্মা স্বভাবের গুণ। না হবে পাপের ভাগী গুনহে । হিংসার লক্ষণ দেখে দোষ ভাব মনে॥ **जारक निक धर्म अन्न नाहि ग्रंड मरन** ॥ ব্ৰাহ্মণ ক্ষত্ৰিয় আদি সৰ ধৰ্ম যৰে। দোষ প্ৰণে বিমিশ্রিত সৰ কাজ ভবে॥ ধুমেতে আহত যবে থাকে ছতাশন। থাকে নাহি প্রণ তার হয় কি এমন॥ কার্য্যকরী চেষ্টা যবে আছে বিদাসান। শাস্ত্রমত কর তবে ধর্ম অহুষ্ঠান॥ বর্ণাশ্রম শান্তাধর্ম অতি শ্রেষ্ঠ হয়। কারণ স্বভাব হতৈ উৎপত্তি সে হয়॥ আপন স্বীধর্মা লোকে করে অনুষ্ঠান। थाकित्व मामाछ माय नाहिर्माय भाग .. নিজের স্বধর্ম কভু না কর বর্জন। পরধর্ম কভু নাহি করে অবলম্বন॥ দারা, পুত্র, গৃহ, ধনে না আছে আসজি বিষয়াদি ভোগে যার না আছে প্রবৃত্তি। জীবন ধারণ কার্য্যে চেষ্টা নাছি ধার। বৈরাগ্য আশ্রম করি চিত্ত শুদ্ধি যার॥ সন্মাসের ধর্ম যদি করেন গ্রহণ। আত্মব্রক্ষজ্ঞান লাভ করে সেই জন॥ নিত্য যোগে রত হয়ে বৈরাগ্য আশ্রয় ৷ রক্ষ সাক্ষাৎ লাভ সৈই উপযুক্ত হয়।

সিদ্ধুব্যক্তি-যেরূপে লভে ব্রন্ধজান। 🕆 পরজ্ঞাননিষ্ঠা তাহা করিব কীর্ত্তন॥ সংক্ষেপে করিব ব্যাখ্যা করহ শুবণ। শুদ্দিত্তি ক্র্তিতাগে হয় আত্মজান। ধৈর্য্য গুণে বুদ্ধি যার হয়েছে সংযত। বিশুদ্ধ আচারে যার শুদ্ধ হয় চিত 🛭 भकां कि विषय (यह कंत्रदय वर्ष्क्रम । রাগ দ্বেয় শৃস্তা হয়ে ত্রন্ধভাূব পান। নিভূত পৰ্ব্বত গুহা অথবা বনেতে। নিবাস যাহার হয় নির্জন স্থানেতে॥ আহার সংযত যার বাক্য আর মন। শরীর সংযত করে ধ্যানি পরায়ণ॥ ধ্যানযোগে লাভ করি বৈরাগ্যে আশুর। ব্রহ্মণাড ক্রিবারে উপযুক্ত হয়। অহন্ধার বল দর্শ কাম আর ক্রোধ। পরিগ্রহ পরিত্যাগী দর্ম করে রোধ॥ মমত্বিহীন হয়ে শাস্ত ভাব ধরে। ব্রমের সাক্ষাৎ লাভ তাহার উপরে॥ ব্রুক্ষে ভাবস্থিত চিত্ত প্রসম যাহার। শোক্তে উদ্বিধ নয় কোনও প্রকার॥ কোনরূপ অভিনাষ না আছে যাহার। সর্বাভূতে সমদশী সে ভক্ত আমার॥ তিনি মম পরাভক্তি লভেন আমায়॥ ভক্তি প্রভাব হেতু আসাতে প্রবেশয় ॥

অন্তাদশ অখ্যায় ! "

সকল কর্ম্ম যিনি করিয়ে অনুষ্ঠান 👢 মম্ভক্ত হয়ে লয় আমার শর্🕈॥ আমার প্রসাদে তার অব্যয়পদ হয়। সাধনের ফলে তার কপুর্দ্ধলাও হয়। হে অর্জুন। সর্বা কার্য্য করি সমর্পণ। স্থির বৃদ্ধি লভি হও মৎপরায়ণ॥ বৃদ্ধি যোগ আশুয় তুমি করহ এখন। আমাতে ত্রেগার চিত্ত কর সমর্পণ। আমাতে তোমার চিত্ত হইলে নিরত। মম অনুগ্রহে তবে তরিবে ছরিত॥ ত্তর সংসার জ্রুখ তরিবে এখন। मम कथा हि जर्ड्ड्न अन निया मन ॥ অহম্বারে মম বাক্য না কর শুব্ব। তোমার স্বধর্মে যদি নাহি দীও মন। স্বধর্ম হইতে ভ্রন্থ হইবে এখন। ধর্ম ভ্রপ্ত হলে তার নরকে গমন॥ অহঙ্কারে বশ হয়ে না করিলে রণ। भक्रा निक्रम **इ**दि खोनित वर्ज्ज ॥ তোশার প্রকৃতি তোশায় করিবে বর্ধন। 🗢 অবশ্ৰই মুদ্ধে তব হইবে মনন॥ গোহ হেতু যুদ্ধ তুসি না কর বর্জন। শ্বতিয় স্বভাব তব না হবে গোপন ॥ পরিণামে হতে হবে প্রকৃতির বশ। করিবে অব্ধা যুদ্ধ না হবে অব্ধা।

জীব্রবর **খা**নর মধ্যে থেকে ভগবান। रेष्हाकरप डार्श्यात करत्रन होलन । সকল প্রাকারে তুমি হও একমন। সেই ভগবাল্য-এবে লওহে শরণ॥ ভগবান অনুগ্রহে শান্তিলাভ হবে। পূৰ্ণ শান্তি পেয়ে শাশ্ত ধাম বাবে ॥ অতি গুহু আত্মজ্ঞান করিন্তু আখ্যান। হে অর্জুন ৷ জেনে তুমি কর আচরণ ৷ আমার কথিত গীতা আদি হতে শেষ। ইচ্ছামত কার্য্য কর বিচারি বিশেষ 🏾 'যথা অভিলাষ তব করু তুমি এবে। ত্বা ক্রি স্থির কর কিছুক্ষণ ভেবে॥ (ङ् व्यर्क्न्न । कृति मम कटकर्त्र क्षश्रान । তোমার হিতার্থ আমি করিয় জাপন॥ পুনরায় গুহু কথা করিব বর্ণন। সর্বাপেকা গুহু ইহা করহ শুবণ॥ আমাতে তোমার চিত্ত কর অবস্থান। गडक रहेरा कत गळ जरूशांना॥ ন্মস্কার কর মোরে গুনহে অর্জুন। ভাহনে আমাকে তুমি পাইবে তথ্ন॥ সত্য করি বলি আমি নিকটে তোমার। অক্যন্ত তুমিই প্রিয় হওহে আমার । मर्का धर्म प्राष्ट्रधीन कदिएम वर्ष्क्रन। অপিয়ে আমায় চিত্ত লওহতে শরণ।

অন্তাদশ অধ্যায়

সর্ব্বপাপ হতে তব করিব মোচন। না কর সন্দেহ হবে যশের ভাজন ॥ তোমার মঙ্গল জন্ত গীতার কথন। করিয় এখন দেই শান্তের, দ্বীর্ত্তন ॥ তপস্থাবিহীন ধার ভক্তিবিবর্জিত। মম নিন্দাকারী জন শুক্রাধা রহিত॥ এ সব লোকের কাছে না কর জাপন। গীতা উপদেশ ৰাহি দিবে কদাচন ॥ আমার পরম ভক্ত ছইবে যে জন। জক্তগণ কাছে ইহা করিবে কীর্ত্তন॥ গুহু শান্ত্ৰ গীতা যুগ লভিবে সে জন। অবশ্র পাইবে মোরে সন্দেহ অকারণ **॥** গীভাশান্ত ব্যাখ্যা পার্থ করে ষেই জন। সেরপ আমার প্রিয় নাহি কোমু জন॥ আমা ছাড়া সেও কভু অগু নাহি জানে। আমা ছাড়া প্রিয়বস্ত অগু নাহি মানে॥ ধর্মার্থ সংবাদ গীতা ((य) করে অধ্যয়ন। জ্ঞান যজুে গোরে সেই করয়ে পূজন ॥ অস্মারহিত হয়ে আর শ্রদ্ধাবান। একমাত্র গীতাশান্ত করয়ে প্রবণ ॥ সর্মপাপ হতে তার হয় বিমোচন। পুণ্যাত্মার শুভলোক কররে গমন॥ হে পার্থ গীতা শাস্ত্র কি, করিলে শ্রবণ। একমনে করিলে কি গীতার প্রবণ।

শ্ৰীমন্তগণদগীতা।

অুজ্ঞানত্বত মোহ তব হল কি মোচন। কিরাপণশুনিলে ভুমি করহ বর্ণন।। হে কেশব তোমার ক্রপায় আমিহে এখন গীতার্থ সংক্রান্ন এই করিমু প্রবণ n আমার সমস্ত মোহ যুচেছে এখন। আত্মজ্ঞান স্তিলাভ হইল এখন॥ সকল সংশয় মম হইল মোচন। তব উপদেশ শীঘ্ৰ করিব পালন ॥ সঞ্জয় বলেন এবে শুনহে রাজন। শ্রীকৃষ্ণ অর্জুন বাদ করিমু শ্রবণ॥ े অন্ত সংবাদ ইহা ক্রিয় শ্রবণ। শুনিলে শরীরে হয় লোমের হর্ষণ॥ যথায়থ আমি যাহা ক্তেৱছি ঐবণ। তাহাই করিছ আমি তোমায় কীর্ত্তন॥ थुजता क्षेत्र वित्यम मक्षद्य ज्थम। म्बिश्च यूष्टाक्टब्य हिल्ल ८२ यथन ॥ কিরূপ ক্বফার্জুন বাদ করিলে প্রবণ। সঞ্জয় বলেন তবে শুনহে রাজন।। -বেদব্যাস অমুগ্রহে করিমু প্রবণ। मिवा कर्ग हक्क ब्लान (शरबिह धर्यन ॥ তাতেই দুরের কথা করিমু ভাবণ। নিজসুথে সেই কুঞ্ফ করিল বর্ণন। अप्रः तम ब्रीकुक त्यात्वश्व छर्गवान। মহাগুহ্ম যোগতত্বি করিয়া প্রবণ॥ -

অন্তাদশ আধ্যায় 1

ভাহাই তোমার কাছে করিয় কীর্তন। পুণ্যরূপ এ সংবাদ করিয়ে শ্রব্ধা। সদাই হতেছে মম পুলকিত মন। যতই সংবাদ এই করেছি খ্রুবণঃ **ততই অধিক মন পুলকিক মন** ॥ মহারাজ যতবার করেছি শ্বরণ 🏾 অত্যভূত বিশ্বরূপে জাগে স্না মন। পুনঃপুনঃ হ্যারেপ সম্খিত হয়। যথন রাজন তাহা মনেতে উদয়॥ ट्र त्रांखन् (शांदशभांत यारे निष्क त्रन । স্বয়ং সে ভগবান,সেইদিকে রন॥ रं भटक गां श्रीव वीज धटत धल्कान। দে পক্ষে নিশ্চয় জয় জান হে রাজন। রাজনঙ্গী সেই দিকে চিরদিমশ্রণ। বিজয় বিভূতি সব থাকেহে রাজন॥ ধর্মনীতি সেই পক্ষে করেন আশ্রয়। ইহাতে সদেহ নাহি জানিও নিশ্চয়॥ ধর্মরাজ যুধিষ্ঠির (ও) পক্ষেতে যথন। সর্বাসিদ্ধি দিতে আছে স্বয়ং নারায়ণ 👞 সর্বাহঃথহর সেই বিপদভঞ্জন। বীরকেশরী অর্জ্জুন যে পক্ষেতে রন॥ তাহার হইবে জয় গুনহে রাজন্। ইহাতে সন্দেহ কভু না কর রাজন্॥ অত্এব জয়াশায় দাও জলাঞ্জলি।

পাওবে মিলিত হও, করি ক্তাঞ্জলি।
ছর্ব্যোধন পুত্রগণে কর নিবারণ।
বুধা যুদ্দাজ্জা আর কিবা প্রয়োজন ।
তগবান অনুগ্রহ লভিয়ে এখন।
গাওবে মিলিত হও শুনহে রাজন্॥

গীতামাহাত্য।

শৌনক বলেন পতে করি নিবেদন।

শৌনিষ অরণ্যে যাথা ব্যাদের কথন॥

গীতার মাহাত্মা সেই করহ বর্ণন॥

শত কহিলেন তবে গুন জগকন।

উত্তম এ প্রাণ্ড তব জিজ্ঞাক্ত এখন॥

এ গীতা মাথাত্মা হয় অতিগুহুতম।

কে পারে করিতে ব্যাখ্যা কে হেন সক্ষম॥

শীক্ষ সমাক জানে অর্জুন কিঞিৎ।

ভকদেব যাজ্ঞবদ্ধা জনক কথ্ঞিৎ॥

ভাষাক্ত মহাত্মা সব করিয়া শ্রবণ।

জানিয়া মাহাত্মা তার করেন কার্তন ॥

মহাম্নি বেদব্যাস করিণে বর্ণন।

যৎকিঞ্চিৎ তার আমি করেছি শ্রবণ॥

তাহাই তোমার কাছে করিব বর্ণন।

ভাম্প্রহ করি তাহা ক্ষন শ্রবণ॥

গীতা**শ**হাত্ম্য।

সকল উপনিষদ্ যেন গাভীর স্বরূপ কুন্তী-স্কৃত সে অর্জুন বংসের খরপ। नातात्रण त्मरे पृथः कतित्रा त्नारम। অর্জুনের কুরিবৃত্তি করেমজুত্থন ॥ প্রবৃদ্ধি মানবদিকে করিতে মোচন। করেছেন এই গীতা অমৃত দোছন॥ = ত্রিলোকের উপকার সাধিবার তরে। শ্রীকৃষ্ণ অর্জুন্দীরথ্য স্বীকার করে॥ ष्यम् ७ भीषां यिनि क्राइट्न मान। পর্যাত্মা তাঁর করি প্রণাম বিধান॥ এ ঘোর **সংসার হুর অ**সীয সাগর। এ সাগর পার হঁতে অভিলায ক্র ॥ গীতারপ্র নোকার করহ আশ্রয়। পর্য ছবেতে পার হইবে নি⁴চয়॥ সর্বাদা অভ্যাদ যোগে গীতার প্রবণ। যে মূঢ়াত্মা.করে নাই তাহা অফুক্রণ॥ এরপ না করে ধেই মুক্তিলাভ চার। বালকের উপহাস তার লাভ হয়॥ **मितानिभि भीका भाक्ष करत्रन अद्या =** किया मिवानिभि याता:कदत्र:अधायनः॥ নিঃসংশয় তাহাদিকে দেবতা জানিবে। দেবতা বলিয়ে তাঁদের সর্বদা পুঞ্জিবে॥ শ্ৰীকৃষ্ণ অৰ্জুনে যাহা দিয়াছেন জ্ঞান। যে গীতার উপুদেশ করিয়ে ব্যাখ্যান ॥

সন্তর নির্গুণ ব্রহা আর ডাজি তম। জ্ঞান তত্বী আদি তাতে সকলি ব্যাখ্যাত ॥ ক্রমশঃ চিত্তৈর শুদ্ধি প্রেম ভক্তি হয়। কর্মা হতে ভাজি আর মুক্তি লাজ হয়॥ গীতারপ জলাশরে যে করেন সান। সংসার মালিভা ভিনি দুর করে যান॥ শ্রদাহীন হয়ে যেই করমে এ সাম। হস্তীন্ধান মত এই বুথা হৈবুর ন্ধান॥ ८यमन कतिदा रुखी खनाभदा जान। ধূলিবারা নিজগাতা করে দেয় মান। ভাদাহীন দেইরূপ গীব্দা পাঠ করে। মনের মালিভ তার পুন: আসি পড়ে॥ অধ্যয়ন অধ্যাপনা না করে গীতার। ইহলোকে সৈৰ্ধ কৰ্ম পণ্ড হয় তার॥ বে মূর্থ গীতার **মর্শ নহে অবগত**। নরাধম এ জগতে জানিবে নিশ্চিত॥ ধিক্ তার কুলে শীলে দেহের ধারণে। তাহার জ্ঞানেতে ধিক্ গীতা নাহি জানে॥ भीका व्यर्थ नाहि खादन मानव कीवदन। তার সম নরাধম নাহি চিজুবনে। ধিক্ তার দেহ আর স্বভাব কল্যাণে। ধিক্ তার গৃহাশ্রমে ধিক্ তার ধনে॥ গীতাশাস্ত্র থেই জন নছে অবগত। कनदशका न मध्य भी जादह निक्कि ॥

গীত্বীমাহাত্ম্য।

প্রতিষ্ঠা প্রার্ক্তে ধিক্, ধিক্ তার মানন। সম্ভ্রম মহতে ধিক্, ধিক্ তার জীনে । গীতা শাস্ত্রে মতি নাই যাহার জীবনে। কর্মাদি নিফল তার এ শ্রিস ভূবনে॥ জ্ঞানদাতা ধিক্ ভার নিষ্ঠা আর ব্রত। ধিক্ ভার সর্কা কর্মা তপঃ অপ যৈত।। 💳 (यह मूर्थ करत्र नाहि गौठा अधायन। তদপেকা নরাধর্ম নাহি কোন জন॥ গীত। জ্ঞান নাছি থাকে হেন যেই জ্ঞান। তাহাই আহুরী বিদ্যা নিফল সে জ্ঞান ॥ বেদান্ত বিরুদ্ধ খ্রাহা ধর্ম-বিগহিত। সর্বা ধর্মময়ী গীতা বেদেতে বিছিত। সর্বজ্ঞান-প্রদায়িকা বিশুদ্ধা এ গীতা। সর্বাধান্ত সারভূতা হয় এই গীতা ॥ विक्थर्स पित्न किया धकानभी पित्न। গীতার আবৃতি থেই করে একমনে॥ স্বপ্ন জাগরণ কিন্বা যে ভাবে যথন। **স্থিরভাবে থাকে কিথা কর্ম্বে গমন** ॥ যথায় যে ভাবে সেই করে অবস্থান। 🦜 শক্ত হতে কোন কালে নাহি ভয় পান। रमवानदम, भिनानदम, किया नमी उटि। তীর্থে কিমা শালগ্রাম শিলার নিকটে॥ একমনে গীতা পাঠ করমে যে জন। নিশ্চয় সৌজাগা লাভি করে সেই **স**ন।

দান যক্ত বৈদপাঠ কিম্বা তীৰ্থ ব্ৰত। দেব কী-নন্দন তাহে তুট নন তত। গীতা পাঠে ভগবান্ তুষ্ট হন যত ॥ भूतानामि द्वाभार्क हम त्यहे कल। ভজিসহ গীতা পাঠে হয় সেই ফল ॥ সর্ব্ধশান্ত অধ্যয়নে যেই সিদ্ধি হয়। একমাত্র গীতা পাঠে সেই সিদ্ধি হয়॥ সিদ্ধপীঠে যজ্ঞ-ক্ষেত্ৰে স্পিন্ধ যোগস্থানে। শালগ্রাম শিলা কিখা সজ্জনের স্থানে। ভক্ত কাছে গীতা পাঠ করেন ধে জন। गैर्क कार्त्या भिक्ति लाख्नुक दन्न एगरे जन ॥ প্ৰত্যহ গীডার পাঠ অপৰা শুৰণ। স্থিরচিত্তে অস্ভাবে করে ধেই জন । व्यथटमध क्यों नि यक निक्शिति मान। देशारमञ्जयकरण वन गांखवान्॥ গীতার্থ শুবণ কিম্বা করিলে কীর্ত্তন। অথবা অন্তকে যিনি করান শ্রবণ 🛭 শ্রেষ্ঠ পদ যশঃ লাভ করে সেইজন। ভক্তিভাব যুক্ত হয়ে আদর সহিত। যথাবিধি গীতাদানে করে যেই হিত ■ সোভাগ্য আরোগ্য আর যশোলাভ হয়। श्रिया छार्या करत वाङ ऋथ धाश रूप्र॥ যে গৃহে এ হেন গীতা অর্পণাদি হয়। অভিশাপ হিংসা ছুখি নাহি তথা রয় ৷

গী দামাহাজ্য

ত্রিতাপ-জনিত পীড়া ব্যাধি **অভিশা**প। ছুৰ্গতি নরক কিয়া নাহি ক্লোন পীপ॥ বিক্ষোটক আদি বাধা দেহে নাহি হয়। বিশুদ্ধ গীতার কথা যেখুনে স্তীর্তম। শ্রীকৃষ্ণ চরণে যেই হয়ে থাকে দাস। ঐকান্তিকী ভক্তি উন্মেনা হয় নির্শু 🏎 সর্বজীবসহ তার স্থ্য শাভ হয়। শ্রিক্ষ চরণ ক্লম ইহাই নিশ্চয়॥ গীতাপাঠ পরায়ণ হয় যেই জন। প্ৰায়ন্ধ কৰ্মেতে যদি থাকয়ে অধীন॥ হ্নথ লাভ সৃত্তি তার অবগ্রহ হয়। ক কোন কর্ম দারী তাঁর ক্রন না হয়। গীতাধ্পয়ী যদি কভু করে মহাপাপ। কিন্তা যদি কোন কাৰ্য্যে করে অভিশাপ 🛭 জল যেন পদাপতে না করে আশ্রয়। সেইরূপ পাপ তাঁকে না করে আশ্রয়। অবিধি আচার আর অভক্ষ্য ভোজন। অন্তবিধ দোষ কিম্বা অস্পৃষ্ঠ স্পর্শন ॥ ইন্সিয়জনিত কিম্বা যেই দোষ হয়। ১ একমাত্র গীতাপাঠে সকলি নাশয়॥ াকলের ভান্ন থেই করমে ভোজন। মথবা সর্বাত্ত যেই করয়ে গ্রাহণ। এরূপ কার্য্যেতে তার যেই পাপ হয়। ীতাধানী জনে আহা নাছিক স্পৰ্যন্ত ॥

দত্রপুর্বা বহুদ্দরা করিলে গ্রহণ। यथाविधि द्वर यमि कता भगर्मन ॥ এ পাণেও যদি কেহ অপবিত্ত হয় 🕽 🦠 গীতাপাঠে সেই দোৰ অতি শুদ্ধ হয়॥ নিয়ত গীতাতে রত থাকে যার মন। সাগ্ৰহ জাপক তিনি তিনি **ক্ৰিয়াবা**ন ॥ তিনিই পৃথিত হন তিনি ধনবান। দর্শনীয় তিনি যোগী জিনি জানবান ॥ যাজিক যাজক তিনি সরার প্রধান। मकन द्यमार्थमभी जिनि धर्मनान्॥ ক্ষিত্যগীতা মেই স্থলে সুলয়ে পঠন। क्षग्रीभाषि मर्स्छीर्थ छर्था विमामान ॥ গীতাতে প্রবৃত্তি যার থাকে অবিরুত্ত। দেবতা সহায় থাকে মৃত বা জীবিত॥ त्मव श्रामि द्यांत्रिशन तकक कार्यत्र। গোপাল নারদ ক্ষ্ণ সহায় তাহার॥ 🕔 পার্যদাদি এবসহ সহায় তাহার। অধ্যয়ন অধ্যাপনা গীতার বিচার॥ 🔠 মেধুস্থানে গীতার অর্থ করমে বিচার। শ্রীকৃষ্য রাধিকাদহ থাকেন তথায়। ভগবান নারায়ণ বিরাজে তথায়॥ ভগবান কহিলেন খন ধনপ্ৰয় ৷ হৃদয় স্বরূপ মম গীড়া এই হয়॥ মম এই গীতা হয় সকলের সার।

অত্যুগ্র অব্যয় জ্ঞান স্বরূপ আমার গীতাই আমার হয় অতি উটী স্থান। গীতা মম করে অতি উচ্চপদ দান 🛮 গীতার আশ্রয়ে আমি ক্লব্নে অবস্থান। গীতা মম পরম গুরু গীতা নিকেতন, ॥ আমার আশুয় হয় এই গীড়াজান 🗂 তাহাতে তিলোক সম হতেছে পালন ॥ ব্রহারপা শ্রেদবিতা গীতাই আমার। পরমা বিভা ইহা সংশয় নাহি আর ॥ অৰ্জমাত্ৰা স্বৰূপিণী গীতা মম হয়। উচ্চপদ স্বরূপিয়ী নিত্য গীতা হয় ॥ গীতা গুহু নাম সব করিব বর্ণ। ভনহে পাওর এবে ভন দিয়া মন॥ ध मक्न (अर्छ नाम कतिरम कीर्जन। পাপরাশি তৎক্ষণাৎ হইবে মোচন গঙ্গা গীতা ও সাবিত্রী আর সীতা। ব্ৰহ্মাবলি ব্ৰহ্মবিদ্যা সত্যা পতিব্ৰতা ॥ অৰ্দ্ধমাত্ৰা চিদানন্দা ত্ৰিসন্ধ্যা মুক্তি গেছিণী विषयि विकासिना विकासिना मिनी है তত্বার্থ জ্ঞানমঞ্জরী সর্বাপাপবিনাশিনী এক চিত্তে নিত্যজগ করে এই নাম। खान मिषि উচ্চशन नट्ड शतिनाम ॥ সম্পূর্ণ গীতার পাঠে হইলে অক্ষ্য। গীতাৰ্দ্ধেও ফুললার্ভ গোদানের সম ॥

তৃত্যীয়াংশ পাঠে হয় সোম্যাগ ফল। यष्ठ जारण ब्लाटिं रा भन्नाभान कला প্রত্যহ অখ্যায় ছই পঠি হয় যার। কলকাক ইন্দুৰোকে বদতি তাহার॥ ज्किमर अधारम्क भर्ठ त्यरे जन। अपनम क्रिक्टलाटक शेटक टमरे जन ॥ অধ্যায়াৰ্দ্ধ বা তদৰ্দ্ধ হলে অধ্যয়ন। भक मचखन प्रशास्मादक कृतरम गांभन। সাত দশ চারি পাঁচ এক ছই দিন। किश व्यक्तिशाकगांक भटि एयर धन ॥ তীযুত বৰ্গ চন্ত্ৰলোকে ক্সমে যাপন ॥। व्यथाप दर्भादकेत किशा अर्थ दग्हे जन। স্বরিতে স্বরিতে করে স্বর্গেতে সমন 💵 অত্তে শ্রেষ্ঠপদ লাভ করে সেইজন। অন্তিম সময়ে গীতা পঠন শ্রবণ। মহাপাপী হইলেও মুক্তিভাগী হন॥ গীতা সহ বার হয় সর্গেতে গমন। বৈকুঠে বিফুর সহ আনন্দে সগন। म्क्रीकारम अधारम्क शाकिरम निकरि। नीह त्यांनि नाहि रुप्त नत्रत्यांनि घटें। পুর্বজন্মে গীডাড্যাস করমে সে জন। মুক্তিপদ লাভ ডার অবগু ঘটন॥ যুত্যকালে গীতা শব্দ করে উচ্চারণ। গাঁহার সাগেতি ঘটে অবশ্র তথন।

গীতা 'খহাত্ম্য

মানব যথন কর্ম করে অনুষ্ঠান। সে সময় গীতা পাঠে করে ফলনান॥ শ্রাদ্ধকালে পিতৃ উদ্দেশে গীতা অধ্যয়ন। উদ্ধারে নরক হতে সর্গেভেগ্রামন। .গীতা-পাঠে পিতৃগণ পরিতৃপ্ত হন। আশীর্কাদি পুত্রগণে পিতৃলোকে যান। ধেরসহ গীতা যিনি করেন প্রদান। ক্তক্তা হয়ে কিনি ফললাভ পান। স্থবৰ্ণ সহিত গীতা ব্ৰান্সণেতে দান। পুনর্জন্ম নাহি হয় করিলে প্রদান। একশত গীতা বৃহি করিলে প্রদান। ব্ৰদানে গতি হয় পুনজী হীনু॥ গীতাদান পুণাফলে সপ্তকল কাল। বিষ্ণুসহ বিষ্ণুলোকে স্থাপ কাট্টি কাল ॥ সম্যক গীতার্থ গুনে গীতা হলে দান। ভগখান্ প্রীত হয়ে করে ফলদান ॥ ব্ৰাহ্মণ ক্ষত্ৰিয় বৈশু কিম্বা শুদ্ৰগণ। ছুল ভ মানব জনা করিয়ে ধার্ধ।। অমৃতর্গাপণী গীতা না করে এবণ। ' কিশ্বা ভক্তি সহ নাহি করে অধায়ন। হাতের অমৃত সেই কর্মে কেপ্র। ত্র্ভাগোর বন্দে করে গরল ভক্ষণ। সংগার ভিতরে হয় হংখী যেই জন। গীতাজ্ঞান লাভ তার অবগ্র করণ ৷৷

শ্রী মন্ত্রগথ সগীনি। গীন্দীয়ত-পান-হেডু মুক্তি লাভ হয়। ভজিলাত করে সেই অতি প্রথী হয় ॥ জনকাদি ঋযিগণ গীতার আশ্রয়। শ্রেষ্টপদ **পাত**্করে পাপ শৃক্ত হয়। শীতা স্নোক যদি কেহ করে উচ্চারণ। বিষা তারি জ্ঞানলাভ করে থেই জন।। ত্রদাসকপিনী গীতা তাহাদের কাছে। नर्वछान-छामात्रिनी मधीयत्र मारस ॥ গর্বা অভিমানে যেই গীতা নিন্দা করে। নরকে নিবাস সেই চিরকাল করে॥ অইকারে যে মৃঢ়াঝা করে অপমান। কল্পকাল হয় ঠীর কুন্তীপাকে স্থান॥ निकटि शौछात्र व्याथा दम्दथ खे ना खदन। শূকর যোগিতে জনা বহুবার ভবে॥ গোক্ষপ্রান গীতাগ্রন্থ যে করে হরণ। গীতা পাঠ বার্থ তার বিফল করণ॥ মন দিয়া নাহি করে গীতার্থ প্রবণ। পরমাথ-লাভ-হেতু করয়ে যতন। উমত্ত যেমন শ্রম করমে বিফল। তেমনি তাহার কর্ম সকলি বিফল।। যে পুণ্যান্তা গীতা পাঠ করিয়ে শ্রবণ। ডগবৎ গ্রীতি-হেতু করে নিবেদন॥ স্বর্ণ সামগ্রী ভোজ্য জার পট্টাম্বর। ব্যাখ্যাতাকে করে দীন সংসার ভিতর ॥ *

গীতামাহ স্থ্য

ব্যাখ্যাতাকে ভবিসঁহ ক্রয়ে প্জন।
বিবিধ সামগ্রী বস্ত্র করয়ে প্রদানু।
ভগবান্ হরি তাঁর করয়ে সন্তোষু।
সর্ক্র স্থা হয় তার থাকে নাহি দোষ॥
গীতা পাঠ অন্তে ষেই মাহাত্মা পাঠ করে।
সর্ক্র ফল ভাগী সৈই সংসার ভিত্রে॥
পাঠান্তে মাহাত্ম্য ষেই নাহি পাঠ করে।
পণ্ডশ্রম হয় তার রুথা পাঠ করে॥
মাহাত্ম্য সহিত করয়ে শ্রবণ॥
অতি শ্রেষ্ঠ গতি লাভ করয়ে শ্রবণ॥
অথি গ্রেষ্ঠ গতি লাভ করয়ে শ্রবণ॥
অথি গ্রেষ্ঠ গতি লাভ করয়ে শ্রবণ॥
অথি গ্রেষ্ঠ গতি লাভ করয়ে শ্রবণ॥
করিলে ক্রল প্রা লভে সেই জন।
করিলে ক্রল প্রা লভে সেই জগ।।

मम्भूर्ग ।





এই পুস্তক

ম্যানেজার মংস্কর্মান্তর প্রকালয়, ৩০নং কর্ণওয়ালিন্ খ্রীট কলিকাতা; এবং ১নং মৃঞ্জাপুর খ্রীট, বঙ্গভূমি কার্য্যালয়ে — ক্রিক্রেল পোও আঃ (বাঁক্ডা) গ্রন্থকারের নিকটু প্রাপ্তব্য

চাকরির উপায়।

ইহা অর্থ উপার্জনের একনাত্র পুথ। অল, ম্লধনে ব্যবস কৃষি- শোরা কিলপে আধীন, জীবিকা উপার্জন ইয়, তাহ শৈথিবার ভিক। জুরিও ইহাতে একাউট্যাণ্টগিরি, নোজারি, কেরাণীগিরি, পুলিসের সব্ইনস্পেট্রি, আমিনীগিরি, ন্লার কাজ, টেলিগ্রাফ বিভালের, রেলওয়ের, ডাক বিভাগের, ছাপ খানার, এক কথার এমন চাক্বি নাই, মাহা ইহা ঘারা শিথিতে গারা যায় না। স্ল্য ১০ আনা, ডাঃ মাঃ ২০ আনা।

> ম্যানেজার—সংস্কৃত-যন্ত্রের পুস্তকালয়, ত নং কর্ণ ওয়ালিগ প্লীট, কলিকাতা।